३
पत्र व्यवहार
जमनालाल बजाज
का रचनात्मक कार्यकर्ताओं से

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-माला-५

पत्र-व्यवहार

भाग ३

—जमनालाल बजाज का रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं से—

भूमिका
जयप्रकाश नारायण

संपादक
रामकृष्ण बजाज

१९६०
मुख्य विक्रेता
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली
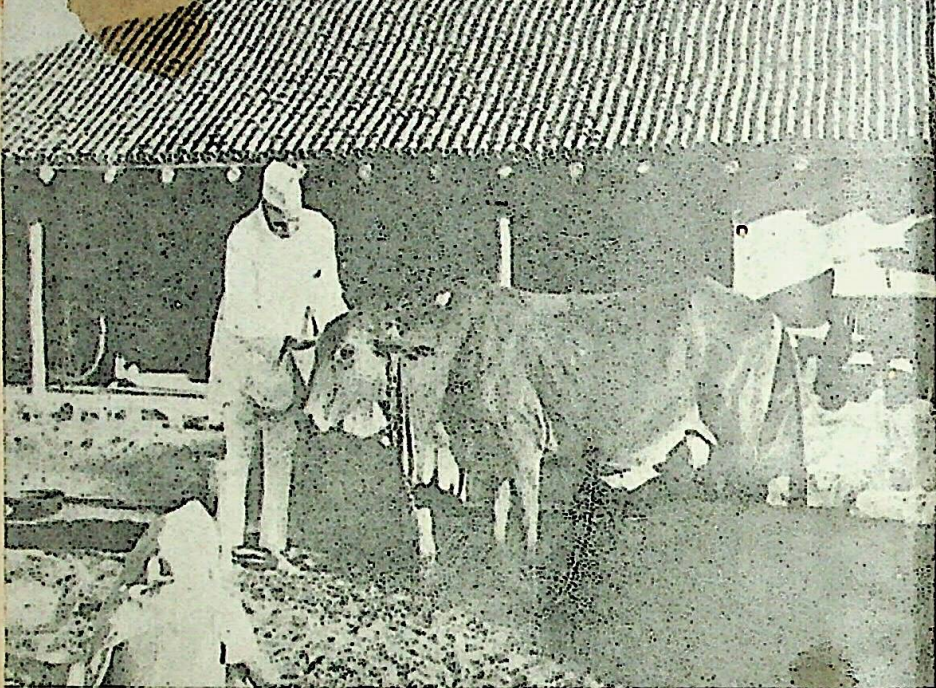
रचनात्मक कार्यों में जिनकी निष्ठा अंत समय तक रही।

भूमिका

सेठ जमनालालजी वजाज, जो हम सब छोटे कार्यकर्त्ताओं के लिए 'काकाजी' थे, बापू-परिवार के एक अनोखे सदस्य थे। पहली कतार के मुट्ठी भर देश-सेवकों में निराले थे। उनके जैसा दूसरा न था, न होगा। उनकी जगह जो खाली हुई सो आजतक खाली है और बड़ी बात यह है कि सबको इस खालीपन का अनुभव हो रहा है। शासकीय तथा सार्वजनिक जीवन में कभी-कभी ऐसा प्रसंग उठ जाता है कि लगता है कि काकाजी होते तो शायद कुछ और ही ढंग से यह बात बनती, जो बिगड़ती जा रही है। मेरे ध्यान में तो अक्सर यह आया है कि आज वह होते तो विनोबाजी को कितना बल मिलता। वर्धा-सेवाग्राम की—नहीं, सारे देश की रचनात्मक प्रवृत्तियों को कितना सजीव और सहृदय मार्गदर्शन मिलता। शायद जवाहरलालजी को भी अपनी उलझनें सुलझाने में बड़ी मदद होती।

जो हो, प्रसन्नता की बात है कि 'पत्र-व्यवहार' का तीसरा भाग प्रकाशकों ने यहां प्रस्तुत किया है। इसमें रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं से जो पत्राचार हुआ था, उसके कुछ अंश दिये गए हैं। 'रचनात्मक' शब्द यहां कुछ व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि सर जगदीशचन्द्र बसु के भी पत्र इस संग्रह में मिलेंगे। यह अच्छा ही हुआ है। एक बात का खेद अवश्य है। इस जिल्द में जमनालालजी के पत्र कम हैं, कार्यकर्त्ताओं के अधिक। कार्यकर्त्ताओं ने अपने पत्रों में कभी-कभी महत्व के प्रश्न उठाये हैं—नैतिक, सैद्धान्तिक, व्यावहारिक—और पाठक जानना चाहेंगे कि जमनालालजी ने उनका उत्तर क्या और कैसे दिया था। उनके साथ का पत्र-व्यवहार कार्यकर्त्ताओं के लिए एक प्रकार का चिट्ठी-पत्री द्वारा शिक्षण (Correspondence Course) होता था। हर बात के ऊपर—वह छोटी ही क्यों न हो—वह बारीकी से विचार करके उत्तर देते थे। किताबी विद्या के

लिहाज से वह विद्वान नहीं थे, परन्तु उनके पास एक दुर्लभ वस्तु थी—जो निरी विद्या से प्राप्त नहीं हो सकती—विवेक-बुद्धि। वह तो सत्य की साधना और जीवन-शुद्धि से ही प्राप्त हो सकती है।

जमनालालजी के पास जो पत्र आये वे तो अधिकांश सुरक्षित रहे, लेकिन उनके अनमोल जवाबों को शायद कार्यकर्त्ताओं ने गंवा दिया। मुझे ही लीजिये। मेरे पास दूसरों के जो पत्र बच गये हैं, वे या तो असावधानी के कारण या इसलिए कि पदाधिकारी के नाते किसी संस्था की फाइलों में उन्हें संजोना पड़ा। फिर भी यह जिल्द रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं तथा साधारण जनता के लिए भी काम की होगी। सबसे महत्व की बात तो यह होगी कि अपने देश के एक महान व्यक्तित्व की याद इससे ताजा होगी।

—जयप्रकाश नारायण

संपादक का निवेदन

'पत्र-व्यवहार' के भाग १ व २ पहले निकल चुके हैं। भाग १ में पू० पिताजी (स्व० जमनालाल बजाज) का देश के राजनैतिक नेताओं से पत्र-व्यवहार दिया गया था, भाग २ में देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं से। पाठकों के सामने अब यह तीसरा भाग रखने में हमें बड़ी खुशी हो रही है। इसमें पिताजी का रचनात्मक क्षेत्र में काम करनेवाले महानुभावों के साथ का पत्र-व्यवहार दिया जाता है।

जिन सज्जनों के पत्र इस संग्रह में लिये गए हैं, उनमें से अधिकांश से पिताजी का लम्बा-चौड़ा पत्र-व्यवहार हुआ था। उनमें से कुछ पत्र तो नष्ट हो गये हैं। जो बचे, उनमें से कुछ चुने हुए पत्र ही यहां लिये गए हैं।

इन पुस्तकों की सामग्री का विभाजन करते समय सुविधा की दृष्टि से यह आग्रह रक्खा गया है कि एक व्यक्ति के सारे पत्र एक ही भाग में एक साथ ही रहें। पाठक जानते हैं कि कई व्यक्ति ऐसे हैं, जिनका कार्य-क्षेत्र व्यापक रहा है और उनका संबंध राजनैतिक, देशी रियासत तथा रचनात्मक सभी क्षेत्रों से आ जाता है। इसलिए उनके पत्रों को किस भाग में रक्खा जाय, यह निश्चय करने में बड़ी कठिनाई अनुभव हुई। जिस व्यक्ति के जीवन का ज्यादा-से-ज्यादा समय जिस कार्य-क्षेत्र में व्यतीत हुआ, उस कार्य को प्रधान मानकर उसके सारे पत्र हमने उस विभाग में एक साथ दे दिये हैं।

जिस समय के ये पत्र हैं, वह हमारे इतिहास का क्रांति-युग था। खेद है कि इस तरह की सामग्री धीरे-धीरे काल के गर्त में जा रही है। जो सामग्री बची है, उसको देशवासियों के सामने रखना उपयोगी सिद्ध होगा, यह मानकर ये पुस्तकें निकाली जा रही हैं। आशा है, पाठकों को इस ऐतिहासिक सामग्री के पढ़ने में दिलचस्पी होगी और गांधी-युग की

अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं पर उन्हें कुछ नई बातें जानने को मिलेंगी। भविष्य में भारत का इतिहास लिखनेवालों को भी इन पुस्तकों से सहायता मिल सकेगी, ऐसा हमारा मानना है।

इस पत्र-व्यवहार के अगले दो भाग भी शीघ्र ही तैयार हो रहे हैं। चौथे भाग में पिताजी का देशी रियासतों के अधिकारियों के साथ का पत्र-व्यवहार होगा और पांचवें में व्यापारी बन्धुओं और कुटुंबी-जनों के साथ का। उनकी डायरियों के चुने हुए अंशों को लेकर भी एक पुस्तक में देने का विचार है।

प्रस्तुत पुस्तक की तैयारी में जिन सज्जनों ने सहायता दी है, उनके हम आभारी हैं। विशेष रूप से ऋणी हैं श्री जयप्रकाश नारायण के, जिन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिख देने का कष्ट किया।

—रामकृष्ण बजाज

पत्र-सूची

पत्र-व्यवहार

भाग ३

: १ :

हवालवाड़ा (अलमोड़ा), श्रा. ९-१९८८

श्रीमतो जमनालालस्य सकुटुम्बस्य भद्रमाशास्ते इत्यतः (७-८-३१)

आज पत्र लिखने का विशेष हेतु यह है कि 'आज' अखबार में मैंने पढ़ा है कि यह निश्चय हुआ है कि मन्दिरों में अछूतों को प्रवेश कराया जावे, और यह कार्य आपके सुपुर्द हुआ है। जबकि श्री महात्माजी ने यह निर्णय किया है कि किसी धर्म पर आक्षेप नहीं करना, तो इस निर्णय के विरुद्ध यह निश्चय कैसे हुआ ?

जब मुसलमानों के धार्मिक भावों की रक्षा महात्माजी करते हैं, तब सनातन-धर्मावलम्बी लोगों के धार्मिक भावों का मर्दन क्यों अभीष्ट है ?

जिन्होंने देवालय अपने सिद्धांत के अनुकूल बनाये हैं, उनकी इच्छा के विरुद्ध अछूतों को प्रवेश कराने के लिए उन्हें विवश करना कहांतक धर्म और नीति-सम्मत है ?

यदि मन्दिरों में अछूतों को ले जाना ही अभीष्ट हो तो ऐसे विचारों के लोगों को नवीन मन्दिर बनवाकर अछूतों के लिए खोलने चाहिए। दूसरे लोगों की इच्छा है, उन मन्दिरों में जावें अथवा नहीं जावें।

अथवा जिन मन्दिरों के मालिक ऐसे विचारों के समर्थक हैं और अपनी प्रसन्नतापूर्वक अछूतों को प्रवेश कराते हैं वे करें; जो स्पर्श नहीं करना चाहते उनपर सत्याग्रह अथवा अन्य उपायों द्वारा दबाव क्यों डाला जाय ?

इन प्रश्नों पर महात्माजी के सन्मुख सम्यक् विचार कर जो निर्णय हो, मुझे निम्नलिखित पते पर सूचना देना।

अच्युत

ठिः गौरीशंकर गोयनका की नौका,

म० कर्णवास, बुलन्दशहर

: २ :

वर्धा, २२-५-३१

पूज्य श्री अच्युतस्वामीजी,

आपका श्रावण कृष्ण ९ का पत्र मिला। आपका आशीर्वाद पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

कांग्रेस के कार्यक्रम में अस्पृश्यता-निवारण का कार्य भी आता है। इस कार्य के लिए एक कमेटी बनी है और इस कार्य का भार कांग्रेस ने मुझको सौंपा है। यह कमेटी प्रायः तीन वर्ष पहले बनी थी। परन्तु बीच में आन्दोलन के समय उसका कार्य बन्द होगया था। अब फिर से वह कार्य शुरू किया गया है। इस कमेटी का कार्य केवल अछूतों को मन्दिरों में प्रवेश कराने का ही नहीं हैं, परन्तु समग्र अस्पृश्यता-निवारण का है। यदि 'आज' में आपके लिखे अनुसार आपने कोई खबर पढ़ी है तो वह अधूरी है।

यह तो आपको मालूम है ही कि हम अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म का अंग नहीं मानते। वह हिन्दू धर्म के सिद्धांतों की विघातक है। इसलिए जोरों से प्रयत्न करके उसे हटाने का निश्चय करना चाहिए। इसका मुख्य उपाय लोगों को समझाकर उनका मत बदलना है।

सार्वजनिक मन्दिरों में उनका प्रवेश होना चाहिए, यह बात भी अस्पृश्यता-निवारण में आती है। किन्तु उनका प्रवेश अभी कराना अभीष्ट नहीं है। मन्दिरों के व्यवस्थापक, पुजारी, ट्रस्टियों आदि को तथा जनता को मनाने का काम हम करते हैं। इन लोगों के अधिकांश में अनुकूल होने पर मन्दिर अस्पृश्यों के लिए खुले किये जाते हैं। इस कार्य से बहुमत अनुकूल होने पर भी कुछ सनातन-धर्मावलम्बियों के भावों को आघात पहुंचना संभव है। परन्तु बहुजन और धर्म के हितार्थ वैसा कराना आपत्तिजनक न समझना चाहिए। अस्पृश्यता के भाव भ्रम से ही खड़े किये हुए हैं और बहुजन-समाज से निकल जाने पर धीरे-धीरे वे सनातन-धर्मावलम्बियों के मन से भी निकल जावेंगे।

पिता के प्रति पुत्र, पति के प्रति पत्नी, गुरु के प्रति शिष्य, सत्याग्रह

कर सकते हैं। उसी प्रकार बहुजन-समाज के प्रति अस्पृश्य भाई तथा उनसे सहानुभूति रखनेवाले भी सत्याग्रह करने का हक रखते हैं। परन्तु अबतक ऐसा मानकर कि सत्याग्रह के अनुकूल समय नहीं है, जहां-जहां इस विषय में सत्याग्रह हुआ है वहां-वहां कांग्रेस ने उसे रोकने का ही प्रयत्न किया है, और निकट भविष्य में उसे उत्तेजना न देने का इरादा ही है।

अछूतों के लिए नवीन मन्दिर बनाने से तो अस्पृश्यता कायम ही रहती है। ऐसे मन्दिर बनवाने से विशेष लाभ नहीं, तथापि कहीं-कहीं उनके लिए अलग मन्दिर बनाये भी जाते हैं।

कुछ समय पहले तक सती की प्रथा धार्मिक मानी जाती थी परन्तु कानून द्वारा वह बन्द हुई। लड़की का विवाह १२ वर्ष से कम उम्र में करना धार्मिक माना जाता है, परन्तु उसके लिए भी कानून बना। दक्षिण प्रान्त में देवदासी की प्रथा धार्मिक मानी जाती है, परन्तु उसे भी कानून द्वारा बन्द करने का प्रयत्न चल रहा है। ऐसे कई उदाहरण बताये जा सकते हैं, जो केवल भ्रम से धार्मिक माने जाते हैं। इसी प्रकार अस्पृश्यता के भूत का संचार भी समझना चाहिए। मनुष्य को पशु से भी हीन समझना किसी भी रीति में धार्मिक बात नहीं हो सकती। यह तो हिन्दू धर्म पर बड़ा धब्बा है। उसको जबरन् धो डाला जाय तो भी कोई बाधाजनक बात नहीं है।

पू० गांधीजी के सिद्धान्तानुसार यह कार्य अहिंसा-वृत्ति से ही किया जा सकता है। इसलिए न्याय की दृष्टि रखनेवाले लोगों को घबड़ाने का कोई विशेष कारण नहीं होना चाहिए।

भाई गौरीशंकरजी लिखते हैं कि आपने उनसे कहा कि यदि काशी विश्वनाथजी के मंदिर में अछूत प्रवेश करेंगे तो आप श्री विश्वनाथजी के मन्दिर में नहीं जावेंगे। मेरा खयाल तो यही था कि आप भी अस्पृश्यता को एक दोष मानते हैं। यदि यह ठीक हो तो क्या आप अस्पृश्यता-निवारण के प्रयत्नों में शामिल न होंगे? अस्पश्यता हटती देखकर आपको आनन्द तो अवश्य होना चाहिए।

आपके लिखे हुए प्रश्नों की चर्चा मैं पूज्य महात्माजी से नहीं कर

सका। कारण इस बार उन्हें समय नहीं था। दूसरे, ऐसे प्रश्न कई बार हुए हैं और उनका जवाब उन्होंने लिखकर तथा जबानी दिया हुआ है। गत ता० ६-८-३१ के 'नवजीवन' में अहमदाबाद में अस्पृश्यों के लिए एक मन्दिर खोलने के अवसर पर भी उन्होंने अपने जो विचार प्रकट किये थे वे प्रकाशित हुए हैं। मुझे जो उचित मालूम दिया, वह मैंने आपकी सेवा में लिखा है। यदि कोई भूल हुई होगी तो आप क्षमा करेंगे।

आपका आशीर्वाद पाते रहने की आशा रखता हूं। यहां सब कुशल है।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: ३ :

आकेरी, २३-६-२८

पूज्य जमनालालजी,

१. पूज्य बापूजी के पास से कुछ दिन पहले पत्र आया था, जिसमें लिखा है कि जमनालालजी कहते थे कि जो आशावाद आपने अपने काम के अहवाल में दर्शाया है वह आपके मन में नहीं है; और बाद में पूज्य बापूजी ने मेरे इस असत्याचरण के बारे में मुझे अपने तरीके से उलाहना भी दिया। अहवाल पढ़कर देखा तो मुझे उसमें ज़रा भी अतिशयोक्ति दिखाई नहीं देती है। उसी प्रकार चालू काम के बारे में भी मैं निराश नहीं हूं। मैंने इसी मुताबिक पूज्य बापूजी को लिखा भी।

२. आपकी गलतफहमी-संबंधी चर्चा जुलाई के प्रारम्भ में वर्धा म जब भेंट होगी तब वहीं की जाय, ऐसा विचार किया था। परन्तु अनेक कारणों से पहले उधर न जाकर मुझे आगे के काम की जगह ही नक्की करनी चाहिए। मैं स्व० मगनभाई के चरखा-शास्त्र के आधार पर मराठी में पुस्तक लिखना चाहता हूं, उसके लिए सामग्री जुटाने और भिन्न-भिन्न मुद्दों पर सलाह लेने की दृष्टि से उस पुस्तक की आवश्यकता संयोजित कार्यक्रम के लिए विशेष रूप से यहां महसूस हुई। मुझे यहां से जाना ही हो तो ८-१५ दिन के लिए जाने में दुबारा खर्च क्यों किया जाय। परन्तु

अब उस पुस्तक की उतनी जल्दी नहीं है। दूसरी बात यह भी है कि कुछ दिनों के बाद मुझे काफी समय के लिए उधर आना ही हो तो पहले, मेरे द्वारा जो करीब ३३० रुपये की नुकसानी हुई है, उसकी भरपाई कैसे की जाय, यही सवाल पहले निपटाना चाहिए और बाद में ही जैसा योग्य मालूम हो, उस तरह उधर आना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है।

३. मैंने पहले पत्र में आपको, कहीं भी नौकरी करना चाहता हूं, ऐसा कहा और दूसरे पत्र में वह इरादा तुरन्त बदल दिया है, ऐसा लिखा। इरादा बदलने का मुख्य कारण आपकी स्पष्ट असम्मति थी। दूसरे यह कि कुछ लोगों ने मुझे सलाह दी कि मालवण के जिन डा० गवण्डे के नाम २५२ रुपये निकलते हैं उनपर दावा किया जाय, जिससे पैसे वसूल हो सकें। वह स्वयं तो भूखा कंगाल है, परन्तु उसका बाप और अन्य निकट के रिश्तेदार सम्पन्न हैं और उसे जेल भेजने का डर दिखाया गया तो वे पैसे दे देंगे आदि-आदि। नौकरी का, यानी उन पैसों को चुकाने का इरादा दूर ढकेलने का और भी एक कारण हुआ है। और वह यह है कि यहां के काम का विस्तार होने के चिह्न दिखाई देने लगे हैं। उसके संबंध में विस्तृत खुलासा अन्त में करूंगा।

लेकिन डा० गवण्डे पर दावा करने में कोई सार नहीं है, ऐसी बाद में मेरी धारणा बनी है। मैं दावा करनेवाला हूं, ऐसा मालूम होते ही वह मालवण से निकल गया है। उसपर समन्स तामील करना भी कठिन है। इतने पर उसके संबंधी द्रवित होंगे, इसका भी क्या भरोसा किया जाय? दावा करने में भी २५ रुपये खर्च होंगे, २० रुपये का स्टाम्प लगेगा। यह मुझे दावा दायर करने की कोशिश करने के बाद ही मालूम हुआ। ये पैसे भी पहले सरकार को क्यों दिये जायं?

४. मैंने किस परिस्थिति में उधार खादी दी, यह एक बार फिर से लिखता हूं। फरवरी १९२७ के पहले ही चरखा-संघ का उधार-बिक्री करने की मनाही का हुक्म आया था और उसको हम रत्नागिरी भण्डार में अमल में लाते थे। केवल गांधीजी के दौरे के समय हमने जिले के दौरे के मुकाम पर बिक्री के

लिए वहां के स्वागत-मण्डल के प्रमुख सभासदों के पास खादी भेजी थी। और सब जगह के पैसे बिना झंझट के आगये। डा० गवण्डे के पैसों की खींचतान रहती है, यह मुझे मालूम था; परन्तु, यह खयाल था कि १५-२० दिनों में निपटनेवाला व्यवहार है। इसके अलावा वह तालुका कां. कमेटी का और अन्य एक-दो संस्थाओं का अध्यक्ष है। उस वक्त मालवण म्युनिसिपैलिटी का चेयरमैन था। गत कौंसिल के चुनावों के लिए कांग्रेस उम्मीदवार के नाते खड़ा भी हुआ था, पर चुनकर नहीं आया। इन बातों पर से, और वह रत्नागिरी खास खादी-काम के लिए ही आया था, इसलिए मुझे कुछ कठिनाई नहीं मालूम दी। परन्तु उसने खादी-बिक्री में से २५२ रुपये नहीं दिये हैं और मालवण के स्वायत्त मण्डल का वह मंत्री था। उसके हिसाब भी अभी पूरे नहीं हुए हैं।

५. यह नुकसान यदि चरखा-संघ सहन करले तो मुझे एकदम छुटकारा मिल जायगा। लेकिन वह बुरा उदाहरण होगा, मुझे ऐसा लगता है और कम-से-कम मेरे द्वारा ऐसी बुरी मिसाल पेश नहीं होनी चाहिए। उसको उधार खादी देने में धोखा है और चरखा-संघ के नियमों का भंग होता है, यह समझते हुए भी बापू के दौरे के उत्साह के जोश में "मेरी जवाबदारी पर" कहकर उसे खादी दिलवाई। वह जवाबदारी अपने ऊपर आ पड़ने पर अब मैं दूर क्यों भागूं?

६. यहां के काम के बारे में मेरी बड़ी महत्त्वाकांक्षाएं हैं। संस्थान की सब शालाओं में कताई शुरू करने की इच्छा श्री महाराजजी ने कह-सुनाई। उसकी योजना की रूपरेखा अभी तक तैयार नहीं हुई है। अक्तूबर, १९२९ में बापूजी को ६० साल पूरे होंगे। उस अवसर पर सरदेसाई चरखालय की ओर से १ करोड़ गज सूत उन्हें अर्पण किया जाय, ऐसी मेरी एक आकांक्षा थी, जो पार उतरेगी, ऐसा विश्वास होता है। उसकी वजह से इस हिस्से में चरखे का वातावरण जम सकेगा और 'कोटि सूत्र-यज्ञ' के बल पर बापूजी को भी संस्थान में बुलवाकर उसको अधिक स्थिर बना सकेंगे, आदि। उसी प्रकार संस्थान के उदाहरण के बल पर आहिस्ता-आहिस्ता रत्नागिरी जिला लोकल बोर्ड की शालाओं में भी कताई का प्रशिक्षण सार्वत्रिक किया जाय,

आदि के अपन मनसूबे मैंने अवतक दो-तीन साथियों के अलावा किसीपर भी प्रकट नहीं किये हैं। यह मन की बात यहां उल्लेख करने का कारण यह है कि मैं नौकरी करना चाहता था, सो निराशा की वजह से नहीं; यही आपके समक्ष स्पष्ट कर सकूं।

७. नुकसानी की पूर्ति कैसे की जाय, इसका विचार करते हुए, मुझे उपरोक्त कार्य पूरा करने के लिए संस्थान में ही रहना चाहिए, ऐसा मालूम दे रहा था। इसलिए यहीं शिक्षक की नौकरी प्राप्त करके चरखालय के काम में भी योग देना और नुकसान की पूर्ति करना दोनों कार्य एक साथ जम सकेंगे, ऐसा मेरा इरादा था।

सरकारी शिक्षा-संस्थाओं में नौकरी करना सदोष है, यह मैं कबूल करता हूं। परन्तु अपनी पसन्दगी की सार्वजनिक संस्था की ओर से उसका काम एक साल के लिए ही करके अपनी नित्य की आवश्यकता से अधिक वेतन मांगना यह भी मार्ग गौण ही है। द्रव्यहीन आदमी का धन के व्यवहार में व्यर्थ की जवाबदारी लेना अथवा उपरोक्त संस्था के नियमों को टालकर चलना, यही मूल दोष है। फिलहाल मैं चरखा-संघ का नौकर नहीं हूं। पूर्ण रूप से चरखा-संघ के मातहत भी नहीं हूं, फिर भी कुछ समय तक चरखा-संघ की पूरी हुकूमत में रहकर और उसके लिए कहीं भी जाकर नुकसानी की पूर्ति करने का यह भी एक रास्ता है। वर्धा राष्ट्रीय विद्यालय, सासवने आश्रम आदि जगहों में काम करने का आपने सुझाया था। वे मार्ग भी हैं। आप गांधी-सेवा-संघ, चरखा-संघ और अन्य संस्थाओं के सूत्रधार हैं ही। इस नाते के अलावा भी आप जो तय करेंगे वह मुझे मान्य होगा ही। तथापि आप उपरोक्त सब बातों का विचार करके मुझे आगे कौन-सा काम करना चाहिए, यह तय करके यथासंभव शीघ्र सूचित करें। पत्र का विस्तार बहुत होगया है। प्रत्यक्ष मिलकर इससे भी अधिक विस्तार से बातचीत हो सकती थी; परन्तु भावी कार्य का स्वरूप जिस तरह तय होगा उसके अनुसार उधर आना ही मेरेलिए अधिक सुविधाजनक होगा, और खर्च की दृष्टि से लाभदायक मालूम देते से पत्र से ही काम चला लेने

का प्रयत्न किया है। और अधिक जानकारी चाहिए तो सूचना मिलने पर लिखूंगा।[1]

विनीत,
अप्पा पटवर्धन के प्रणाम

---

[1] श्री अप्पा पटवर्धन १९१९ से २१ तक साबरमती-आश्रम में रहने के बाद अपने रत्नागिरी जिले में काम करने की इच्छा से लौट गये। सन् १९२७ की फरवरी से अप्रैल तक गांधीजी का नागपुर से रत्नागिरी तक, महाराष्ट्र में दौरा हुआ। उस दौरे के बाद सावन्तवाडी के महाराज की मांग और सहायता पर तथा गांधीजी की आज्ञा से श्री अप्पा पटवर्धन ने सावन्तवाडी राज्य में चरखा-प्रसार का काम अपने हाथ में लिया। एक साल के काम का जो अहवाल अप्पा ने गांधीजी को भेजा, उसमें बहुत आशाएं प्रकट की गई थीं।

१९२६ से श्री अप्पासाहब गांधी-सेवा-संघ के सदस्य हुए थे। गांधीजी की हरिजन-यात्रा के सिलसिले में खादी-प्रचार के हेतु अप्पा द्वारा कुछ खादी उधार दी गई थी। उसमें से करीब ३०० रु० की खादी के दाम वसूल न हो सके, इस कारण उस रकम का दायित्व अप्पा के जिम्मे पड़ा। गांधी-सेवा-संघ के सदस्यों की नियुक्ति आम तौर पर दो सालों के लिए होती थी। अप्पा ने चाहा कि वह कहीं नौकरी करके यह घाटा पूरा कर लें। इस विचार से गांधी-सेवा-संघ की सदस्यता से मुक्ति चाही। उनकी इस इच्छा से जमनालालजी को गलतफहमी हुई दीखती है कि वह सावंतवाडी के चरखा-प्रसार के काम से निराश या उदासीन हुए हैं। जमनालालजी ने उनके गांधी-सेवा-संघ से मुक्त होने का विरोध किया; क्योंकि उनका (जमनालालजी का) यह खयाल था कि वह गांधी-सेवा-संघ के आजीवन सदस्य रहें और खादी का घाटा गांधी-सेवा-संघ की तरफ से पूरा करने को वह (जमनालालजी) तैयार थे। लेकिन अप्पा राजी नहीं होते थे। दूसरे, अगर नौकरी ही करनी हो तो चरखा-संघ या वर्धा की किसी राष्ट्रीय संस्था में ही करने की उनकी इच्छा थी। अंत में गांधीजी और विनोबा की सलाह से अप्पा राजी हुए और नौकरी करके घाटा पूरा करने का विचार उन्होंने छोड़ दिया।

: ४ :

वर्धा, २५-१०-३८

प्रिय अप्पाजान,

अभी कुछ दिन पहले वर्धा लौटने पर ही मुझे यह मालूम हुआ कि डाक्टर साहब बीमार हैं। उन्हें जो कुछ दर्द व तकलीफ सहन करनी पड़ी, उसके लिए मुझे बड़ा अफसोस है।

मुझे श्री आर्यनायकम् से यह जानकर खुशी हुई कि आपरेशन के बाद वह बहुत अच्छे हो गये हैं और उनके लिए सभी जरूरी सुविधाएं की जा रही हैं। ऐसे समय पर उन्हें आपकी मदद से बड़ा आराम मिलता। मैं २०० रुपये इसलिए भेज रहा हूं कि आप डाक्टरसाहब के इलाज और आराम के लिए जैसा उचित समझें करें। ये बिल्कुल व्यक्तिगत मदद है, जिसका जिक्र किसीसे नहीं किया जाना चाहिए मेहरबानी करके डाक्टर-साहब की तबीयत का हाल मुझे लिखते रहें। अगर मैं उनके लिए कुछ कर सकता हूं तो उसके लिखने में संकोच न करना।

आशा है कि डाक्टरसाहब शीघ्र ही तन्दुरुस्त हो जायेंगे।[१]

शुभाकांक्षा-सहित,

आपका,

जमनालाल बजाज

: ५ :

दिल्ली, २९-१-३६

पू० श्री काकाजी,

सादर प्रणाम। मुझे बहुत दुःख है कि जबसे वर्धा से आई हूं, आपको पत्र नहीं लिख सकी। आपके तार का, जो पू० बापू की तबीयत के बारे में दिया था, अबतक शुक्रिया न लिखने पर आप खयाल करते होंगे कि कैसी नाशुक्रगुजार लड़की है। लेकिन जबसे आई हूं पसली के दर्द, दिल की कम-जोरी, आधे सर के दर्द वगैरा से हैरान थी। अब कुछ अच्छी हूं। दूसरे,

---

१ अंग्रेजी से अनूदित

बच्चे माता-पिता का शुक्रिया कब अदा करते हैं ! आशा करती हूं कि क्षमा करेंगे । आप दिल्ली कब आ रहे हैं ? मुझे खबर दीजिये । पू० बापू के आने की अभी तक ठीक खबर नहीं । श्री वल्लभभाई बार-बार लिखते हैं कि अभी मत बुलाओ । देखो, क्या होता है । ओम्, मदालसा, रामकृष्ण को मेरा प्यार, माताजी को सादर प्रणाम ।

सादर प्रणाम-सहित

आपकी,
अमतुल सलाम

: ६ :

वर्धा, -१२-४१

प्रिय श्री झा साहेब,

श्री काकासाहेब से मुझे यह जानकर बड़ा सन्तोष हुआ कि राष्ट्र-भाषा-प्रचार के संबंध में आपके विचार वैसे ही हैं, जिससे कि इस संबंध में उपस्थित विवाद अच्छी तरह हल हो सके । खेद है कि मैं स्वतः सम्मेलन में उपस्थित न हो सकूंगा,तथापि मैंने अपने विचार सम्मेलन के स्वागताध्यक्षजी को एक पत्र में लिख दिये हैं, जिसकी नकल आपके अवलोकनार्थ इसके साथ भेज रहा हूं । उससे सम्मेलन में मेरे न आ सकने का कारण भी आपको मालूम हो जायगा । आशा है, आप भी मेरी अनुपस्थिति के लिए क्षमा करेंगे ।

भवदीय,
जमनालाल बजाज

: ७ :

प्रयाग, १६-१२-४१

प्रिय सेठ जमनालालजी,

कृपा-पत्र मिला, धन्यवाद । आप सम्मेलन[१] में उपस्थित न हो सकेंगे,

[१] हिन्दी साहित्य सम्मेलन

इसका खेद है। मैं वर्धा की समिति के काम को इतने महत्त्व का समझता हूं कि मैं चेष्टा यही करूंगा कि उसमें बाधा न पड़ने पाये। अब टंडनजी भी आ गये हैं और उनका कहना तो सबको मान्य होगा ही।

आशा है, आप सकुशल हैं।

भवदीय,
अमरनाथ झा

: ८ :

शिमला, ७-८-३६

भाई जमनालालजी,

कई दिन से आपको पत्र लिखने की कोशिश कर रही हूं, पर काम अधिक रहा है और तबीयत अच्छी नहीं।

आज मैं थोड़ी देर के बाद वर्धा जा रही हूं। पू० बापूजी जबसे वहां गये हैं, मुझे बुला ही रहे हैं। पर यहां मुझे काफी काम था, इसलिए आज से पहले चल नहीं सकी। वहां पहुंचकर उनके स्वास्थ्य का हाल आपको लिखूं ी। काम तो उनको बहुत ज्यादा रहता है। बढ़ता ही जाता है। कम होने की तो कुछ आशा है नहीं। और आजकल देश में कुछ ऐसे हिंसा के खयाल पैदा होगये हैं कि कभी-कभी दिल निराश हो जाता है। नहीं मालूम क्या होनेवाला है। अच्छा, जो ईश्वर ेी मर्जी हो, वही अच्छी!

आप कैसे हैं? कल अखबार में पढ़ा था कि बिजली के इलाज से कुछ नुकसान होगया है। आशा है कि दर्द कम हो रहा होगा।

मेरेलिए इस समय जयपुर आना संभव नहीं था। पू० बापूजी से भी मैंने पूछा था। उन्होंने इस वक्त मुझे सीधे वर्धा आने का आदेश दिया। अब जब कभी मौका होगा, जरूर आऊंगी। लेकिन अब तो आपकी बारी हम लोगों को देखने की आगई है।

यहांपर एक छोटी-सी रियासत—धामो—में गड़बड़ होगई थी। गोली भी चली। बेचारे गरीब ही इन मौकों पर मारे जाते हैं। उनके लिए

मेरा दिल बहुत दुखता है।

आज ज्यादा समय नहीं है। इसलिए और नहीं लिख सकती। अब आप मुझे वर्धा ही लिखेंगे। जल्दी अच्छे हो जाइये और शीघ्र ही घर वापस आइये।

आपकी बहिन,
अमृतकुंवर

: ९ :

शिमला, २५-६-३७

प्रिय भाईसाहिब,

मैं आपके नाम आज एक चैक भेज रही हूं। कमला नेहरू अस्पताल के लिए यह रानीसाहिबा अमावन ने मुझे भेजा है। मेहरबानी से इस 'चैक' रुपये ५०० की रसीद आप मुझे तुरन्त भेज दीजियेगा। मैं खुद उनको भिजवा दूंगी। आशा है कि आप सब अच्छी तरह से होंगे। अब तो बारिश भी शुरू हो गई होगी। यहां अभी तक नहीं आई है और काफी गर्मी है। बापूजी लिखते हैं कि आप कलकत्ता जानेवाले हैं, लड़के के विवाह के लिए। क्या वह विलायत से लौट आये हैं?

अब तो अगर ईश्वर चाहे मैं एक महीने के अन्दर-ही-अन्दर बापूजी के पास जाऊंगी।

अगर आप उनसे मिलें तो कह देना कि मैंने आपको पत्र हिन्दी में लिखा है। यह सुनकर वह सदा प्रसन्न होते हैं।

कोई भूल लिखने में हो तो क्षमा कीजियेगा। जल्दी में लिख रही हूं।

आपकी बहिन,
अमृतकुंवर

: १० :

शिमला, ७-९-३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपकी सूचना आज के अखबार में पढ़कर दिल बहुत दुःख रहा है और मन परेशान हूँ। जिस दिन मैं सेगांव से चली हूं उस दिन तो प्रिय बापूजी पहले से कुछ अच्छे मालूम देते थे, लेकिन शायद उन्होंने अगले रोज जो मुलाकात दी होगी उसके कारण फिर से तबीयत गिर गई होगी। बड़ा अफसोस है। आशा है कि आप खुद सेगांव में एक-दो हफ्ते जाकर बापूजी की रक्षा करेंगे। मेरी सम्मति में उनके लिए काफी शांति सेगांव में ही मिल सकती है, अगर कोई दृढ़ रक्षक उनके पास रहे। आप यह सेवा बखूबी कर सकते हैं। जरूर कीजियेगा। हम लोग तो दूर पड़े हैं। हमारे दिलों को भी कुछ सुख पहुंचेगा।

मैं तो उनको दूसरे-तीसरे दिन हमेशा पत्र लिखती हूं, लेकिन क्योंकि आपने अखबार में मना किया है, मैं नहीं लिखूंगी, जबतक आपकी आज्ञा न हो। मीरा को लिख रही हूं कि उनके स्वास्थ्य का हाल मुझे रोज भेज दिया करें। आप भी अगर उनसे रोज मिलते हों तो मुझपर दया करना और ठीक-ठीक खबर भेजते रहना।

आपका तार नबीब बख्श के बारे में मिल गया था। उसके लिए मेरा धन्यवाद। मेरे खयाल में वह अब हफ्ते भर तक वहांपर आ जायेगा।

आशा है कि मौसम सेगांव में अच्छा है। बापू को छोड़ते हुए हमेशा बहुत दुःख होता है, लेकिन जब वह बीमार होते हैं तो दूर रहना बहुत कठिन हो जाता है। आप सब जो उनके पास रहते हैं बहुत भाग्यवान हैं, इसलिए मुझे भूलना नहीं और खबर भेजते रहना। चार्ली अस्पताल में अभी तक हैं, लेकिन अब सिवाय कमजोरी के कोई और तकलीफ नहीं है।

अब आज और लिखने का समय नहीं है। सबको मेरी तरफ से सप्रेम वन्दे कह देना। आशा है, आप सब अच्छी तरह से हैं और भगवान बापू

को शीघ्र आराम देगा।

आपकी बहिन,
अमृतकुंवर

ता. क.

अनसूया काले नागपुर में मिली थी और कहती थी कि आपको जरूर रुपये ५० से ज्यादा देना चाहिए। स्त्री-संघ के लिए अगर आप कुछ और सहायता दे सकते हैं तो दीजियेगा, मेरी खातिर।

: ११ :

जालन्धर, १४-१२-३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

ऐसा मालूम होता है कि आप अभी तक बापूजी के पास जुहू में ही हैं। आशा है कि उनका स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिल्कुल अच्छा हो जायगा और आप उनको देर तक काम से अलग रखेंगे।

मीरा ने मुझे लिखा है कि मुझे भी उनके पास आने की इजाजत आप देने को तैयार नहीं हैं। इसलिए अब मैं नागपुर से सीधी यहां लौट आऊंगी।

नागपुर २६ ता. को पहुंचने का इरादा है और वहां जनवरी की दूसरी या तीसरी तक रहना पड़ेगा। अब वहां जाने को दिल बिल्कुल ही नहीं चाहता। अगर मैं 'सभानेत्री' के जाल में न फंसी होती तो जाने से इन्कार कर देती। लेकिन जाना तो पड़ेगा ही।

आपकी भी वहां २८ (खुले अधिवेशन) को हमारे जलसे में शामिल होने की कुछ उम्मीद है या नहीं? बहुत आशा रखी थी कि बापूजी के एक दिन वहां आने से बहनों को लाभ पहुंचता, पर उन्होंने तो धोका दिया ही है। हमारे भाग अच्छे नहीं हैं। खैर, ईश्वर उन्हें शीघ्र आराम दे। जुहू से आप उन्हें कहां ले जाने की तजवीज कर रहे हैं? सुना है कि शायद पुरी जायं। इस खबर में कुछ सचाई है? यदि है तो इतनी दूर का सफर उनके लिए

क्या अच्छा होगा ? और कबतक जायं ? फुर्सत हो तो लिखियेगा। सबको सप्रेम वंदे।

आपकी बहिन,
अमृतकुंवर

: १२ :

जालन्धर, २१-१२-३७

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र कल मिला और उसे पढ़कर बहुत दुखी हुई हूं। आशा तो मेरी बहुत थी कि जनवरी के शुरू तक बापूजी की सेहत इतनी अच्छी हो जाती कि मुझे उनके पास आने की इजाजत मिल ही जाती। आप 'वर्किंग कमेटी' के लोग ही उन्हें बीमार करते हैं। और फिर दुःख हमारे जैसे गरीबों को बर्दाश्त करना पड़ता है और अब मैं देखती हूं कि अगला 'वर्किंग कमेटी' का इजलास आपने बाम्बे ही में रखा है। क्या उन्हें फिर बीमार करने का इरादा है। अगर आप नागपुर २२ को मुझे सहायता देने के लिए आयें तो मैं बहुत प्रसन्न हूंगी, लेकिन बापूजी के सेगांव न होने के कारण और उनके वहां न आने की वजह से मेरा अब किसीपर विश्वास नहीं है।

शायद मैं नागपुर के बाद बाम्बे दो-तीन दिन के लिए आऊं। आशा है कि दो-तीन मिनट के लिए बापूजी के दर्शन की इजाजत मिलेगी। अगर जुहू की आबहवा उनको माफिक है तो फिर वहां ही उन्हें रहना चाहिए।

आपकी दुखी बहिन,
अमृतकुंवर

: १३ :

जालन्धर, २२-१२-३७

प्रिय भाई जमनालालजी,

अंदेशा है कि आप मेरे से नाराज न होगये हों, मेरी कल की चिट्ठी

से। क्षमा करना, अगर मैंने उसमें कुछ लिखा जिससे आपको दुःख हुआ हो। मैं खुद बहुत दुखी हूं, बापूजी की बीमारी से और मेरेलिए तो यह ही एक महीना है, उनके पास आने का। पर आपकी रक्षा को हरगिज बुरा नहीं मानती। यदि मैं बाम्बे आऊं तो मुझे उनसे दो-चार मिनट के लिए तो मिलने की इजाजत होगी।

मैं वापसी टिकट ले रही हूं, इसलिए आप बिल्कुल न घबराइये।

सबको सप्रेम वंदे

आपकी बहिन,
अमृतकुंवर

: १४ :

जुहू, बम्बई, जानकी-कुटीर,
१७-१-३९

प्रिय बहन राजकुमारीजी,

कल पू० बापूजी का तार मिलने पर यहां से मैंने जयपुर दरबार की स्टेट कौंसिल को जो पत्र लिखा था उसकी नकल व वहां के नोटिफिकेशन की नकल उन्हें भेज दी है। इस पत्र के साथ जयपुर गजट नं० ४५१८ के अंश की नकल भेज रहा हूं। शायद बापूजी को इसकी जरूरत पड़े।

कल जो कागजात बापूजी ने मंगवाये हैं, उसपर से मालूम होता है कि इस 'हरिजन' में वह इस विषय पर कुछ लिखेंगे। यदि बापूजी के उस लेख की एक नकल आप मुझे वर्धा के पते पर भिजवा देंगी तो जयपुर राज्य में प्रचार करने के लिए मैं उसका उपयोग करना चाहता हूं। जिस समय 'हरिजन' प्रकाशित होगा, उसी समय उसे पत्रिका-रूप में छपाने का विचार है। इसलिए यदि उसकी नकल पहले ही मिल जायगी, तो इस काम में सुविधा होगी।

जमनालाल बजाज

: १५ :

वर्धा, २६-१२-३९

प्रिय भाई जमनालालजी,

कई दिनों के वाद आपको लिखने का अवसर मिला है।

मैं छः सप्ताह के लिए बाहर रही। बीमार भी होगई थी। अब तो अच्छी हूं और यहां आये हुए चार दिन होगये हैं।

पूज्य बापू की सेहत अच्छी है। काम तो काफी है और वर्किंग कमेटी के दिनों में बहुत ही रहा। पर काम कम करने का तो कोई इलाज है ही नहीं।

आपका स्वास्थ्य अब कैसा है? आशा है कि आपको इलाज से काफी लाभ होगा। यहां कबतक वापस आवेंगे?

पूज्य वापू जानना चाहते हैं कि जो आर्डर हाल में जयपुर दरबार की तरफ़ से निकला है कि प्रजा-मण्डल अपना रजिस्ट्रेशन कराये—वह क्या है? लिखके हमें बताइयेगा।

अमतुल सलाम मेरे पास बैठी है। आपको प्रणाम कहती है। आपकी तबीयत के बारे में पूछती है।

और यहां सब अच्छी तरह से हैं, सिवा मरीजों के, जिनकी संख्या रोज-रोज बढ़ती चली जाती है। लेकिन यह तो बीमारों का घर है—चाहे मानसिक हो चाहे शारीरिक।

आपको और जानकीबहिन को प्रणाम।

आपकी बहिन,
अमृतकुंवर

: १६ :

वर्धा, २९-१२-३९

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र आज मिला। उससे चि० मदालसा की बीमारी का हाल सुनकर अफसोस हुआ। आशा है, मदालसा को शीघ्र ही आराम आ जायगा।

पूज्य बापूजी अच्छे हैं। कुछ थकान तो अभी भी है। कल से शाम की प्रार्थना के बाद तुरन्त ही सोने को चले गये थे। मैं उम्मीद करती हूं कि रोज ऐसा ही करेंगे।

मैं तो अब ठीक हूं। जल्दी ही थक जाती हूं। बस इतना ही है।

थोड़े दिनों के बाद इंदौर जानेवाली हूं। एक-दो दिन से ज्यादा नहीं रहूंगी। रियासतों में काम अच्छा चल ही नहीं सकता, जबतक कि हमारे राजों-महाराजों में कुछ शक्ति नहीं आती और शक्ति नहीं आयगी, जबतक सेवा-भाव नहीं है, उनके दिलों में।

जानकीबहिन को प्रणाम। मदालसा को प्यार और ओम् को भी, अगर आपके पास हो आजकल। पूज्य बा अभी तक दिल्ली में हैं।

आपकी बहिन,
अमृतकुंवर

: १७ :

शिमला, ३१-५-४०

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र लेकर श्री प्रभुदयाल, हिम्मतसिंह के सेक्रेटरी, मेरे पास आये थे। श्री प्रभुदयालजी बेचारे यहां आते ही बीमार होगये। बुखार आगया था। मैंने डाक्टर भेजने को कहा, लेकिन उन्होंने कहा कि आवश्यकता नहीं है। आपकी आज्ञानुसार मैंने उन्हें एक परिचय का पत्र श्री वाजपेयीजी को दे दिया था और श्री वाजपेयीजी को टेलीफोन करके आपके बारे में बातचीत भी की थी।

आशा है, आप सकुशल होंगे। जयपुर प्रजा-मण्डल के सम्मेलन के बारे में मैंने अखबार में पढ़ा। ऐसा मालूम देता है कि अच्छी तरह सब काम हो गया। स्त्रियों की मीटिंग का हाल भी अखबारों में आया था। राजपूताना में स्त्रियों की जागृति और शिक्षा की बहुत जरूरत है।

मुझे यहां आये तीन हफ्ते होगये हैं। अभी तो मैं भाइयों के पास ही हूं। नीचे गर्मी भी काफी है, और पूज्य बापूजी को मेरी आवश्यकता तो है ही नहीं।

१२-१४ जुलाई को मुझे स्त्रियों की कान्फ्रेंस के लिए एवटावाद जाना होगा। इसलिए, मेरे खयाल में, जुलाई की आखिर तक सेवाग्राम आना होगा।

लड़ाई की खवर आज तक तो बुरी ही आती है, मित्र-राष्ट्रों के लिए। लेकिन मैं समझती हूं कि अन्त में यह लोग सफलता पायेंगे। परन्तु मुझे दुःख हो रहा है कि इतने नौजवान मारे जा रहे हैं। दुनिया पागल होगई है। ईश्वर को भूल जाने का यही परिणाम होता है। ऐसा मालूम होता है कि यूरोप तवाह हो जायगा। और हम लोग ऐसे कमवख्त हैं कि आपस में लड़ते चले जाते हैं, छोटी-छोटी वातों पर! जो मूल वस्तु है उसे भूले बैठे हैं। कब ऐक्य होगा! कभी-कभी तवीयत वहुत निराश हो जाती है।

श्री जानकीवहिन को मेरा प्रणाम। आपकी कुछ सेवा कर सकूं, तो जरूर वताइयेगा।

आपकी वहिन,
अमृतकुंवर

: १८ :

शिमला, २२-८-४१

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र देहरादून से मिला, और आज आपका कार्ड भी मुंशीजी के नाम आगया। आपको देहरादून में एक शांतिप्रद जगह मिल गई है, यह सुनकर आनन्द हुआ। मैंने आपको दो पत्र लिखे थे, दोनों ही नैनीताल के पते पर। आशा है, आपको मिल गये होंगे। आपके Plan (कार्यक्रम) बदलते रहते हैं। इसका क्या इलाज है? आपकी सेहत अच्छी है, यह सुनकर खुशी हुई। मैं उम्मीद रखती हूं कि आप खाने-पीने का काफी एहतियात रखते होंग। वजन कैसा है और घूमते-फिरते कितना हैं? देहरे में तो आजकल गर्मी होती होगी।

मेरी तवीयत अभी तक संभली नहीं। हर दूसरे दिन डा० मेकल के पास जाती हूं। आगे से आराम तो है पर अभी भी खांसी चालू है और

हर वक्त थकान रहती है। बापू चिन्ता करते हैं। इससे मुझे दुःख होता है। पूरा हाल न लिखूं तो उन्हें अच्छा नहीं लगता और सच तो लिखना पड़ता ही है। अब तो मुझे अपने पास आने को कहते हैं, पर अपना बोझ उनपर तो कभी नहीं डालूंगी। आशा करती हूं कि आठ-दस रोज में बिल्कुल अच्छी हो जाऊंगी।

सरदार की खबर आपने अखबारों में पढ़ ली होगी। आशा है, फोड़ा निकाल देने पर उन्हें पूरा आराम आ जायगा।

शिवराव कल आये थे। आपको पूछते थे। कोई खास खबर तो आपको देने की नहीं है। सब कैदियों को छोड़ने के बारे में सोच-विचार हो रहा है, ऐसा सुनने में आया है। देखें क्या होता है। पर इन लोगों के ऊपर ज़रा भी न्याय का विश्वास रखना मूर्खता है। रूस की फौजी हालत उनकी दृष्टि से तो भयानक मालूम देती है। सबकी ओर से आपको वन्देमातरम्।

मेरा प्यार। आप अच्छे रहिये!

तोफा का प्रणाम।

आपकी बहिन,
अमृतकुंअर

: १९ :

शिमला, १६-११-४१

प्रिय भइया,

आपका पत्र आज मिला। धन्यवाद!

आपने शायद पू० बापू से सुन लिया होगा कि मेरे बड़े भाई का देहान्त ६ ता० को होगया। वह बीमार तो कुछ महीनों से थे और हाल में उनकी हालत मानसिक और शारीरिक बहुत बिगड़ गई थी और हमें उनके बचने की उम्मीद नहीं रही थी। फिर भी भाई तो थे और थोड़ा दुःख तो होता है कि वह चले गये। लेकिन सबको जाना तो है ही और उनके लिए तो सुख है। वह तकलीफ में थे, उससे तो बच गये। अब मुझे महाराज भाई जालंधर

बुला रहे हैं। वहां का घर वगैरा संभालना होगा। महाराज तो युक्त-प्रान्त के रहनेवाले हैं। जालंधर की कोठी वगैरा मेरे और भाई के चार्ज में देना चाहते हैं। भाई को उनकी (बड़े भाई) जगह ट्रस्टी भी बनाना चाहते हैं। खुद तो राजा होगये हैं और ट्रस्टी अब एक ही रह गया; याने मेरे जज भाई, जिनके अकेले के लिए जिम्मेदारी अधिक है। यह काम सब तय हो जाय तो मैं तुरन्त वर्धा आऊंगी। १९ की रात या ज्यादा-से-ज्यादा २० की रात को जालंधर से चलकर २१ या २२ को दोपहर वर्धा पहुंचूंगी, आपको तार के जरिये पता भेजूंगी।

आपको सप्रेम वन्दे, सबकी ओर से। जानकी बहिन को मेरी ओर से भी नमस्कार कह देना। लड़कियों को प्यार।

अमृतकुंवर का सप्रेम वन्दे।

: २० :

स्वराज्य-आश्रम,
बारडोली, २१-१२-४१

प्रिय जमनालालभाई,

कल मौलाना सा० और जवाहरलाल यहां पहुंच गये। ए. आई. सी. सी. के बारे में चर्चा हुई। यह तय पाया गया है—अभी तक—कि यह मीटिंग वर्धा में हो, पू० बापू के बनारस जाने के पहले—याने जनवरी १२ से १९ के बीच में। वर्किंग कमिटी अक्सर पहले और ए. आई. सी. सी. के बाद में भी बैठती है। सो ए. आई. सी. सी. यदि १५ को हो तो बापू १९ या २० को बनारस के लिए रवाना हो सकेंगे।

बापू कहते हैं कि आपके लिए उचित होगा, यदि आप तुरन्त तार के द्वारा एक निमंत्रण यहांपर मौलानासाहब को भेजें कि ए. आई. सी. सी. वर्धा में हो।

बापू का स्वास्थ्य ठीक है। पू० बा भी आज अच्छी हैं, लेकिन कमजोरी तो है ही। मुझे कुछ सर्दी होगई है। बाकी सब अच्छा चलता है। दुर्गाबहिन

उनाई पहुंचते बीमार होगई। इसलिए महादेवभाई वहां से अभी तक वापस नहीं आ सके। शायद आज आ जायं। सरदार की तबीयत धीरे-धीरे सुधर रही है।

आज और लिखने का समय नहीं। आप अच्छे होंगे। प्यार!

आपकी बहिन
अमृतकुंवर

: २१ :

गोपुरी, वर्धा, २४-१२-४१

पूज्य राजकुमारी बहिन,

कल मैं पू० विनोबाजी के साथ भावखेड़ गया था। आज सवेरे १० बजे वहां से लौटने पर आपका पत्र मिला। पत्र मिलते ही आपको एक जरूरी तार भिजवाया है। आशा है, वह मिल ही गया होगा। ए. आई. सी. सी. की मीटिंग यहां रखने की राय हुई है। लिखा तो ठीक है। किन्तु यहां पर २५०, ३०० आदमियों के लिए जगह का होना कठिन है।

शहर में भी मकान आदि का प्रबन्ध नहीं हो सकता है। ए. आई. सी. सी. की मीटिंग के यहां होने में यह एक बड़ी अड़चन है। इस वास्ते अगर इस प्रान्त में ही रखने की बात हो तो नागपुर या अकोला मेरी राय में ज्यादा सुविधाजनक हो सकेंगे। जो निश्चय हो, उसकी तार द्वारा मुझे खबर देने को, मैंने तार में लिखा दिया है। अगर अकोला या नागपुर का निश्चय हो तो बृजलालजी या पूनमचन्दजी को जल्दी ही खबर देनी होगी। सो, क्या तो आप परभारे ही उनसे निश्चय कर लें या मुझे ठीक से मंत्रणा दे देने को लिख दें। मैं उन्हें तार के द्वारा सूचना दे दूंगा कि वे ए. आई. सी. सी. को नागपुर या अकोला बुलाने का निमंत्रण भेज देवें। मैं कल फिर देहात की ओर जाऊंगा। ता. २७ शनिवार को वापस लौटूंगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: २२ :

दिल्ली, २१–७–३६

प्रिय जमनालालजी,

हमारे प्रधान श्री घनश्यामदास विड़ला ने हरिजन सेवक संघ की कार्यकारिणी समिति की आगामी बैठक सितंबर के प्रथम सप्ताह में वर्धा में करने का निश्चय किया है। तारीखें संभवतः ४, ५ और ६ सितंबर (शक्रवार, शनिवार तथा रविवार) होंगी। बैठक में १० व्यक्ति उपस्थित रहेंगे, जिनमें ७ सदस्य होंगे। वर्धा में वे आपकी मेहमानदारी में ही रहेंगे। आशा है, उस समय आप वहीं होंगे। आप यदि न भी हों, तो कृपया आप उन लोगों के लिए, जिनमें प्रधान श्री घनश्यामदास विड़ला भी शामिल रहेंगे, रहने तथा खाने-पीने की व्यवस्था करने की हिदायत किसी भी व्यक्ति को दे देंगे। प्रस्तावित बैठक में अभी डेढ़ महीना शेष है।

आपका शुभचिंतक,
अ. वि. ठक्कर
(महामंत्री, हरिजन सेवक संघ)

प्रतिलिपि महात्मा गांधी, वर्धा को

: २३ :

सीकर, ४-८-३६

प्रिय जमनालालजी,

मैं राजपूताना के दौरे के सिलसिले में कल सीकर आया और आपके यहां ठहरा। श्री लादूरामजी जोशी ने वहुत सत्कार किया और यहां का जो स्थानीय कार्य है वह दिखलाया। मैंने आपकी पाठशाला, जो राजपूताना शिक्षा-मण्डल के अधीन चल रही है, को देखा, औषधालय भी देखा और यहां के वलाई, रैगर और भंगी मोहल्लों का भी निरीक्षण किया। मेहतरों के लिए जो कुआं वन रहा है और जिसके लिए संघ ने ३०० रुपये भी दिये हैं उसे भी देखा। पालथाड़ा के वलाइयों से भी मिला और उनके कुओं का जो प्रश्न उठ खड़ा है उसके बारे में भी बात की। आशा है

कि कुछ मदद उनके कुओं के लिए संघ से दूंगा। लोसल में भी एक कुंआं बन रहा है। इसके लिए संघ ने ७५० रुपये सहायता में मंजूर किया है। श्री डेडराजजी खेतान कल यहां आये थे। उनके संग श्री शोभालाल गुप्त को भेजा है कि वहां जाकर और कुछ हरिजन-कार्य की संभावना हो तो देखें।

यहांपर हरिजन-कार्य के लिए बहुत ही क्षेत्र है। प्रस्तुत पाठशाला के अलावा अभी दो पाठशालाएं मेहतरों और बलाइयों की चल सकती हैं। आपकी पाठशाला में ४८ लड़के हैं और केवल एक अध्यापक है। उस पाठ-शाला को संघ के अधीन करने की बात चल रही है। सितम्बर में आपसे जब वर्धा में मिलूंगा तो अधिक परामर्श करूंगा। यहांपर संघ विशेष कार्य कुछ भी नहीं कर सका है, पर कार्य करने का इरादा है। यहां के कार्य के लिए आपसे सहायता की अधिक आशा करता हूं।

यहां के भंगियों को पूरा वेतन मिलता है। उनमें से एक रुपया इंस्पेक्टर घूस ले लेते हैं। उसके संबंध में भी वेबसाहब को लिखा है।

अधिक बातें मिलने पर होंगी। मैं आज मुकुन्दगढ़ जा रहा हूं।

अमृतलाल वि० ठक्कर का वन्देमातरम्

: २४ :

दिल्ली, १४-८-४१

प्रिय जमनालालजी,

आपका कृपा-पत्र १२ ता० का मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपका स्वास्थ्य ठीक हो रहा है।

मैंने भी दामोदर को लिखा है कि वह चोखामेला होस्टल का सदस्य बन जावे और कुछ औरों को बनावे। आप यदि उचित समझें तो एक बार दामोदर को नागपुर भेज दें और वहां की रिपोर्ट वह आपको और मुझे भेज दे।

मैं आज बम्बई जा रहा हूं। वहां से दक्षिण—मद्रास—जाऊंगा और सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के शुरू में लौटूंगा। लौटते समय वर्धा उत-रूंगा। उस समय आप वहां रहेंगे तो हम दोनों नागपुर चले चलेंगे।

आपको यह पता ही होगा कि ऋषभदासजी ने प्रान्तीय संघ की अध्यक्षता से इस्तीफा दे दिया है। उनके स्थान पर आप किसी अन्य सज्जन की सिफ़ारिश करें तो अच्छा है।

आपका,
अ० वि० ठक्कर

: २५ :

बम्बई, २९-१-३०

मुरब्बी जमनालालजी,

उत्कल कांग्रेस कमेटी के मंत्री महोदय ने जिस एम. एल. सी. के बारे में लिखा था, उन्हें पत्र लिखा है और अस्पृश्यता-निवारण के काम के लिए कितनी ही सूचनाएं दी हैं। हमारा प्रकाशित साहित्य भी भेजा है।

पुण्डलीकजी आपको अच्छा काम दे रहे हैं, यह जानकर गंगाधरराव खूब खुश हुए हैं। उधर के गांवों में आपकी वह परिचय-पत्रिका लेकर घूमेंगे तो अच्छा काम होगा, इसमें मुझे शंका नहीं है।

श्री खेर की डाक्टर अम्बेडकर के साथ एक-दो मर्तबा बातें हुईं। उनका कहना है कि अस्पृश्यता का काम करनेवाले उच्च वर्णीय हिन्दू कार्यकर्त्ताओं की एक छोटी-सी कान्फ्रेंस हो। उसमें उन्हें और उनके साथियों को अस्पृश्यों के नेता प्रतिनिधि की हैसियत से बुलाया जाय और भविष्य में जो कुछ व्यवस्था देश की हो उसमें अस्पृश्यों को न्याय मिलेगा, ऐसा आश्वासन दिया जाय, तो वे अपनी जाति को साथ लेकर कांग्रेस को सहयोग देने के लिए राजी हैं। मैंने कहा, वैसा आश्वासन तो कांग्रेस ने सभी अल्पसंख्यकों को कभी से दिया है। ऐसा करने में कोई नई बात नहीं है। फिर भी ये लोग सच्चे दिल से बात कर रहे हैं और अपनी जाति पर वजन डालकर कांग्रेस का साथ दें तथा अन्त्यज जाति को भी अपने साथ ला सकें तो वैसी परिषद् करने में मुझे कोई खास हर्ज नहीं मालूम होता। मैं एक छोटा-सा ड्राफ्ट तैयार करके खेर को बताऊंगा और वह उन्हें पसन्द हो तो हम दोनों अम्बेडकर को मिलकर बातें करेंगे, ऐसा सोचा है। आपको यह विचार कहांतक पसन्द है, बताइयेगा।

मालवीयजी के बारे में बापूजी ने जो लिखा है उसकी प्रतिलिपि इसके साथ भेजता हूं।[१] इस समय मालवीयजी कांग्रेस के विरुद्ध काम कर रहे हैं, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है। कांग्रेस के मेन्डेट (आदेश) की परवा न करते हुए विधान-सभाओं से चिपके रहने की उन्होंने असेम्बली-वालों से और कौंसिलवालों से अपील की। कम-से-कम १८वीं तारीख तक इस्तीफा न देने का आग्रह किया, और ऐसे प्रस्ताव करवाये। फिर १८वीं को लोगों को इकट्ठा कर व्यवस्थापिका सभाओं को न छोड़ने का आग्रह किया और इस आशय का प्रस्ताव पास किया तथा अब भी वे यही काम सब जगह घूमकर कर रहे हैं। इस विषय में सबूत की जरूरत नहीं है। इस अवस्था में उन्हें पूज्य बापूजी की राय के अनुसार हमारी कमेटी के प्रमुख

---

[१] गांधीजी के पत्र की प्रतिलिपि

साबरमती, २५-१-३०

"भाई श्री आनन्दानन्द,

तुम्हारा पत्र मिला है। मालवीयजी किस प्रकार का आन्दोलन कर रहे हैं, यह मैं नहीं जानता। पर अगर वह कांग्रेस के खिलाफ आन्दोलन करते हों तो अस्पृश्यता-समिति में वह कोई ओहदा नहीं रख सकते, इस विषय में मुझे बिल्कुल शंका नहीं है। मालवीयजी का कांग्रेस-विरोधी भाषण खोजकर जमनालालजी उनको भेजें और पुत्र जिस प्रकार पिता से शंका-निवारण करना चाहता है, उसी प्रकार पूछें। यदि सही हो तो हमारी समिति में उनके रहने के औचित्य के बारे में अपनी शंका का निवारण उनसे मांगें। मालवीयजी को ऐसे प्रश्नों से दुःख नहीं होता और होता भी हो तो उन्हें दबाने की उनमें भारी शक्ति है। मेरी समझ ऐसी थी कि वह कांग्रेस के विरुद्ध तो आन्दोलन नहीं ही करेंगे। इसके बारे में तुरन्त फैसला कर लेने की आवश्यकता है।

बापू के आशीर्वाद।"

का स्थान छोड़ने की प्रार्थना की जाय या नहीं, इस बात को आप सोचें और उचित कार्रवाई कीजियेगा ।[१]

लि.

सेवक स्वामी आनन्द का प्रणाम

: २६ :

बम्बई, ३-२-३०

मुरब्बी जमनालालजी,

आपका पत्र मिला । कल कमाठियों की सभा में बहुत रात तक विचार हुआ और उनकी समिति ने अपने कुल, यानी ८ मन्दिर खोलने का प्रस्ताव किया, जिसका अंग्रेजी श्री सीलम् ने मुझे दिया । उसकी नकल इसके साथ भेजता हूं । आज मैंने आपको तार भेजा है ।

और भी चार-पांच मन्दिर इन लोगों के कब्जे में हैं । उनके बारे में भी यही प्रस्ताव लागू है, लेकिन उन मन्दिरों की मालिकी इस कौमवालों की न होने के कारण हम उनसे पूछ नहीं सकते, इसीलिए उनके पड़ोसियों से, जिनकी मालिकी है, सूचना देकर बाद में वे उन्हें खुला जाहिर करेंगे । मन्दिरों की सारी व्यवस्था इन्हीं लोगों के हाथ में है ।

अब भंसाली वगैरह कौम के ट्रस्टियों से मिलकर हमने प्रयत्न शुरू किये हैं । जो कुछ हो । खेर तथा मैंने मिलकर अम्बेडकर वगैरह के साथ एक परिषद् करने की जो बात लिखी थी उसके बारे में आपकी भेजी हुई चेतावनी ठीक है । उसको ध्यान में रखकर ही हम लोग काम कर रहे हैं । पीछे ये लोग कांग्रेस के विरुद्ध बिगड़कर प्रोपेगैण्डा करें, ऐसा कोई मौका हम इनको नहीं देंगे ।

पुण्डलीकजी की तबीयत कैसी है ? दादा वहां आये हों तो उन्हें मेरा प्रणाम । वहां मन्दिर का उत्सव अच्छी तरह संपन्न हुआ होगा । श्री महादेव-लालजी को प्रणाम ।[२]

लि.

स्वामी आनन्द

१-२ गुजराती से अनूदित

: २७ :

बम्बई, २४-११-३१

मुरब्बी जमनालालजी,

आपकी सूचना के मुताबिक कमिटी के विचार के लिए जो पत्र प्रमुख को भेजना है उस संबंध में अपनी कमिटी की मीटिंग बुलाई गई। विचार हुआ और जो मसविदा निश्चय हुआ उसकी प्रतिलिपि इस पत्र के साथ भेजता हूं। इस पत्र पर वर्किंग कमेटी विचार करेगी तब आप वहां होंगे ही। इसलिए यदि इसके समर्थन में कोई बात स्पष्ट करनी आवश्यक हो तो आप करेंगे ही।

बम्बई प्रान्तिक कमेटीवाले नाराज हुए हैं। उन्हें लगता है कि उनके ऊपर ही सारे देश के आन्दोलन की जिम्मेवारी है, इसलिए नासिकवाले अथवा महाराष्ट्र प्रान्तिक समितिवाले उनका कहा नहीं करते, इस बात पर नाराज हैं। मुरब्बी वल्लभभाई ने पाटिल और नरीमान, दोनों को समझाया है और हमने भी रविवार की कमेटी की मीटिंग में उन्हें बुलाया था। कुछ ठण्डे पड़े हैं।

लि० सेवक
स्वामी आनन्द

: २८ :

बंबई, २८-११-३१

मुरब्बी जमनालालजी,

बंबई प्रांतीय कांग्रेस कमेटी आदि कमेटियों का रुख देखते हुए अपनी कमिटी को समाप्त करने की आपकी सूचना से मैं सहमत हूं। प्रान्तिक समितियों को जागृत करने की दिशा में भरसक प्रयत्न कर चुके हैं और अपनी पद्धति से अभी जो कुछ और करना है करेंगे। बम्बई प्रान्तिक समिति अंत्यजों के साथ खाने वगैरह का आयोजन करती है तो भी मेरा अभिप्राय तो यह है कि यह कार्य प्रादेशिक समिति के क्षेत्र का नहीं है। जिलों में काम करनेवालों की स्थिति इससे बिगड़ सकती है। गुजरात की गायकवाड़ी हद में रियासत ने अलग अंत्यज पाठशालाएं अब से बन्द करके उनके सभी बालकों को सभी

जातिवालों के साथ पढ़ाने का हुक्म दिया। इसके परिणामस्वरूप अछूतों पर कैसे-कैसे जुल्म बढ़ रहे हैं, इसकी कुछ कतरनें मैं इस पत्र के साथ भेजता हूं। बड़े शहरों में बसनेवाले मनमाना कार्यक्रम बनाकर उन्हें गांवों में चलाने का रास्ता खोजते हैं, बल्कि इच्छा करते हैं; पर इससे वे अन्त्यजों की स्थिति अधिक बुरी करते हैं, यह नहीं समझते। सेपरेट एलेक्टोरेट का निर्णय करते समय बापूजी ने यह बात अच्छी तरह समझाई थी। श्री दाण्डेकर को मैं ठीक तरह से समझा दूंगा।

आंकड़े अभीतक जिन प्रान्तों से बिल्कुल नहीं आये हैं, उनको फिर पत्र लिखे गये हैं और जहां से आये हैं उनपर व्यवस्था का काम हो रहा है। मेरा विचार हर प्रान्त पर एक-एक नोट तैयार करने का है, जो बापूजी को दिया जा सके। कुछ आंकड़ों के बारे में चर्चा करनी पड़ेगी—जैसे पीपुल्स सोसायटी के, लाजपतरायजी और श्रद्धानन्दजी के द्वारा स्थापित अनेक मण्डलों के बारे में, जिनके अधिकांश आंकड़े श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन के परिश्रम से आये हैं।[1]

लि.

स्वामी का प्रणाम

: २९ :

पटना, १५-२-३४

मुरब्बी जमनालालजी,

हम तो यहां ऐसे उलझगये हैं कि न तो पत्र लिखने को सांस मिलती है, न कुछ और करने का वक्त। अजीब प्रान्त है। बेचारी जनता ऐसी आफत[2] में पड़ी है कि उससे क्या आशा की जाय। यहां सबकुछ करना पड़ता है। राजेन्द्र-बाबू तबीयत खराब होने पर भी दिन-रात मेहनत कर रहे हैं, लेकिन उनके साथियों में अधिकांश के काम का निबटारा नहीं होता। आपके तथा बापू व सरदार वगैरा के हाथ नीचे रहकर तालीम हासिल किये हुए लोगों के लिए

---

[1] गुजराती से अनूदित [2] बिहार के भूकंप के कारण

यहां कुछ वहुत ही भ्रमोत्पादक लग सकता है। किसीको काम करने की समझ नहीं है। आप यहां थोड़े दिनों के लिए भी आ जायं तो वड़ी मदद मिल सकती है, ऐसा मैं निश्चित रूप में मानता हूं। लेकिन आपको वर्तमान स्थिति में बुलाने की हिम्मत राजेन्द्रवावू करने क्यों लगे ? और विना बुलाये आप आने क्यों लगे ? यह सोचकर ही में बैठा रहा, न मुझे अवतक लिखने की सूझी और न सूचना देने की ही। अगर आप आ सकें तो जरूर आवें। बापू ९ मार्च के बाद आवेंगे। इतनी देर तक राजेन्द्रवावू की इच्छा राह देखने की तो नहीं थी; पर क्या करते। कर्नाटकवालों ने तो महीनों से भारी तैयारी कर रखी थी। वह सव छोड़कर तुरन्त आने के लिए बापू कैसे लिखते ? आपको दिलचस्पी नहीं होगी, यह विचार करके उत्कल की बात मुल्तवी रखी और ९ मार्च को कर्नाटक का दौरा पूरा करके बापू वहां से आवें, ऐसा राजेन्द्रवावू ने विचार किया है और इसके अनुसार लिखनेवाले हैं। इस बीच वह खुद कुर्ग जाकर मिल आवें और सभी कठिनाइयों तथा योजना आदि के बारे में बात कर आवें, ऐसा सोचा था। पर वह अभी सफर करने की हालत में नहीं हैं। कुर्ग जाने और आने में ३ हजार मील का सफर होता है। इसलिए जीवतराम[1] को भेजने का विचार किया है। जीवतराम २०वीं तारीख को तामिलनाड में पूज्य बापू से मिल आयेंगे। आप आने का विचार करें तो जैसे भी होसके, जल्दी आ जायं। राजेन्द्रवावू कल छपरा गये हैं। आज आयेंगे तव मैं बात करूंगा। मकान तो यहां मिलते ही नहीं। जैसा भी टूटा-फूटा मकान उन्हें मिला है, आप आयेंगे तो उसमें आपके ठहरने का इन्तजाम कर लिया जायगा। न होगा तो एकाध तंवू ले लेंगे। धोत्रे, लक्ष्मीदासभाई, बाल, पारनेरकर, पण्डितजी, नाथ सव मिलकर २०-२२ की टोली मुजफ्फरपुर जिले में फैल गई है।

धोत्रे तथा लक्ष्मीदासभाई कल ही मुजफ्फरपुर गये। दोनों दरभंगा, मोतिहारी, सीतामढ़ी वगैरह जाकर तीन-चार दिन में वापस आयेंगे। पण्डित खरेजी, नाथ तथा चार-छः लड़के सीतामढ़ी में जमे हैं। बाल, रावजी-

[1] जीवतराम कृपलानी

भाई, पारनेरकर, सहस्त्रवुद्धे मुजफ्फरपुर में हैं। पारनेरकर तथा सहस्त्रवुद्धे भूकम्प के कारण खराव हुए कुओं की जांच कर रहे हैं। पारनेरकर ईख की फसल नष्ट न हो, इसलिए देसी कोल्हू दिलाने का प्रवन्ध कर रहे हैं। कुल मिलाकर २०-२२ आदमी अपने आये हैं और जिले में फैले हुए हैं। और भी आने को तैयार हैं, लेकिन अभी रोक दिया है। इसलिए कि यहां का काम-काज और उसकी योजना तैयार होजाय तो वुलावें। कमिटी को कम-से-कम एक वर्ष काम करना होगा। सरकारी अधिकारी राजेन्द्रवावू के साथ तो वात करते हैं, लेकिन उससे अधिक कोई सहयोग करें, ऐसा प्रतीत नहीं होता।

भाई श्रीलाल नानीवहन को लेकर वहां महिलाश्रम में आनेवाले थे, सो आगये होंगे। उनकी मां तथा भाई का जी दुखाकर उसे वहां लाये हैं, इसलिए ये लोग जल्दी राजी हो जायं और खर्च वगैरह भेजने लग तवतक उनसे कुछ न मांगा जाय, ऐसा मोहनलाल भट्ट ने मुझे लिखा है। श्रीलाल ने आपसे बात की होगी। इस दिशा में कुछ हो सके तो कीजियेगा। सौ. जानकी-वहन तथा मदनमोहन को प्रणाम।[1]

लि.

स्वामी का प्रणाम

: ३० :

इगतपुरी, ७-३-३६

प्रिय जमनालालजी,

मैं आज सवेरे वासलगांव तथा दोपहर को इगतपुरी उतरा था। भाई शेषमल अभी अस्थिर हैं। विवाह करने का करीब-करीब निश्चय कर चुके हैं। बियाणीजी, पूनमचन्दजी वगैरह के साथ उनका पत्र-व्यवहार चालू है। आपके पास से मार्ग-दर्शन की खास इच्छा रखते हैं। विवाह के बारे में वे योग्य विधवा (निःसन्तान), अथवा यह न हो सके तो कुमारी, अपनी जाति (ओसवाल) में से, खोजने की इच्छा रखते हैं। सार्वजनिक काम में और व्यवसाय के काम में खूब जिम्मेदारी से व्यस्त हो जाना चाहते हैं। थोड़े काम से

१ गुजराती से अनुदित

उनको सन्तोष नहीं मिलेगा। धनिक बनने की इच्छा नहीं, पर काम खूब करने के लिए चाहिए। इस बीच आप बम्बई आवें तो आपसे मिलना चाहते हैं। आपने इन्हें थोड़ा-बहुत आगे बढ़ाया है; अब आप ही इनके जीवन में दिलचस्पी लेकर जैसी मदद हो सके करें, यह इष्ट है। मनुष्य के जीवन में ऐसे समय बहुत आते हैं जब वे ठीक दिशा में जाने के लिए योग्य निर्णय करने पर भी यदि सुपरिणाम प्राप्त न हो तो सारी जिन्दगी के लिए बेकार हो जाते हैं। आपने मुझसे इस नौजवान के बारे में बात की थी, उसके बाद अपने दौरे में मैं एक-दो बार इनसे मिलने का मौका पा सका। आप इन्हें जरूर मार्ग-प्रदर्शन करेंगे, ऐसी आशा है। इनके मन में आपके लिए आदर है; इसलिए ये आपका मार्ग-प्रदर्शन चाहते हैं।[1]

लि. सेवक,
स्वामी आनन्द

: ३१ :

थाना, २६-९-३९

प्रिय जमनालालजी,

जयपुर में आपने अपने धीरज, बुद्धि-कौशल और मधुर स्वभाव के बल पर जो विजय प्राप्त की, उसके लिए बधाई! देशी राज्यों में बापूजी की रीति-नीति को लगे वर्तमान धक्के को देखते हुए आपकी यह सफलता रेगिस्तान में मरुकुञ्ज के समान हैं। इसीलिए हम सबके लिए यह अधिक प्रिय और आदरणीय है। आशा है कि आप बिल्कुल अच्छे होंगे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में मेरा कोई उपयोग हो तो आप मुझे बुलाइयेगा। दर्शकों को आने की मनाही की गई है, इससे मैंने विचार छोड़ दिया था, पर आप इस प्रसंग में मेरा उपयोग समझें तो दो पंक्तियां लिखवा भेजें।[2]

सेवक
स्वामी आनन्द का प्रणाम

१-२ गुजराती से अनूदित

: ३२ :

खिमिसेपुर (फर्रुखाबाद), ३०-६-४१

पूजनीय काकाजी,

सादर सविनय प्रणाम। आपको मालूम होना चाहिए कि ता. २८ को मैं एकाएक फतेहगढ़ जेल से मियाद के पहले ही छोड़ दी गई हूं। मैं ता. ७ फरवरी को गिरफ्तार हुई और ११ फरवरी को मेरा मुकदमा हुआ था। ६ महीने की मेरी सजा थी। छूटने की मेरी ता. १० अगस्त थी। पर इस हिसाब से १ महीना १३ दिन पहले छोड़ी गई।

सुना है कि आप बीमारी के कारण मियाद से पहले छोड़ दिये गए। लिखियें, अब आपकी कैसी तबीयत है और आपको क्या बीमारी थी? फतेहगढ़ सी. क्लास में मैं थी और फतेहगढ़ सी. क्लास में ही मेरे पति भी हैं। इस समय मैं आपको जेल की कुछ बातें नहीं लिखूंगी, क्योंकि आप कमजोर होंगे, परन्तु मेरे चार प्रश्न हैं, उन्हें जरूर हल करके भेजियेगा।

१. मियाद के पहले छोड़ी गई हूं तब भी क्या सत्याग्रह करने के लिए नोटिस देना चाहिए?

२. गिरफ्तार न की जाऊं तो क्या काम करूं?

३. अगर गिरफ्तार न की गई तो क्या अकेली घूमूं, क्योंकि भैरवसिंहजी तो जेल में ही हैं।

४. जेल में जब हमारी रोटियों में और दाल में कीड़े-मकोड़े, कनखजूरे आदि निकलते हैं, और हम जेल-अधिकारियों से शिकायत करते हैं, तब वे खूनी कैदियों को पीटते हैं। ऐसी हालत में क्या करें, शिकायत करें या नहीं? परेशानी तो यह है कि कीड़े-मकोड़े खाये नहीं जाते, करें क्या? परन्तु कैदियों का इसमें कसूर नहीं होता। बिना छना आटा, मिट्टी, भूसी, कचरा आदि मिला होता है, बेचारे जैसा मिलता है वैसा ही बना देते हैं।

अपना हाल लिखियेगा। आश्रम में बुआजी से तथा अन्य सबसे मेरा

मिला प्रणाम कहियेगा। पत्र का उत्तर शीघ्र दीजियेगा।

आपकी पुत्री,
उर्मिला (राठौर)

: ३३

वर्धा, १५-११-३१

प्रिय एल्विन,

मुझे आपका ११ तारीख का पत्र मिला। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि वेतूल के आसपास की जगह आपको आपके भावी कामकाज के लिए केन्द्र के रूप में जंच गई है। इसके कारण भी सवल हैं। मुझे निश्चय है कि होशंगाबाद से लौटने के बाद आप अपने लिए अनुकूल जगह का चुनाव भी कर लेंगे।

इस समय अगर मैं उधर आता हूं तो इससे सरकारी क्षेत्रों तथा पब्लिक में निश्चय ही हलचल पैदा होगी। इसलिए मैं आना नहीं चाहूंगा। पर जब आप ठीक जगह का चुनाव कर लेंगे तो आश्रम के लिए जमीन खरीदने से पहले, अगर संभव हुआ तो, मैं उसे देख लेना चाहूंगा।

अब मैं करीब एक महीने तक तन्दुरुस्ती के लिए वर्धा ठहरूंगा। डाक्टरों ने मुझे सलाह दी है कि मैं पूरा आराम लूं, नहीं तो सिर के पिछले भाग की नस के फूट जाने से उत्पन्न होनेवाली घातक उलझनों का खतरा है। आपने जो अन्तिम बात लिखी है, उसे पढ़कर मैं ज़रा चिन्तित हुआ। हमारे सम्बन्ध भाईचारे की किस्म के हैं।

आप मेरे भाई के रूप में होंगे। इसके अलावा आप 'पिता' (फ़ादर) रह चुके हैं, इसलिए हममें भाई-भाई का रिश्ता ही रहने दीजिये।

आशा है, आप शीघ्र पत्र लिखेंगे।[1]

आपका,
जमनालाल बजाज

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

: ३४ :

करंजिया, १६-१-३३

प्रिय मित्र,

मैं दो महीने से किसीको पत्र नहीं लिख सका, पर जब आप जानेंगे कि मैं किस काम में लगा था तो समझ जायंगे। भाई श्यामराव को पूना में इलाज के लिए छोड़कर मैं नवम्बर के मध्य में करंजिया आगया। यहां आकर मैंने पहाड़ियों की तराई में गोंड़-परिवार से मेल-जोल का प्रयत्न किया और मैं इधर-उधर पहाड़ की तराई में भी घूमता रहा। मुझे यहां अनोखे अनुभव हुए। मेरे साथ मेरा बोझ ढोनेवाला कावड़ लेकर चलने में काफी थक गया था। मैंने सहसा देखा कि शाम के सूर्यास्त में बोझ ढोनेवाले उस व्यक्ति के हाथ कावड़ के बांस पर फैले हुए थे और वह सूली का दृश्य उपस्थित कर रहा था, मानो वह सारे संसार के उन लोगों के आराम के बोझ से दबा जा रहा हो, जिनके पास आवश्यकता से अधिक है।

करंजिया आकर मैंने आश्रम का निर्माण शुरू कर दिया और पन्द्रह दिन में वह तैयार भी होगया। कुल तीन सप्ताह में आश्रम का पूरा रूप सामने आगया, और सब सामान व्यवस्थित करने में एक पखवारा और लग गया। आश्रम में अनेक झोंपड़ियां बनाई गई हैं, उनमें से अतिथि-निवास को 'मित्रालय', औषधालय को 'प्रेमायतन', पुस्तकालय को 'गान्धी-ज्ञान-मंदिर' और भोजनालय को 'जगनालाल भवन' नाम दे दिया है। आश्रम से सटी हुई पहाड़ियों पर आराम और शान्ति के लिए जो कुटिया बनाई गई है; उसका नाम रखा है—'शांति-निवास'। यहां ठहरनेवालों के लिए मौन धारण करना अति आवश्यक है। 'बाल-मंदिर' और 'गौशाला' के अलावा सहयोगियों के लिए भी दो झोंपड़े बना दिये हैं। फ्रांसिस का एक छोटा-सा गिरजाघर और मकानवाला जो मूल आश्रम था, उसमें मैं और साथी श्यामराव रह रहे हैं। अब हमने इन सबको 'दीनबन्धु एण्ड्रूज आश्रम' नाम दे दिया है। संत फ्रांसिस के सिद्धान्तों के

अनुकूल पड़नेवाला सर्वोत्तम नाम अगर कोई हो सकता है तो वह एण्ड्रूज़ का ही है ।

यहां हम केवल चार व्यक्ति रहते हैं और प्रातः-शाम प्रकृति का सौन्दर्य लूटते हुए भगवान की प्रार्थना करते हैं। श्यामराव बड़े दिन के पहले लौट आया है और अब वह अच्छा है । वह आगरा विश्वविद्यालय का स्नातक है और अब उसका दिमाग ठीक है। श्रीकांत हमारा पहला हिन्दू भाई है जो आठ महीने साबरमती रह आया है। छः महीने जेल में रहने के बाद वह हमारी राय से ही दक्षिणामूर्ति बालमन्दिर, भावनगर में रहा है । मैं ऐसे ही और हिन्दुओं को चाहता हूं, जिनमें सहिष्णुता और प्रेम हो । यहां का जलवायु अच्छा है और मैं गहरे बुखार से सिर्फ एक हफ्ते में अच्छा होगया, जबकि पूना और अहमदाबाद में उसके लिए महीनों लग जाते । जहां-कहीं भी गोंड़ बसते हैं, वहां मलेरिया जरूर है । इसलिए इन अभागों के लिए काम करनेवालों को भी मलेरिया का खतरा उठाना पड़ता है । लेकिन यहां उतना खतरा नहीं है ।

गत तीन हफ्तों से आश्रम पर जंगली जानवरों का हमला हो रहा है । गत सप्ताह एक लक्कड़बघा, दो बघेरे और एक भालू तथा एक गीदड़ हमारे आश्रम में एक ही रात को आये थे । दूसरी रात दो भालू बहुत बुरी तरह से लड़े और इस तरह हमारी शान्ति भंग की । हम रात को घण्टों जागते रहे । यहां सांपों की भी कमी नहीं है, न बिच्छुओं की । इसी तरह बन्दर, हिरन, मोर तथा कितने ही रंग-बिरंगे पक्षी भी यहां दिखाई देते हैं। हमारे दवाखाने की पहले की अपेक्षा अब कम आवश्यकता पड़ने लगी है, जो मेरी राय में एक शुभ चिह्न है । हमारा वास्तविक कार्य शिक्षा का होना चाहिए परन्तु रोगों की रुकावट का काम भी होना चाहिए । गोंड लोग अपना इलाज आप कर लेते हैं । यहांतक कि जंगली जानवरों से काटे जाने, यानी चोट पहुंचने पर भी वे पुल्टिस आदि लगाकर अपना इलाज खुद कर लेते हैं ।

आज हमारा मोन्टिसरी स्कूल खुल गया है और श्रीकांत, श्यामराव तथा सिस्टर मेरी की मदद से यह काम सुचारु रूप से चला रहे हैं । बच्चे यहां नहलाये जाने पर बहुत चिल्लाते हैं। बड़े लड़कों के लिए भी स्कूल खोलने का

प्रयत्न हो रहा है। हालांकि इसमें बड़ी कठिनाई है, क्योंकि यहां ५ वर्ष की उम्र से ही बच्चे मां-बाप को काम में मदद देने लगते हैं। आशा है कि कुछ समय के प्रयत्नों के बाद भील-सेवा-मण्डल के ढंग पर गोंड़ बालकों की शिक्षा का भी प्रबन्ध हो जायगा। खादी का काम श्रीकांत के हाथ में है, किन्तु अभी तक इस दिशा में अधिक सफलता नहीं मिली है। मेरा खयाल है कि इन गांवों में खादी का काम काफी विकसित हो सकता है और यह काम करके यहां के गरीब स्वावलम्बी बन सकते हैं'।

इनसब कामों में रुपया बहुत खर्च होता है, लेकिन हमारे साधन अल्प हैं। आश्रम बनाने में ही ६०० रुपये खर्च हुए। लेकिन इसके लिए हम रुपयों की अपील नहीं करते। और जो लोग हमारे आदर्शों से सहमत नहीं हैं, हम उनसे रुपया नहीं लेते। और हमने इस तरह आये ४५० रुपये वापस भी कर दिये हैं। हमें हिन्दी की किताबों की आवश्यकता है जिससे वे गांववालों को पढ़ने के लिए दी जा सकें। इस प्रकार प्रचार में बड़ी मदद मिलेगी। आप जो कुछ पुस्तकें और पत्रिकाएं दान में देंगे, उसका बहुत अच्छा उपयोग होगा।

आपका कोई समाचार नहीं मिला, यह स्वाभाविक ही है। हम यहां समय से पीछे पड़ गये हैं। समाचार एक सप्ताह बाद मिलते हैं। 'फ्री प्रेस' और 'बम्बई क्रॉनिकल' पत्र यहां नहीं आते। यहां उन पत्रों का बड़ा मूल्य है जो मित्रों द्वारा भेजे जाते हैं। आप यह याद रखें कि आपमें से जिन लोगों को मैं पत्र भेजता हूं उनको विचारों और प्रार्थनाओं में भी याद करता हूं।

अगले पत्र में मैं आपको आश्रम का अधिक विवरण भेज सकूंगा।

आपको फिर लिख दूं कि यह स्थान स्वास्थ्यकर है और कुछ मलेरिया की तकलीफ के अलावा सभी दृष्टि से अच्छा है। हम केवल शाकाहारी भोजन करते हैं। मैं ही ऐसा हूं जो अण्डे की बनी चीज भी दिन में एक बार खा लेता हूं, अन्यथा मैं भी शाकाहारी ही हूं। हम प्रकृति के इतने निकट होगये हैं कि

किसी भी जीवधारी को मारना हमारे लिए असह्य हो गया है।[1]

सबको प्रेम।

आपका प्रिय मित्र
एल्विन[2]

---

[1] अंग्रजी से अनूदित

[2] श्री महादेव देसाई के नाम लिखे अपने एक पत्र में श्री वेरियर एल्विन ने स्व० जमनालालजी के संबंध में नीचे लिखे उद्‌गार प्रकट किये थे :

पिछले कुछ सालों में जमनालालजी को बहुत ही कम देख पाया था। हालांकि एक वक्त ऐसा था, जब हम एक-दूसरे के काफी नजदीक थे। ऐसा कोई समय मुझे याद नहीं पड़ता जब मैंने प्रेम और कृतज्ञता के साथ उनका स्मरण न किया हो।

दस साल पहले जब मैं धूलिया जेल में जमनालालजी से मिलने गया और उन्हें 'सी' क्लास में रहते देखा तो मुझे इतना आघात पहुंचा कि मैंने उसी समय प्रतिज्ञा की कि जबतक हमारे देश में ये बातें होती रहती हैं मैं नंगे पैर ही घूमूंगा।

पहले वर्धा में जमनालालजी के छोटे-से सीधे-सादे घर में उनके मेहमान बनकर रहना एक अद्‌भुत चीज थी। अपने जीवन में जमनालालजी ने कभी सादगी का त्याग नहीं किया। बाद में जब वर्धा ने राजधानी का रूप ले लिया तो सहज ही वहां बहुत-सी नई इमारतें और संस्थाएं खड़ी होगईं, और जो थीं वे भर गईं। मगर १९३१-३२ में तो उनके घर में साधु की कुटिया की तरह शांति और सादगी का वातावरण मानो मुंह से बोलता था। ...

जमनालालजी में कई ऐसे गुण थे जो पश्चिमवालों को खूब पसंद आते। उनकी सादगी और स्वाभिमान, उनकी सच्चाई और स्पष्टवादिता, और जीवन के प्रति क्वेकरों-सी उनकी वृत्ति पश्चिमवालों पर अपना प्रभाव डाले बिना न रहती। ..

उनके जैसे धनी आदमी में सत्य का इतना आग्रह क्वचित् ही पाया जाता है। उनके मुंह से निकलनेवाले प्रत्येक शब्द को आप जब चाहें कसौटी

: ३५ :

बम्बई, २९-१२-३०

प्रिय जमनालालजी,

यरवदा-मंदिर छोड़े हुए आज ठीक एक महीना हुआ। पूज्य श्री बापूजी के साथ मैं लगभग साढ़े पांच महीने रहा। इतने दिनों में बापूजी से जो कुछ देखा और समझ लिया वह गुजरात, काठियावाड़, बम्बई, महाराष्ट्र और कर्नाटक के कार्यकर्ताओं को यथामति समझाया। अब इसीका सारांश अखबारों में देना प्रारम्भ करनेवाला हूं। कुछ दिन पहले अहमदाबाद में रणछोड़भाई मिले थे। उनसे आपके समाचार मिले। कमलनयन, गुलाबचन्द, प्रह्लाद तीनों जेल में थे, इस कारण उनसे मुलाकात न हो सकी।

आप पूज्य श्री बापूजी की तवीयत के संबंध में जानने के लिए विशेष उत्सुक हैं। इसलिए उसीके बारे में पहले लिखता हूं। सामान्यतः बापूजी की तवीयत अच्छी है। उनकी सेवा में एक कैदी महाराष्ट्रीय ब्राह्मण रसोइया दिया हुआ है। उस कैदी के हाथ में और पैर में संधिवात था। बापूजी ने उससे उपवास कराकर और आहार में परिवर्तन करके उसे अच्छा किया। मुश्किल से लंगड़ाते-लंगड़ाते चलनेवाला आदमी अब अच्छी तरह दौड़ता है। जेल के डाक्टर ने उसे छः महीने दवा दी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ था। उस रसोइये से मालूम हुआ कि मेरे यरवदा जाने के पहले बापूजी

पर पूरा उतार सकते थे। आपको विश्वास रहता था कि उनकी भावुकता में कोई परिवर्तन न होगा और उनके आदर्श में कोई कमी न आयेगी। मैं उनको दिल से प्यार करता था, और आज जब वह चले गये हैं मैं अपने जीवन में एक बड़े अभाव का अनुभव कर रहा हूं हालांकि पिछले कुछ सालों में मैंने शायद ही उन्हें देखा हो। लोगों को और देश की जनता को उनके समान शुद्ध हृदय, प्रेमी, उदार और व्यापक सहानुभूतिवाले व्यक्ति का अभाव कितना खटक रहा होगा।

(हरिजन-सेवक, २९-३-४२)

अकेले थे तब चाव से खाते नहीं थे, घूमने में भी उत्साह नहीं था। चरखे की गति बढ़ाने की कोशिश में सारा दिन चिंता में गुजरता था। मेरे वहां जाने पर उनके लिए मैं एक नया उद्योग बन गया। मेरी तबीयत, मेरा आहार, मेरी अनियंत्रितता और अनंत विषयों पर के मेरे अनंत प्रश्न इन सबके कारण उनके लिए काफी अच्छा मनोरंजन रहा। उन्होंने मुझे धुनाई सिखाई, सिंगर की मशीन पर सिलाई का काम सिखाया। आहार-शास्त्र की मीमांसा तो हमेशा चलती ही थी और अनेक विषयों पर चर्चा होती थी। सुबह-शाम घूमते समय अगर मैं कोई सवाल न उठाता तो बापूजी घंटों तक चरखे के विषय पर बोलते रहते। इस विषय पर बोलते वह कभी थकते ही नहीं।

जाते ही मैंने देख लिया कि बापूजी नींद कम लेते हैं। अनुरोध करके उन्हें सताकर अधिक नींद लेने के लिए मैंने वाध्य किया। उससे उनकी तबीयत में काफी परिवर्तन हुआ। चरखा कातते-कातते थककर चूर हो जाते थ। वह हालत सुधरी। अब शीतकाल प्रारम्भ होने के कारण उन्होंने नींद कम की है। लेकिन अब चिंता नहीं है। मैं उन्हें छोड़कर आया तब उनका कार्यक्रम नीचे के अनुसार था, अब भी वही होगा।

सवेरे ४ बजे उठना। ४-२० पर प्रार्थना। प्रार्थना के पहले कुछ मिनट मेरी राह देखते, गीता-विषयक कोई किताब पढ़ते। प्रार्थना के पश्चात् साढ़े पांच के बाद पत्र-लेखन। हफ्ते में छः दिन पत्र-लेखन चलता है। मंगल के दिन बापूजी का पत्र आश्रम के नाम रवाना होता है और आश्रम की तरफ के पत्र बुधवार की शाम को या गुरुवार को दोपहर में बापूजी को मिलते हैं।

सुबह का घूमना, छः बजे नाश्ता। उसी समय बकरी माता अपने दो बच्चों को साथ लेकर आती हैं। उनका दूध लेकर उसमें दही का थोड़ा-सा स्पर्श डालकर वह जमाया हुआ दूध रखा जाता है। दही २४ से ३६ घंटे का जमाया हुआ लेते थे। जमे हुए दही में सोडा बाईकार्ब डालकर उसका खट्टापन मिटा देते हैं और इस प्रकार का दही लेते हैं। आजकल कब्ज (कोष्ठबद्धता) से बचन के लिए दूध-दही छोड़ दिया है। दही जमाकर बापूजी कातने के लिए

बैठते हैं। ८-८।। तक कताई पूरी हो जाने पर फिर धुनाई करते हैं। आधा-पौन घंटा धुनकर पूनियां तैयार करके फिर से कातन बैठते हैं। एक दिन छोड़कर हजाम आता है, उसके लिए २० मिनट खर्च होते हैं।

सुपरिटेंडेंट, रोज सुबह ८-७ मिनट के लिए आया करते हैं। डि. मजिस्ट्रेट महीने में एक बार आते हैं। डाक्टर कर्नल स्टील पंद्रह दिन में एक बार तबीयत देखकर और आहार-शास्त्र के एक-दो पाठ सिखाकर जाता है। १०।। बजे बापूजी नहाने जाते हैं। स्नान गरम पानी का होता है। मैं गया, उसके पहले उन्होंने ठंडे पानी का स्नान प्रारम्भ किया था। लेकिन निपाणी में जैसी हालत हुई थी, वैसा अनुभव होने के कारण उन्होंने वह प्रयोग छोड़ दिया। ठीक ११ बजे दोपहर के ख़ाने को बैठते हैं। उनके पत्र पर से मालूम होता है कि उनका इस समय का आहार उबाली हुई सब्जी, जेल की भाखरी (बाजरा या जवार) और १५।२० बादाम हैं।

उन्हें इसी समय अखबार दिये जाते हैं। 'क्रॉनिकल' व बम्बई का 'टाइम्स' मिलते हैं। मेरे आग्रह से तीसरा मद्रास का 'हिन्दू' अब मिलने लगा है। इनके अलावा 'माडर्न रिव्यू', 'इंडियन रिव्यू', 'इंडियन सोशियल रिफार्मर', 'इलस्ट्रेटेड टाइम्स' इतने अखबार और मिलते हैं। अहमदाबाद का 'कुमार' भी चालू कर दिया है, क्योंकि उसमें मेरे बचपन के अनुभव आते हैं। अंबालालभाई के पास से 'इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज', 'न्यूज़ स्पीकर ग्राफिक' वगैरा चित्रों के मासिक बीच-बीच में आते हैं। उनका उपयोग यहां के गोरे कैदी करते हैं। बाकी तीन दैनिक पत्र ध्यान से पढ़ते हैं और सारी हकीकत जानकारी प्राप्त करते हैं। भोजन के बाद थोड़ा चरखा कातकर फिर सो जाते हैं। १।। बजे कागजी खट्टे नींबू का रस और सोडा बाईकार्ब मिलाकर जो लेमोनेड बनता है वह लेते हैं और फिर से कातना शुरू करते हैं। इतना कातने के लिए पहले ५-६ घंटे लगते थे। अब २-२।। घंटे में पूरा करते हैं। खपरैल के टुकड़े इकट्ठा करके, घिसकर और उसमें बांस की सलाइयां स्वयं तैयार करके उन्होंने बहुत-सी तकलियां तैयार की हैं। पहले १५-२० मिनट तकली पर कातते थे। अब

बालकोवा की सूचना के अनुसार बहुत अधिक समय देते हैं। लगभग ८-९॥ घंटे देते होंगे। मेरे खयाल से इससे उन्हें कुछ थकान आती है। तकली पर घंटे में ६० तार कातते हैं। लेकिन १०० तक जाने का उनका आग्रह है। शाम का भोजन ठीक पांच बजे होता है। फिर से बकरी माता दर्शन देती हैं और बापूजी दही जमाकर और अन्य छोटे-बड़े काम करके घूमने की तैयारी करते हैं। सात बजे फिर शाम की प्रार्थना के लिए बैठते हैं। आश्रम की प्रार्थना ७॥ की थी, वह शीतकाल के लिए ७ की कर दी है। वही फेरफार यरवदा-मंदिर में भी किया। प्रार्थना के बाद रोज-निशी लिखकर मीराबहन के लिए भजनावली का अंग्रेजी में भाषांतर लिखते थे। उसके बाद फिर से पत्र लिखते हैं। ठीक ९ बजे कलम नीचे रखकर शौच जाते हैं और ९॥ के करीब सो जाते हैं। रात का सोना आंगन में लोहे की खटिया पर बिल्कुल खुले में होता है। ओढ़ने के लिए भरपूर लेते हैं। ठंडी कितनी भी हो, फिर भी छप्पर के नीचे सोना पसंद नहीं करते। उनका कहना है कि सूर्य-प्रकाश जिस प्रकार प्राणदायक है उसी प्रकार तारा-प्रकाश भी खास आरोग्यदायक और स्फूर्तिप्रद है। मैंने भी उनकी ही तरह बाहर सोना शुरू किया है। लेकिन मैंने ओढ़ने के लिए आवश्यकता से अधिक न लेने का निश्चय किया है।

बापूजी का वजन मैं था उस समय १०४ तक बढ़ गया था। मैं वहां से निकला उस समय दूध छोड़ने के कारण १०१ हो गया था। बादाम लेना शुरू कर देने के बाद से १॥ रतल और बढ़ गया है, ऐसा उनके परसों के पत्र से मालूम हुआ।

चरखे के संबंध में गांडीव-चरखा, जीवन-चक्र और बारडोली-चरखा इन तीनों के उत्तम गुणों का मिश्रण करके उन्होंने नया चरखा बनाया है। रुपये-डेढ़ रुपये में बनता है। बहुत आराम से चलता है। काम काफी देता है। मधुर बोलता है और दीवार पर आसानी से टांगा जाता है। बापूजी के कमरे में चित्र या फोटो नहीं है, तरह-तरह के चरखे दीवार को सुशोभित करते हैं। एक अंग्रेज कैदी बढ़िया कारीगर है। बापूजी के कहे अनुसार काम

कर देता हैं। स्वयं चोरी-चोरी तकली चलाता है। बापूजी उसे दूध, सब्जी वगैरा देते हैं। पहले बापूजी को 'मिस्टर गांधी' कहता था, अब पापा या बापा कहता ह। उनके इर्द-गिर्द बिल्ली के समान नाचता रहता है। बहुत धूर्त है। नकली सिक्कों के अपराध में उसे करांची में सजा हुई थी। आदमी रसिक होने के कारण यूरोपियन वार्ड में फूलझाड़ों की सुन्दर क्यारियां उसने तैयार की हैं। फूलों का रंग, पौधों की ऊंचाई और वर्ष के मौसम का मेल साधने में बहुत कुशल है। मोतीलालजी यरवदा आये, उस समय ५-७ दिन उसने इतनी अच्छी रसोई बनाई कि मोतीलालजी ने खुशी से १०० रुपये उसे इनाम दिये। इतना सब होने पर भी नमूनेदार अंग्रेज है। बहुत निष्ठा से बरतता है।

बापूजी बिल्कुल प्रसन्न रहते हैं। देश की जागृति के कारण उन्हें संतोष है। खास करके राष्ट्र ने अहिंसा का सुन्दर पालन किया, इस बात का उन्हें संतोष है। इससे अधिक आपको नहीं लिखता, क्योंकि जेल-नियमों का उल्लंघन होगा।

पांच दिन से मैं बम्बई में ही हूं। राजेन्द्रबाबू कल जायंगे। मैं भी कल गंगाधररावजी से सरदार-गृह में मिलकर अहमदाबाद जानेवाला हूं। शंकरलालजी बुधवार तक यहां रहनेवाले हैं। अंबालाल साराभाई वापस कब जायंगे, मालूम नहीं पड़ा। शायद स्वामी जानते होंगे। कृष्णदास का यशवंतरावजी को कलकत्ता से पत्र था कि उनका अब समझौता होगया है।

मेरी तबीयत अब बिल्कुल अच्छी है। यरवदा जाकर यह एक बड़ा फायदा हुआ। आजकल रोज सूरजीभाई के यहां से गाय की छाछ पीकर आता हूं। गाय का घी भी वही भेजते हैं। यह पत्र लिखने में शाम का समय व्यतीत हुआ, इसलिए सातवलेकरजी के साथ अब्बाससाहब से मिलने नहीं जा सका। चि. शंकर यहां मेरे साथ है। चि. बाल तो शामळभाई और गंगाबहन के साथ है। आसपास के लोगों को उसके बारे में संतोष है। सुरेन्द्र और माधवजी कराड़ी में नमक-सत्याग्रह करते पकड़े गये, यह तो आपको मालूम

हुआ ही होगा। रामदासभाई भी वहीं पकड़े गये। पूज्य बा सूरत और खेड़ा जिले में घूम रही हैं। बहुत थक गई हैं। बापूजी के कहे अनुसार मैं विद्यापीठ में खादी का ही काम विशेष करनेवाला हूं, अर्थात् जबतक बाहर रहना मुमकिन हो तबतक। सौ० गोमती बहन परसों मिली थीं। उनकी तबीयत अच्छी है। नीलकंठ भी आज मिला। नाथजी भी यहीं कहीं रहते हैं। कुछ दिन पहले डा० रजब अली मिले थे। उन्होंने बापूजी के आहार के संबंध में एक चिट्ठी मेरे अनुरोध से लिखी है।

मेरे खयाल से आपकी इच्छा के अनुसार विस्तार से सारी जानकारी आपको दी है। अब आपके पास से भी ऐसे ही विस्तृत पत्र की अपेक्षा रख सकता हूं न? आपको सुपरिटेंडेंट के द्वारा नरहरिभाई, किशोरलालभाई, गोकुलभाई, रमणीकभाई, रविशंकरजी, मोहनलाल पंड्या आदि सबको सप्रेम वन्देमातरम् जताने की तकलीफ देता हूं। कांती गांधी कापेराव के साथ छूटा या नहीं? निफाडकर के सप्रेम वंदेमातरम्।

काका के सप्रेम वंदेमातरम्

: ३६ :

गुजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद, १५-१२-३१

प्रिय जमनालालजी,

पूज्य गंगाधरराव से ज्ञात हुआ कि अभी तक आपकी तबीयत नरम ही है। आप तो कभी लिखते ही नहीं।

आपकी आज्ञानुसार मैं पुष्कर हो आया। हरिभाऊजी ने सबोंको संभालकर काम करने की नीति ग्रहण की है। ब्यावर के पुराने झगड़े का समाधान हो चुका है और घीसूलालजी वहां के कांग्रेस के प्रमुख हुए हैं। मेरी नजर में घीसूलालजी प्रकृति के बालक हैं। अभी तक तनिक भी संस्कारिता ग्रहण नहीं कर सके हैं। राग-द्वेष में प्राकृतिक स्वभाव के ही वश हो जाते हैं। हरिभाऊ की इच्छा है कि वहांपर अब समझौता होगया है तब

उसको पूर्ण करने के लिए उनका (घीसूलालजी का) तीन हजार का कर्जा आप मुआफ कर दें। योंभी पैसे आनेवाले नहीं हैं। हरिभाऊ के और मेरे प्रयास से समझौता हुआ है। ऐसे मौके पर आप कर्जा छोड़ देंगे तो सारा वातावरण स्वच्छ हो जायगा। कर्जा के रुपये वापस देने की असमर्थता बतानेवाला कागज हरिभाऊ स्वयं लिखकर आपके पास भेज देंगे।

प्रभुदास थोड़े दिन यहांपर आया था। अब अपने पिता के पास गया है। फरवरी तक यहां शायद रहनेवाला है। कमलनयन के खत कभी-कभी आते हैं।

ब्रजकृष्णजी (दिल्लीवाले) की तरफ से एक विद्यार्थी यहां आया है। सम्भव है, आपकी स्कॉलरशिप में से उसको मदद देनी पड़े। लड़का घर का ठीक है, किन्तु पिता अनुकूल नहीं है। अनुकूल करने की कोशिश हो रही है।

काका कालेलकर का सादर वन्देमातरम्

: ३७ :

नन्दी दुर्ग,
बंगलौर, २८-५-३६

प्रिय जमनालालजी,

आपका ता. २५-५ का पत्र मिला। वियोगीजी, हरिभाऊजी और काशीनाथजी का खयाल हम नहीं कर सकते हैं। अब मेरी नजर में मद्रास के सत्यनारायण हैं। उनका हिन्दी पर काबू बहुत अच्छा है, क्योंकि उनमें शक्ति खूब है। महत्त्वाकांक्षा कुछ कम नहीं है। मद्रास में वह ही अण्णा का काम बहुत-कुछ कर डालते हैं। कम-से-कम एक-दो या तीन वर्ष के लिए उन्हें ले जाना अच्छा होगा। वर्धा में रहकर उनमें जो स्वभाव-दोष हैं वे भी कम होंगे। अण्णा जून के प्रथम सप्ताह में पू. बापूजी को मिलने मद्रास से बंगलौर आयेंगे। उनसे बातचीत करके आपको लिखूंगा। पू. बापूजी की राय भी लूंगा।

बंगलौर में कन्हैयालाल मुंशी भी आयेंगे। तब 'हंस' के बारे में निश्चय होगा। 'हंस' के लिए मुझे अपना कार्यालय वर्धा में ही रखना होगा। कार्यालय, पुस्तकालय, कर्मचारी (एक या दो) वर्धा में रहेंगे। मेरा विचार बोरगांव में ही रहने का था। किन्तु अगर बाबा सा० देशमुख बगीचा बेंच देंगे तो बोरगांव छोड़ना होगा। आज पू० बापूजी से बातचीत की। मेरा प्रस्ताव था कि मैं सेगांव स्वतंत्र रूप से या बापूजी के साथ रहूं और रोज वर्धा आकर आफिस का काम करूं। पू० बापूजी इस प्रस्ताव के विरुद्ध नहीं हैं। वरोड़ा रहूं तो भी उन्हें पसन्द है। मैंने कहा कि सेगांव अगर न रह सका तो मैं वरोड़ा पसन्द न करके महिलाश्रम के जितना नजदीक हो सके, रहना पसन्द करूंगा, जिससे महिलाश्रम की तरफ का मेरा कर्त्तव्य कुछ अधिक पालन कर सकूंगा। अब आप सोचें कि मेरे लिए क्या व्यवस्था करनी है। बापूजी से सुना कि श्री नायकम् मारवाड़ी विद्यालय के प्रिंसिपल नियुक्त हो चुके हैं। अभिनन्दनीय है। वह और उनकी पत्नी दोनों की हिन्दी-प्रचार और 'हंस' के लिए काफी मदद होगी और मारवाड़ी हाईस्कूल में हिन्दी का अध्ययन भी अच्छा होगा। हिन्दी विद्यापीठ का वातावरण धीमे-धीमे ठीक हो रहा है। चि० बाळ बम्बई में ही है। गोपालराव कुलकर्णी के साथ रहता है और किसी लॉज में भोजन करता है। ता० १ के बाद अपने होस्टल में रहने जायगा।

काका का वन्देमातरम्

: ३८ :

११-७-३६

प्रिय जमनालालजी,

पू० गंगाधरराव का कल जो पत्र आया है वह आपको देखने के लिए भेजता हूं। गंगाधरराव के पत्र का क्या मतलब निकाला जाय? उन्हें यह उत्साह है कि हुदली में गांधी सेवा संघ का सम्मेलन किया जाय। इससे पूज्य गांधीजी को कष्ट होगा और यह काम सच्चे मन से नहीं होगा, इस भय से उनका उत्साह दब गया है, इसलिए हुदली में सम्मेलन करने के बारे

में क्या किया जाय ? उनके पत्र से आप क्या परिणाम निकालते हैं ?

दूसरी बात यह है कि आज गंगाधरराव को क्या परामर्श देना चाहिए। मेरी अपेक्षा आप सारी परिस्थिति अधिक अच्छी तरह जानते हैं। आपका उत्तर पाकर मैं अपना अभिप्राय निश्चित करूंगा। कुमरी में सम्मेलन सफल रूप से हो सकेगा। पूज्य बापूजी पर सफर के कष्ट का बोझ डालना ठीक होगा या नहीं, इसका ही मुख्य विचार करना है।

भारतीय साहित्य परिषद् और 'हंस' कार्यालय एवं हिन्दी प्रचार समिति का दफ्तर कहां रखा जाय, इसका निर्णय आप कर लें तो आगे का रास्ता दिखाई देगा। स्थान का निर्णय हो जाने के बाद पण्डित हृषिकेश शर्मा काम शुरू करने के लिए आयेंगे। महाराष्ट्र में हिन्दी-प्रचार के संबंध में मेरी यह कल्पना है कि लोगों को उसका महत्व समझाकर शिक्षण-वर्ग और वाचन वर्ग को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। अगर कोई शिक्षक के रूप में आगे आता है तो उसे अमुक समय के अन्दर प्रयाग की अथवा मद्रास की अमुक परीक्षा पास करनी चाहिए, ऐसा आग्रह होना चाहिए। जहां स्थानीय वर्ग शुरू हो वहां हिन्दी-शिक्षकों की तनख्वाह का १/३ वहां के शुल्क में मिलाकर बाकी १/३ स्थानीय लोगों से चन्दे के रूप में वसूल किया जाय, और पहले वर्ष में शेष १/३ समिति की ओर से देकर काम शुरू करना चाहिए। अवैतनिक संगठनकर्ता को राह-खर्च मिलना चाहिए। भालचन्द आप्टे की जानकारी आपको है ही। उनके द्वारा यह काम वहां शुरू करना संभव है। उन्हें पचास रुपये मासिक मिलने से भी उनके परिवार का, जिसमें कि एक स्त्री और एक छोटा बच्चा है, खर्च चल जायगा। आप्टे को हिन्दी का ज्ञान और प्रचार का अनुभव भी है।

यदि हम महाराष्ट्र में घूमकर पैसे की स्थानीय मदद एकत्र करने-वाले हों तो यह बहुत अच्छा होगा। उस दशा में अपने इस दौरे में पैसे एकत्र करने का दुर्बल प्रयत्न करके मेरे लिए काम बिगाड़ देने का कोई अर्थ नहीं होगा। किन्तु यदि आपका यह खयाल हो कि मुझे ही यह प्रयत्न करना चाहिए तो मैं यह निष्काम कर्म करने के लिए कभी भी प्रस्तुत हूं।

इस बात का विचार करके अपनी सलाह दीजिये, मैं आशा करता हूं कि प्रश्न मनोनुकूल न होने पर टाल नहीं देंगे। मुझे जल्दी ही दौरे पर जाना है और इसलिए निश्चित कल्पना होना ठीक होगा। शुरुआत में ही लोगों को यह नहीं कहा जा सकता कि हम कुछ मदद नहीं देंगे, आपको अपना काम खुद ही करना होगा।[१]

काका का सादर वन्देमातरम्

: ३९ :

१६-८-३८

प्रिय जमनालालजी,

मेरा स्वास्थ्य बहुत-कुछ अब अच्छा है। शक्ति आहिस्ते-आहिस्ते आने लगी है, किन्तु पांव की कमजोरी असाधारण ह। खड़े रहने की शक्ति पांव में नहीं आई है। बाकी कोई किस्म की तकलीफ नहीं है। चि. ओम् रोज सुबह कहां-कहां से अच्छे फूल ले आती है और मेरे कमरे में उनकी सजावट करके आनन्द से भर देती है। ओम् के रखे हुए फूल सारे दिन आस-पास हँसते रहते हैं और मुझमें नई जान डाल देते हैं। चि० मदालसा भी कभी-कभी अपनी तरफ से दो-चार फूल लाकर बढ़ा देती है। दोनों में सेवा-भाव कैसा उपजा है? स्वयं तो फूल जैसी प्रसन्न रहती हैं ही। बस, इतना आनन्द आपको लिख डालने के लिए ही यह पत्र लिखा है। इसका जवाब आप नहीं भेज सकेंगे, क्योंकि स्वयं ,आही जायंगे। पू० राजेन्द्रबाबू को, राजाजी को और सबों को संप्रेम वन्देमातरम्। रमण महर्षिजी के चरणों में मेरी श्रद्धांजलि। कभी उनका दर्शन करूंगा ही। उनके संस्कृत स्तोत्र मैंने पढ़े हैं।

काका का वन्देमातरम्

: ४० :

२३-९-४०

प्रिय जमनालालजी,

पू० श्री बापूजी का और श्री टंडनजी का काफी पत्र-व्यवहार हो

[१] मराठी से अनूदित

चुका है। अतः ता. ४ अक्तूबर को रा. भा. प्र. स.[1] की बैठक वर्धा में रखी है। श्री टंडनजी की प्रार्थना से ही यह बैठक बुलाई गई है, जिसमें आखिरी निर्णय होनेवाला है। मेरी दृष्टि से उस समय आपकी उपस्थिति अत्यावश्यक है। अगर जयपुर का काम खत्म न हुआ हो तो आप यहां आकर फिर से वापस जा सकते हैं, लेकिन आपको आना तो चाहिए ही। ऐसी छोटी-मोटी बातें होती हैं जिनके अन्दर टंडनजी कुछ मांग पेश करते हैं और दूसरी ओर से कुछ मांग न हो तो बापूजी उसे तुरन्त मान लेते हैं। आपके रहने से सब-कुछ ठीक हो जायगा और मेरी जिम्मेवारी भी बंट जावेगी।

काका का सादर वन्देमातरम्

ता. क.

पू० बापूजी भी कहते हैं कि आप और राजेन्द्रबाबू की उपस्थिति आवश्यक है। टंडनजी को ता० ३ से ६ तक कोई भी दिन अनकूल है। बापूजी ने ता. ४ पसंद की है। आप अगर ता. ४ की जगह ता. ५ या ६ पसन्द करें तो तार से वैसा सूचित करें, जिसमें मैं सब सदस्यों को तार से ही वह तारीख बता दूं।

: ४१ :

वर्धा, १६-७-४१

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। ... वाले काम के बारे में मैं इधर बराबर गंभीरता से सोचता रहा हूं। जितना ही मैंने सोचा है मैं इसी परिणाम पर पहुंचा हूं कि मेरेलिए और मेरे परिवार के लिए अन्त में जाकर यह चीज हितकारक नहीं होगी। सोने की ये बेड़ियां अन्त में मेरेलिए हानिकारक ही होंगी। जिस मिशन की उपयोगिता और अनिवार्यता में मुझे विश्वास और श्रद्धा नहीं है, रुपयों के लोभ से उसके पीछे पड़ना मुझे अनुचित मालूम होता है। आखिर वह भी एक प्रयोग ही होगा, ऐसा प्रयोग जिसके विषय में प्रयोगकर्ता को स्वयं कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरी नज़र में यह शक्ति,

---

१. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति

समय और धन का अपव्यय ही है। मैं अपनेको इस काम के बिल्कुल अयोग्य पाता हूं। ६ साल तक बच्चों को अमीरों के बीच में रखकर फिर गरीबी में ले आना मैं उनके हित और विकास की दृष्टि से भी उचित नहीं समझता। श्री .... को बहुत-से सुयोग्य गार्जियन मिल जायंगे, लेकिन मुझे अपने जीवन के जो साल मैं वहां अस्वाभाविक और अरुचिकर वातावरण में विताऊंगा, वापस नहीं मिलेंगे। अतएव मैं तो इसे एक महंगा और अवांछनीय सौदा ही समझता हूं। मेरी इस मूर्खता पर, सम्भव है, आपहँसे, पर मैं अपने स्वभाव को क्या करूं।

कल इस संबंध में यहां पूज्य बापूजी से भी मैंने संक्षेप में बातचीत की थी। उनके आशीर्वाद मुझे भील-सेवा के लिए ही मिले हैं। कलकत्ता से भाई श्री भागीरथजी कानोडिया २० रुपये मासिक की सहायता भेजेंगे। कुछ श्रद्धेय श्री जाजूजी देने या दिलाने के यत्न में हैं। इस तरह ४५-५० रुपयों का प्रवन्ध हो सका तो मैं निश्चिंत होकर पहली अगस्त से भीलों के बीच जा वसूंगा। छोटे भाई की मदद का प्रश्न रह जायगा। उसके लिए आप कहीं से थोड़ी अनुकूलता करा सकेंगे तो कृपा होगी। १२ रुपये का प्रबन्ध काफ़ी हो सकेगा। वह पिलानी गया तो है।

विनीत,
काशिनाथ त्रिवेदी

: ४२ :

बंबई, २४-९-२८

मुरब्बी भाई,

कल रात भाई गिरधारी द्वारा आपके पिताजी के देहान्त का समाचार सुनकर दुखी हुआ। मुझे उनकी वीमारी की खबर नहीं थी, इसलिए मेरे लिए तो यह समाचार अचानक मिला। कभी भी हो, मरण तो अनिवार्य है और पक्की उमर में मरना अच्छा ही है; फिर भी पुत्र और पत्नी को तो वह दुःखकारक होता ही है, क्योंकि सिर पर से बड़े का साया उठ जाना ठीक नहीं; इसलिए आपकी माताजी और भाई राधाकृष्णजी का शोक स्वाभाविक

है। आपको आश्वासन देने की आवश्यकता नहीं और हम सबका तथा पूज्य नाथजी का स्वभाव तो आप जानते ही हैं, इसलिए औपचारिक शब्द नहीं लिखता।

मैं गये रविवार को यहां आया हूं। आपकी राह देख रहा था। पर अब देखता हूं कि आपको विलम्ब हो रहा है। आप ऐसी स्थिति में २८ तारीख को साबरमती आ सकेंगे, इसमें शंका ही है। मैं जाऊंगा या नहीं, यह भी नक्की नहीं है। हम सब कुशल से हैं। चिरंजीव नीलकण्ठ, सौ. गोमती वगैरह प्रणाम लिखवाती हैं। आपकी माताजी को सविनय प्रणाम। वह शांत होंगी, ऐसी आशा है।[1]

लि.
किशोरलाल का सविनय प्रणाम

: ४३ :

गांधी सेवा संघ,
वर्धा, ८-१०-३८

मुरब्बी भाई,

चेंबरलेन ने तो कोशिश करके लड़ाई तुर्त के लिए भी रोक दी। और फ्रंटियर के विषय में एक बार जाहिर किया था कि बम फेंकने के पहले लोगों को पूर्व सूचना दी जाती है। पर आपने तो दूर से ही एकदम बम फेंक दिया और सीधा अध्यक्ष के ऊपर ही। आश्चर्य है।

अब क्या इसलिए मैं तुरन्त कार्यवाहक समिति को बुलाऊं, ऐसा आप चाहते हैं? मामूली तौर से नये साल के बजट के लिए नवम्बर के अंत या दिसम्बर में बैठक होगी। तभी इसका भी विचार करेंगे तो क्या ठीक नहीं होगा? पू० बापूजी भी तबतक लौटेंगे। बिना उनके, न आपका सांत्वन करना आसान होगा, न दूसरों को—अगर त्यागपत्र मंजूर करना, यही मार्ग खुला हो तो—समझाना आसान होगा।

१. गुजराती से अनूदित

आपके इस्तीफे का संघ[1] पर क्या परिणाम आवेगा, इसका आपको विचार कर लेना चाहिए।

आपके और सरदार के बीच में मतभेद बढ़ता ही जा रहा है, यह बड़े दुःख की बात हो रही है। इसमें मैं कांग्रेस और संघ—यानी गांधी-सिद्धान्त—दोनों का नुकसान देख रहा हूं।

आपकी मनःशांति अवश्य चाहता हूं। लेकिन मुझे यह डर जरूरी है कि आप सही मार्ग नहीं ले रहे हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरा साधारण है।

आपका सप्रेम,
किशोरलाल

: ४४ :

जानकी-कुटीर,
जुहू (बम्बई), १०-१०-३८

प्रियश्री किशोरलालभाई,

आपका ८-१०-३८ का प्रेम-भरा पत्र ठीक समय पर मिला। आपके भावों को और आपके दर्द को मैं पूरी तरह समझ सकता हूं। आपने जो विचार पत्र में लिखे हैं वे आपकी दृष्टि से स्वाभाविक ही हैं। आप जब मेरी मन-स्थिति को समझ लेंगे तो, मेरा खयाल है, मेरे विचारों से सहमत हो सकेंगे। मैं ट्रस्टी रहूं या न रहूं, गांधी सेवा संघ के प्रति मेरी श्रद्धा वैसी ही रहेगी और मुझसे जो बनेगा, मैं करता रहूंगा, यह दोहराने की तो मैं आवश्यकता नहीं समझता। मैं वर्धा आने पर आपसे अधिक बात करके आपका संतोष कर सकूंगा, ऐसी आशा है। मैं कल यहां से रवाना होने का विचार कर रहा हूं। अगर कल नहीं हो पाया तो दो रोज बाद तो आना ही है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

---

[1] गांधी सेवा संघ

: ४५ :

जयपुर स्टेट कैदी,
४-७-३९

प्रिय श्री किशोरलालभाई,

आखिर आपका ता० २०-६ का प्रेमवश भेजा हुआ पत्र मिला। आपके सच्चे प्रेम के लिए तो जीवन-भर कृतज्ञ रहूंगा। आपके प्रति मेरे मन में जो भाव हैं वे कागज पर नहीं लिख सकता। आपने इस पत्र में बहुत ही ऊंचे दर्जे के विनोद का उपदेश किया है, परन्तु मैं क्या करूं? मेरा मन गवाही नहीं देता—मन पर तावा नहीं रहा। अगर आप लोगों के सच्चे आशीर्वाद से मेरे मन पर मेरा काबू आजावे व मुझे पूरा विश्वास होजाय कि मेरी सदबुद्धि स्थायी रहेगी तो शायद मुझमें आत्म-विश्वास आवे। आज तो मैं अपने पर से विश्वास खो बैठा हूं। जैसे-जैसे मैं अपनी कमजोरियों का निरीक्षण करता हूं वैसे-वैसे ही मेरा मन साफ तौर से मुझे कहता है (पहले से कहता आया भी है) कि मैं गांधी सेवा संघ जैसी उच्च व पवित्र संस्था के योग्य नहीं हूं। ज्यादा नहीं लिख सकता। एक बार तो आप मुझे मुक्त कर ही डालें। पूज्य बापूजी मेरा समर्थन करेंगे। वह मेरी स्थिति से वाकिफ भी हैं।

मुझे अपनी कमजोरियों का थोड़ा ज्ञान रहने के कारण मैंने बापू को 'गुरु' नहीं बनाया, न माना, 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद इन्हें बाप मानने से मेरी कमजोरियां हट जायं। बीच में ठीक इन दिनों (याने इन दो वर्षों में) तो मुझे काफी हैरान, बेचैन, निरुत्साही होना पड़ा। बापू के लड़कों में हरिलाल भी तो है। वह बेचारा प्रसिद्ध हो-गया। मेरे सरीखे छिपे हुए रहे। आपने लिखा—गांधी सेवा संघ को छोड़ना याने बापू को छोड़ना है। यह मानने को मेरा मन तैयार नहीं है। बापू के दूसरे चार लड़के भी तो गांधी सेवा संघ में नहीं है। फिर मैंने ही क्या इतना पुण्य किया, जिससे रह सकूं। उनकी गति सो मेरी गति। उनमें कई तो उच्च स्थिति में हैं। पहले मैंने अहंकारवश मान लिया था कि बापू

को व उनके सिद्धान्त को मैं थोड़ा समझ सका हूं। परन्तु ठीक विचार करने से यह साफ दिखाई दे रहा है कि न समझ पाया था, न समझने की ताकत है। मैंने सत्य-अहिंसा की व्याख्या मेरे विचार के मुताबिक समझ ली थी। परन्तु वह मेरी गलती अब साफ दिखाई दे रही है। मेरी लिखने की तो और भी इच्छा होती है, परन्तु जेल के अन्दर से ज्यादा क्या लिखूं।

आखिर पत्र तो अधिकारियों के मार्फत ही भेजना पड़ता है। मिलने पर दिल खोल कर बातें हो सकेंगी। वर्तमान में गोड़े में दर्द ज्यादा हो जाने के कारण व ब्लडप्रेसर बढ़ जाने के कारण शायद अधिकारी लोग कोई साथी सचमुच में दे देवें तो वैसी हालत में पूज्य नाथजी यहां कुछ समय के लिए आ सकेंगे। यहां की हवापानी तो इस ऋतु में ठीक मानी जाती है। आप उनसे तपास कर मुझे सूचित करें। उनके कार्यक्रम में विशेष बाधा न पड़कर आना होगा तो मुझे विशेष समाधान रहेगा। नहीं तो फिर विट्ठल गोपाल का साथ तो है ही। मुझे तो आशा है मेरा स्वास्थ्य ठीक कामचलाऊ तोभी हो जावेगा, जो कि यहां के बड़े डाक्टर का कहना है, 'यहां ठीक नहीं हो सकूंगा।'

आप लोगों की संगत से इतना लाभ तो जरूर हुआ कि मरने का डर प्रायः विशेष नहीं मालूम देता है। कभी-कभी तो उसका स्वागत करने का उत्साह भी मालूम होता है। वह ठीक भी है। अगर वर्तमान जीवन से उच्च जीवन बनना संभव न हो तो स्वार्थ की दृष्टि से भी मृत्यु-स्वागत श्रेयकारक ही है। यह तो मैंने वैसे ही इधर में जो विचारधारा चलती रहती है उसपर से लिख डाला है। आप चिंता न करें। मुझे इस हालत में ज्यादा शांति दूसरे किसी भी स्थान पर मिलनेवाली नहीं है। परमात्मा की यह बड़ी भारी दया ही है कि मुझे इस प्रकार मौका मिला है। मैं अपनेको ठीक देख रहा हूं, समझ रहा हूं।

सस्ता साहित्य से हिंदी गीता आपकी आगई है। मौका मिलने पर देखूंगा। परीक्षा, विवाह-संबंध की खबरें तो यहां भी मिलती ही रहती हैं।

पत्रिका तो पहुंच ही जाती है, क्योंकि उसे कोई भी नहीं रोकता है। अधिकारी तो चाहते ही हैं कि विवाह या बरात में जाने की मेरी तैयारी हो जावे।

मुझे थोड़ा डर होगया है कि मेरी इस बीमारी को निमित्त करके कहीं मेरा बंधन हटाकर इस शांति से मुझे वंचित न कर देवे। परन्तु मैं पूरा ख्याल रखूंगा। जहांतक संभव होगा ऐसा न होने दूंगा।

- बम्बई के आर्य भवन के किराये वसूली में जो गड़बड़ी हुई उसकी खबर से मुझे दुःख व चोट पहुंची। मैंने बम्बई काफी कड़क लिखा है। घोत्रे की भी थोड़ी भूल तो है ही। ज्यादा तो श्री केशवदेवजी की है। पू. नानाभाई, विजया भाभी को प्रणाम। बाकी सबोंको वन्देमातरम्।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ४६ :

जयपुर स्टेट कैदी
१५-६-३९

प्रिय श्री किशोरलाल भाई,

चि. राधाकृष्ण आज मुझसे मिल गया। ईश्वर की दया से बड़ी भारी दुर्घटना से बच गया। आप सभीके समाचार जानकर सन्तोष मिला। श्री गोपालराय के बारे में तो मैं अपनी सम्मति भेज रहा हूं।

आप यह तो भली प्रकार से जानते ही हैं कि मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरियों के कारण गांधी सेवा संघ का ट्रस्टी व तीसरे दर्जे का सदस्य रहने लायक मैं अपनेको नहीं समझ रहा हूं। मैंने अपनी यह इच्छा कई बार प्रकट भी की थी। पूज्य बापूजी का इस समय का वृन्दावन-सम्मेलन में दिया हुआ भाषण 'सर्वोदय' में पढ़ा। बापूजी ने बहुत ही स्पष्ट तौर से कह दिया है। और मेरी नम्रता व आग्रह-पूर्वक आपसे प्रार्थना है कि मुझे संघ के ट्रस्टी-पद से व तीसरे दर्जे के सदस्यत्व से जल्द-से-जल्द मुक्त करें। मेरा संघ से जो प्रेम है वह तो रहेगा ही। परन्तु मेरी मानसिक स्थिति और नैतिक कमजोरियों के कारण अब यह नैतिक भार में बर्दाश्त नहीं

कर सकता। आशा है, आप उदारतापूर्वक मुझे इस भार से हलका कर देंगे।

जमनालाल

: ४७ :

गांधी सेवा संघ
वर्धा, २०-६-३९

मुरब्बी भाई,

आपका पत्र मिला। मिला, इससे आनन्द हुआ, परन्तु उसमें लिखी बातों से आनन्द न हुआ। जयपुर दरबार आपको हैरान करे, जेल में डाल रखे, इसलिए हमसे रूठ जाना यह कहां का न्याय है? आपने कहा—मुझे एक साल का आराम चाहिए, हमने कहा—अच्छा मंजूर। आपने कहा—मुझे हिमालय की किसी ठंडी पहाड़ी पर जाना है। हमने कहा—मंजूर। परन्तु आपने तो वहां जाने के बजाय जयपुर दरबार से लड़ाई ठान ली। उन्होंने आपको निकाल दिया, तो मजबूर होकर गये। अब वहां सत्याग्रह करना हो तो जयपुर दरबार के गजट पढ़कर कीजिये। 'सर्वोदय' पढ़कर गांधी सेवा संघ को क्यों धमकी देते हैं?

परन्तु आपकी यह आदत बहुत बचपन की है। जो आपको अपनाते हैं उन्हींको आप हैरान करते हैं। बच्छराज सेठ ने आपको गोद लिया, आपने उन्हें दादा बनाया, फिर आपने उन्हें धमकी दी कि मैं आपको छोड़कर चला जाऊंगा। बापू ने आपकी मांग मंजूर करके आपको कहा कि आप मेरे चार लड़कों में पांचवें हुए। अब आप कहते हैं कि मैं आपका पुत्र बनकर नहीं रह सकता। परन्तु अब कैसे छूट सकते हैं? कल आप जानकीबहिन को भी छोड़ने की धमकी देंगे। तो ऐसा कहीं हो सकता है? जैसे हिंदू-धर्म के दत्तक और विवाह रद नहीं किये जा सकते, उसी तरह गुरु-शिष्य भाव भी रद नहीं किया जा सकता।

एक गुरू का आसरा, एक गुरू से आस।
औरन से उदास है, एक आस-विश्वास॥

गांधी सेवा संघ से मुक्त होना और बापू से मुक्त होना, यह आपके लिए वराक्र है। यह अव इस जन्म में नहीं हो सकता, अर्थात यह शोभा नहीं देगा। जो कदम उठाया, उससे अव आगे कदम उठाना चाहिए। जो किया वह असत्य हो, अयोग्य व्यक्ति या कार्य के लिए जीवन को वर्बाद किया, ऐसा विश्वास हो जाय तो फिर किसी भी समय छोड़ सकते हैं और छोड़ना चाहिए। परन्तु कमजोरी का नाम तो दिया ही नहीं जा सकता। हो, होकर आखिर विगड़ेगा क्या ? पैसा, टका, सुख-आराम सबसे ख्वार हो जाओगे। ५० या ५०० मनुष्यों को निभानेवाले न रह सकोगे। बापू फकीर वनाकर छोड़ेंगे, कदाचित् फांसी पर भी चढ़ा दें तो भी क्या ? जो कुछ है वह लड़कों को सौंप दिया है। अब आप फकीर होकर सबकी चिंता छोड़कर गांधी सेवा संघ का सेवक सदस्य वनने का निश्चय किया है, ऐसा बापू को बताओ, कमलनयन को बता दो। देखिये, इस निश्चय के होते ही आप में कितना जोश आ जाता है।

शूर, सती, अरु गुरुमुखी ज्ञानी, पीछा चलत न कोई।
जो पीछा पग धरत कुमति कर, जीवन जनम बिगोई॥

आपके एकान्तवास के फलस्वरूप इस निश्चय पर आने की मैं आपके पास से आशा रखता हूं। इसतरह 'सर्वोदय' को फिर से पढ़ोगे तो बापू की भाषा से दूसरा अर्थ मिलेगा। पढ़ो भले ही, परन्तु उसमें से ऊंचा चढ़ने का अर्थ निकालिये, निराशा का नहीं।

किशोरलाल का सप्रेम प्रणाम

:४८:

सेवाग्राम, ३०-६-४१

प्रिय भाईश्री,

इसके साथ जलियांवाला बाग मेमोरियल फंड के पत्र और एक चैक भेजता हूं। चैक पर हस्ताक्षर करके श्री मुकर्जी को वापस भेजना होगा।

आपकी तबीयत ठीक होगी। कल से यहां वर्षा शुरू हुई है और अच्छी हुई है। ठंड भी खूब होगई है।

पूज्य बापूजी ने हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए २४ घंटे का उपवास किया है। शाम को छोड़ेंगे। सेठ उस्मान सुभानी की सूचना थी।

अमतुल सलाम के सब दांत निकाल दिये। तीन-चार दिन खूब परेशान रही। अब ठीक है।

आप शान्त और स्वस्थ होंगे।

किशोरलाल के प्रणाम

: ४९ :

सेवाग्राम,
वर्धा होकर, (मध्यप्रांत)
४–७–४१

प्रिय भाई,

आपका पत्र मिला। ट्रस्टी संस्था के रूप में रजिस्टर कराने के बारे में पूज्य बापूजी अपनी गलती स्वीकार नहीं कर सकते। उन्होंने यह काम भूलाभाई को सौंपा था। अब आप करा लें। मुझे रजिस्टर्ड ट्रस्ट और चेरिटेबल सोसाइटी के बीच इन्कम-टैक्स की दृष्टि से फर्क नहीं मालूम होता। रजिस्टर्ड संस्था पर इन्कम-टैक्स नहीं लगता, ऐसा अनुभव नहीं है। लड़ना तो पड़ता ही है। रजिस्टर्ड ट्रस्ट होना काफी होगा। बाकी कानून तो रोज-रोज बदलता रहता है। कहांतक कानून के पीछे विधान को बदलते रहेंगे! खैर।

हां, एक सज्जन के संतोष के लिए एक उपवास करने में भूल नहीं है। कोई कितनी मांग करता है, इसीपर तो आधार रहता है न?

यहां सब कुशल है।

वर्षा अच्छी हुई। आज अब आकाश साफ हुआ है।

किशोरलाल के प्रणाम

: ५० :

सेवाग्राम, १२-१-४२

पूज्य भाई,

श्री कोठावाले के जवाब का मसविदा पू. बापूजी ने सुधार दिया है। तदनुसार उत्तर दिया जाय।

उनकी दी हुई सूचनाएं कीमती मालूम होती हैं। भैंस के बारे में ज्यादा माहिती की जरूरत देखते हैं।

उनका पत्र और टीकाएं पारनेरकरजी और नरहरिभाई को पढ़वाने के लिए रखली हैं।

आपका,
किशोरलाल का सविनय प्रणाम

: ५१ :

मद्रास, ७-३-३६

प्रिय जमनालालजी,

जब हम मिले थे, तबसे हिन्दी-सभा के लिए भवन बनाने का विचार काफी उन्नति कर गया है। उसके लिए जमीन खरीद ली गई है और शिलान्यास भी हो चुका है। अगर हमें नुकसानी से बचना हो तो हमें दफ्तर के मकान का निर्माण देरी-से-देरी आगामी जुलाई तक कर लेना चाहिए। जैसाकि आप जानते हैं, ९ हजार रुपये हमारे पास हैं और हम इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि यहां और धन इकट्ठा होजाय; लेकिन हमें बड़ी मदद होगी यदि इंदौर में जो रकम जमा की गई थी वह हमें शीघ्र ही दे दी जाय। मैं नहीं चाहता कि आपको लगे कि हम यहां पैसा जमा करने की अपनी जिम्मेदारी से हटना (जी चुराना) चाहते हैं। गये साल हमने करीब २० हजार रुपये जमा किये थे और हर महीने हमें २ हजार रुपये जुटाने पड़ते हैं। इमारत के लिए रुपये जमा करने की खास कोशिश

की जा रही है। मुझे आशा है कि काफी धन जमा कर लेंगे। इस बीच भवन-निर्माण का कार्य रुकना नहीं चाहिए। इसीलिए इतनी जल्दी है और यह पत्र लिख रहा हूं।

शुभेच्छा के साथ[1]

आपका,
के. भाष्यम्

: ५२ :

दादर, २५-११-३९

प्रिय जमनालालजी,

आपका २४ का पत्र आज सुबह मिला। इलाज के बारे में निश्चय हो जाने के बाद आपका पत्र आयेगा, ऐसा विश्वास था। मैंने समझा था कि आप डाक्टर दीनशा के पास इलाज करवा रहे हैं। उसके बाद कल डाक्टर ठाकोरभाई जलुन्धवाला मुझे यहीं मिले। उनसे आपके बारे में कुछ अधिक जानकारी मिली। आज आपका पत्र मिल गया। आराम लेने पर ही आराम मिलेगा, यह बात पत्र में पढ़कर सन्तोष हुआ। चिरंजीवी मदालसा को भी आराम होने लगा होगा।

मेरा विचार पूना आने का है, परन्तु यहां दो बीमारों की देखरेख करनी पड़ती है। और थोड़े दिन यहां रहकर इसके बाद अपने विचार आपको लिखूंगा। सौभाग्यवती जानकीदेवी वहां हों तो उन्हें आशीर्वाद।

नाथ के सप्रेम आशीर्वाद

पुनश्च : किशोरभाई का पत्र आज ही मिला। तबीयत ठीक नहीं मालूम होती। नागपुर जाकर शरीर की जांच करवाने की बात लिख रहे हैं।[2]

: ५३ :

दादर, २९-११-३९

श्री जमनालालजी,

आयु के नये वर्ष होने से मुझे आनन्द आता है। परमात्मा करे, आपके

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित　[2] मराठी से अनूदित

अन्दर सात्त्विकता सदैव बढ़ती रहे और उससे आपको तथा दूसरों को शान्ति और प्रसन्नता प्राप्त होती रहे, यही मेरी इच्छा है। परमात्मा अनन्त शक्ति-सम्पन्न है। हम सब उसीके हैं। अपनी सदिच्छा पूर्ण करना कुछ भी कठिन नहीं है। सच्ची श्रद्धा जीवन को सदैव सात्त्विक बुद्धि और प्रेरणा प्रदान करती रहती है।[1]

नाथ के सप्रेम आशीर्वाद

: ५४ :

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
२९-११-३८

सेठ जमनालाल बजाज,
बंबई।

प्रिय महाशय,

मुझे आपको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आपको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय कोर्ट का सदस्य, २७ नवम्बर सन् १९३८ को, विश्वविद्यालय के रजिस्टर्ड डोनर्स विधान १४(१) श्रेणी ३ (बी) तथा यूनिवर्सिटी के प्रथम इंस्टीट्यूट का सदस्य चुन लिया गया है, जिसके अनुसार आप यह पद उपरोक्त तिथि से ५ वर्ष के लिए ग्रहण करेंगे। कृपया मुझे शीघ्र सूचित करें कि आपको यह चुनाव स्वीकार है।

कोर्ट की अगली वार्षिक सभा, जो १८ दिसम्बर सन् ३८ को होगी, की सूचना की एक प्रति आपको इस पत्र के साथ भेजी जा रही है।[2]

भवदीय,
(हस्ताक्षर) कोर्ट के मंत्री

: ५५ :

रांची, ८-१-३६

मेरे प्यारे भाई जमनालालजी,

कल शाम को मुझे आपका तार मिला। परसों सुबह ८ बजे मुझे

---

[1] मराठी से अनूदित [2] अंग्रेजी से अनूदित

जानकीप्रसाद की बीमारी और उनके रांची पहुंचने का समाचार मिला तो मैं जल्दी से उनके पास पहुंचा और देखा कि उन्हें बुखार नहीं है। उन्होंने मेरे साथ अच्छी तरह खुलकर बातचीत की। डाक्टर पूर्णानन्द मित्र ने उनके स्वास्थ्य की परीक्षा की थी और उन्हें रोग की कोई शिकायत नहीं बताई। उनके पिता भी उनको देखने के लिए गये और उन्हें सब प्रकार की मदद दी, मगर जानकीप्रसाद ने कोई सहायता नहीं ली।

यही नहीं, अमुक ने मुझे बताया कि जब जानकीप्रसाद रांची एक डोली में लाये जा रहे थे तो पूछा गया कि वह कहां ले जाये जा रहे हैं, तो लोगों ने उत्तर दिया कि वह अपने पिताजी के घर पहुंचाये जा रहे हैं। यह सुनकर जानकीप्रसाद फौरन खड़े होगये और जोर-से चिल्लाने लगे। इस कारण उन्हें बेहोशी होगई।

यह सब सुनकर उनके मन की इस हालत में मैंने उन्हें उनके पिताजी के पास भेजना उचित नहीं समझा। मैं दौड़कर गंगा बोधिया के पास गया और आरोग्य भवन में एक कमरा ठीक कर लिया, तथा मणिबाबू से कहकर जानकी को वहां पहुंचा दिया। दूसरे दिन, अर्थात् कल, जानकी को इस भवन में लाया गया जो कि एक अच्छी जगह है। आज सुबह मैं उन्हें फिर देखने गया तो मालूम हुआ कि शाम से उनका टेम्प्रेचर बढ़कर १०२ डिग्री हो गया है। जदुगोपाल, जो यहां के मशहूर चिकित्सक हैं, बुलाये गए हैं और उन्होंने अच्छी तरह से जांच करके कहा कि उनकी तन्दुरुस्ती बहुत खराब है, इसलिए बहुत सावधानी रखनी चाहिए। उन्होंने नुस्खा लिख दिया है, जिसके अनुसार दवाई जानकी को दी जा रही है। चार-पांच दिन से उन्हें टट्टी की हाजत नहीं हुई है। आशा है कि पेट साफ होने पर वह अच्छे हो जायंगे। मैं अपनी योग्यता भर उनकी देख-रेख करूंगा।[1]

प्रणाम के साथ,

आपका,

क्षितीशचन्द्र बसु

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

: ५६ :

लाहौर, १-५-३९

प्रिय भाईसाहब,

पेरिस से लौटने के बाद मैं आपको लिखना चाहती थी। मुझे यह उम्मीद है कि आप अपनी तन्दुरुस्ती का खयाल रखते हुए पूरी मानसिक शांति में होंगे। आपको किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। हमें आन्तरिक शान्ति और भीतरी शक्ति प्राप्त करने का अभ्यास करना चाहिए, जो कि हमारे सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में बहुत जरूरी है। आजकल लोगों की यह आदत-सी होगई है कि हम अपनी जिन्दगी के दरवाजे पर बैठकर रास्ते के शोरोगुल से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। हम अपने अन्दर प्रविष्ट होकर प्रेरणा प्राप्त नहीं करते।

आप ये सब सोचने का समय पायेंगे और जब आप मुक्त हो जायंगे तो आप अपने साथ आन्तरिक शान्ति और ताकत लेकर आयंगे। मैं एक-दो दिन में लाहौर से पहाड़ की ओर जाऊंगी, और वहां कुछ समय गुजारूंगी। वहां मेरा कोई पता नहीं है।

सम्मान एवं शुभेच्छा के साथ।[1]

आपकी बहन,
खुरशेद (नवरोजी)

: ५७ :

कटक, १६-११-२३

प्रिय सेठजी,

अगर २४ को साबरमती की मीटिंग में मेरा आना निश्चित होता तो मैं यह पत्र आपको नहीं लिखता। मैं आना जरूर चाहता हूं, मगर मैं नहीं समझता कि हाल आप मुझे ऐसा करने की इजाजत देंगे।

फिर भी अगर मैं आऊं तो उत्कल के बारे में आपसे बातचीत करूंगा और वहां के हालात पर रोशनी डालूंगा।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

उत्कल की गरीबी कांग्रेस के कार्य में बाधक हो रही है। पंडित नीलकंठदास यहां से धारा-सभा (लेजिस्लेटिव असेम्बली) के लिए खड़े हुए हैं और उन्होंने अन्य क्षेत्रों के बहुत-से आदमियों को इस काम में लगा लिया है। जो कुछ धन है वह प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के पास है। खादी-विभाग सुरक्षित हाथों में है, क्योंकि निरंजन पटनायक पूर्णत: विश्वास पा चुके हैं। परन्तु इस जिले और बालासौर में मलेरिया का जोर है और कौंसिल के गोलमाल के कारण उनको अच्छे कार्यकर्ता नहीं मिल सके।

रहा मैं, सो मैं राष्ट्रीय स्कूल के लिए गांवों में प्रयत्न कर रहा हूं। महात्माजी के रचनात्मक कार्य तो हम अपनी समझ के मुताबिक इस स्कूल में जारी करने की कोशिश कर रहे हैं। गत तीन साल से यह स्कूल कांग्रेस कमेटी से मदद के लिए पुकार करता रहा। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की आर्थिक हालत आप जानते ही हैं। अखिल भारत कांग्रेस कमेटी से हमने तीन बार अपील की। सत्यवादी नेशनल स्कूल को ५ हजार रुपये का अनुदान मिला भी है परन्तु सारे प्रान्त में केवल तीन-चार ऐसे स्कूलों से क्या हो सकता है? हमारी मांग ३ हजार रुपये की है। इसीलिए हमने आपके सामने यह बात रखी, क्योंकि आपने हमें सदा प्रेमपूर्वक मदद की है और सलाह तथा प्रेरणा देते रहे हैं।[1]

आपका,
गोपबन्धु चौधरी

: ५८ :

३०-११-२३

प्रिय गोपबन्धुबाबू,

मुझे साबरमती में आपका पत्र और तार दोनों उस समय मिले जबकि मीटिंग हो रही थी। कार्यकारिणी (वर्किंग कमेटी) की बैठक हुई और उसमें सब अर्जियां फाइल कर दी गईं, क्योंकि पैसे की कमी के कारण उनपर विचार नहीं हो सकता था। यद्यपि मैं कमेटी में नहीं हूं, फिर भी मैं सदस्यों

---

१. अंग्रेजी से अनूदित

को समझा-बुझाकर आपके अनुरोध पर विचार करन को कहता, परन्तु यह तो तभी हो सकता था जब वे लोग इस विषय पर विचार करने को तैयार होजाते।

श्री निरंजन पटनायक के साबरमती, जयपुर आने से मुझ आपके प्रान्त की स्थिति मालूम हुई और आपके पत्रों द्वारा भी।

व्यक्तिगत रूप में, मैं आपके रचनात्मक कार्य की योजना अमल में लाने के पक्ष में हूं; क्योंकि इस समय हमारे सामने यही एक सच्चा काम है। इस उद्देश्य से हाल ही में गांधी-सेवा-संघ शुरू किया गया है और बाब राजेन्द्रप्रसाद को विहार के साथ आपके प्रान्त का भी संगठन सौंपा गया है। अगर आप उनसे मिल सकें अथवा उन्हें इस संबंध में लिखें तो वह सेवा-संघ के लिए आपके आश्रम के उपयोग की बातें सोच सकें। और वैसी हालत में आप अपनी आर्थिक कठिनाइयों से कुछ छुटकारा पा सकें। मैं आपका पत्र बाबू राजेन्द्रप्रसादजी को छपरा के पते पर भेज रहा हूं। चूंकि मैं रचनात्मक कार्यक्रम को अपने प्रान्त में अमल में लाने की बात सोच रहा हूं, इसलिए मैं इस समय तो आपके प्रान्त में नहीं आ सकता।

आपके प्रान्त को खद्दर का कर्ज इसलिए दिया गया था कि मुख्य रूप में आपने उसकी जिम्मेदारी ले ली थी और मुझे आशा है कि काम सन्तोषपूर्वक चल रहा होगा। फिर भी मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप उस क्षेत्र की ओर भी कुछ अधिक ध्यान दें।[1]

आपका,
जमनालाल बजाज

: ५९ :

साखी गोपाल, २०-६-२४

मेरे प्यारे भाई जमनालालजी,

आपका खत मुझे यथासमय मिला। जेल जाने से पहले मैंने जितनें काम का प्रबन्ध किया था, जेल से वापस आकर देखता हूं कि वह पहले से बहुत

[1] अंग्रेजी से अनूदित

बिगड़ गया है। उड़ीसा के कांग्रेस काम या कलकत्ता के रामजिवी संगठन या सत्यवादी विद्यालय—जिस ओर मैं देखता हूं—मुझे बहुत निराशा मालूम होती है। मेरे जेल जाने के बाद आपने खुद सत्यवादी विद्यालय के लिए जो आर्थिक सहायता भेजी थी और आपके प्रयत्न से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से जो मदद मिली थी, इससे मेरी रिहाई तक किसी तरह विद्यालय का काम चला। अभी तीन-चार महीने से हालत बहुत बुरी हुई। पर विद्यालय के कार्य में अभी तक कोई हानि नहीं पहुंची। छात्र-संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। अभी छात्र-संख्या करीब ९७० तक होगी। शिक्षक लोगों को अभी तक, यानी तीन-चार महीने तक, कोई एलाउन्स नहीं मिला, फिर भी वे लोग सेवाभाव से बराबर पूर्ण उत्साह से काम में लग रहे हैं। वृष्टि के अभाव से इस साल उड़ीसा में खेती की अवस्था बहुत खराब है। पुरी जिले की स्थिति सबसे ज्यादा शोचनीय है। इससे मुझे भारी चिन्ता होती है। चारों ओर से आपपर इतना भार पड़ता है—यह सोच-विचारकर मैंने आपके पास इसके बारे में कुछ नहीं लिखा था। महात्माजी को भी बहुत व्यस्त समझकर उनके पास अपनी छोटी-सी बात लिखना भी अनुचित समझा। मेरे दोस्त ठक्कर-साहेब के किसी एक पत्र के जवाब में मैंने विद्यालय के बारे में कुछ लिखा था। ठक्करजी ने मेरे पत्र की नकल महात्माजी के पास भेज दी। इसके बाद महात्माजी से मुझे खत मिला। इसमें महात्माजी ने विद्यालय की हालत आपको लिखने को फरमाया है। इस बारे में मैं आपको ज्यादा क्या लिखूं। सत्यवादी विद्यालय तो आपका ही है। वर्धा में जो वक्त गया था, आपको याद होगा। उसी वक्त मैंने विद्यालय का समस्त भार आपके हाथ में सौंप दिया था। मेरी अनुपस्थिति में आपने सपरिवार आकर सत्यवादी विद्यालय के ऊपर अपनी जैसी ममता दिखाई, इससे मेरा समर्पण सार्थक हुआ। सत्यवादी विद्यालय को आपका अपना अनुष्ठान समझकर ही इसके ऊपर आपकी कृपा और सहायता के लिए मैंने कभी आपको मामूली धन्यवाद नहीं दिया, न कभी दूंगा। मैं भी वर्धा राष्ट्रीय विद्यालय को अपना ही समझता हूं। सुविधा मिलने पर कभी-कभी वहां जाकर विद्यालय की सेवा में लग

जाऊंगा। आपसे ज़ल्दी मुलाकात की उम्मीद थी। उसी समय ये सब हालत आपको जबानी कहने की इच्छा थी। परन्तु साक्षात् की संभावना अनेक कारणों से इतनी करीब्र की नहीं मालूम होती। इसलिए महात्माजी के आदेशतः यह पत्र लिखता हूं। एक दरिद्र पिता को अपनी एकमात्र कन्या अपनी आंख के सामने अनादर से मरते देखते हुए जो हालत होती है, वही हालत सत्यवादी विद्यालय की वर्तमान स्थिति को देखकर मेरी हो रही है। इससे आप समझ लेंगे।

मैं बहुत सोचकर देखता हूं कि समय-समय पर यत्किंचित् अर्थ-संग्रह से विद्यालय की अर्थ-समस्या पूर्ण नहीं होगी। विद्यालय के स्थायित्व और क्रमोन्नति के लिए कुछ स्थायी वन्दोवस्त जरूरी है। मेरे खयाल से, इसके लिए कम-से-कम दो लाख रुपया चाहिए। एक लाख के सूद से शिक्षक लोगों के मासिक खर्च की व्यवस्था होगी। बाकी एक लाख से विद्यालय का संगठन, विभिन्न विषयों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था, घर, जमीन, वगैरह दूसरे स्थायी प्रयोजनों की व्यवस्था होगी। परन्तु मेरे लिए दो लाख रुपये का संग्रह, बौने की चांद पकड़ने की चेष्टा है। मगर मेरा विश्वास है, आपकी सहायता से एक रोज मेरी कल्पना सफल हो जायगी। मरे हुए आदमी को भी आशा नहीं छोड़ती। वर्तमान अवस्था में मेरी इस कल्पना को कोई ऐसी ही बात समझेंगे, यह जानकर भी आप जैसे आत्मीय व्यक्ति से मैंने दिल के विचार निःसंकोच प्रकट कर दिये हैं।

मध्यभारत और राजपूताने का राष्ट्रीय सेवा-दल-संगठन का जो मसविदा आपने मुझे बम्बई में दिखलाया था; उसका काम आज तक कितना अग्रसर हुआ ?

आजकल वर्धा में रुई का क्या भाव है ? रुई के बिना खद्दर का काम इस प्रान्त में अभी तक भी अच्छा नहीं चलता। कपास का यहां प्रयत्न होता है। लेकिन जलवायु की प्रतिकूलता से फल यहां अच्छा नहीं होता। सत्यवादी विद्यालय और इसके आसपास गांव में खद्दर का काम जोर से

चलाने का मैंने निश्चय किया है। इस वास्ते रिआयती दर में रुई मिलने का कोई इन्तजाम हो सकेगा ?

इधर मलेरिया आजकल बहुत जोर से फैल जाता है। जेल से निकलने के बाद मुझे तीन मर्तबा उसने पकड़ा। इससे आदमी भी बहुत मरते हैं। भगवान् की कृपा से मैं, मेरे सहयोगी और छात्र किसी तरह कुशल हैं। आशा करता हूं, आप भी सपरिवार कुशल होंगे।

आपका प्रिय भाई,
गोपबंधु दास

: ६० :

पुरी, ५-१०-३१

माननीय महोदय,

आपका तार व चिट्ठी आज मुझे यहां मिले। अब तो मेरा कार्य-क्षेत्र पुरी में है। स्वागत-समिति का काम शुरू होगया है। इसलिए कृपा करके नीचे लिखे हुए पते पर पत्र भेजने से मिलने में कुछ विलम्ब नहीं होगा।

पुरी में आपका शुभ पदार्पण करना बिल्कुल ठीक है। अधिक यह है कि अभी बालेश्वर के गांधी कर्म मन्दिर को बन्द करके उसके सब आदि-वासियों को कांग्रेस की स्वागत-समिति के काम में लगाया जा रहा है। स्वयं मेहताबजी अब यहांपर हैं। उन्होंने सेनानायक का काम ले लिया है।

ता. १६ को यहांपर स्वागत-समिति की साधारण परिषद् की एक बैठक है। प्रान्त के सब विशिष्ट कार्यकर्ता उस दिन यहांपर उपस्थित रहेंगे। जब कुमिला में अवस्थान लम्बा होगा तो उस तारीख को यहां पधारने से बहुत फायदा होगा। अधिकन्तु ता. १८ से मुझे संबलपुर के तरफ चन्दा वसूल करने को जाना निश्चित हुआ है।

पुरी जाने पर आपके रहने का बन्दोबस्त मैं करूंगा या आपके किसी

मित्र के जरिये आप खुद बन्दोबस्त करना चाहते हैं, मुझे लिखें, कृतार्थ होऊंगा।

वन्देमातरम्

आपका,
गोमबन्धु चौधरी

: ६१ :

बंबई २१-९-४१

पू० श्री काकाजी,

पू० काकासाहेब के पत्र से जाना कि आप तारीख २१-९-४१ को वर्धा पहुंचेंगे। इस हिसाब से आज आपको पत्र लिख रहा हूं।

मैं आपके पास एक भिक्षा मांग रहा हूं।···की दृष्टि-परिवर्तन करने के लिए आप अपनी शक्ति डालिये। आपमें काफी वात्सल्य और दया है। आपमें प्रेम से दूसरों को जीतने की काफी शक्ति है। अगर आप निश्चय कर लें तो यह काम आप आसानी से कर सकेंगे। वह वहां अभी छः महीने रहेगी। पूज्य बापूजी की विचारधारा का मुख्य केंद्र है वर्धा। वहां के वातावरण में अगर आदमी के हृदय में परिवर्तन न हो सके तो दूसरी जगह होना असम्भव-सा लगता है। इसी दृष्टि से···को उसकी पढ़ाई के लिए वर्धा भेजने का निश्चय किया और उसने भी यह स्वीकार कर लिया है।

अब मेरी याचना तो यही है कि आप अपने प्रेम के बल से उसमें गांधी-जीवन का आकर्षण उत्पन्न करने की कोशिश करें। मैं इस बारे में हारा हूं। इसलिए मैं आपकी शरण ले रहा हूं। अनेकों के जीवन में आपने परिवर्तन किया होगा। ··· के बारे में भी खयाल रख कर के मुझे उपकृत कीजिये। अगर आप इतना करेंगे तो मेरे जीवन में आप एक बड़ी समृद्धि ला देंगे।

प्रत्युत्तर की राह देखता रहूंगा।

आपका नम्र सेवक,
(एक महाराष्ट्रीय युवक)

: ६२ :

दिल्ली, २०-१२-३५

श्रीमान सेठजी, वन्दे ।

मैं नहीं कह सकता, मेरे विषय में आपके कैसे विचार हैं ? परन्तु मुझे इतना अवश्य विश्वास है कि एक चिकित्सक की हैसियत से आपके मन में मेरा कुछ विश्वास अवश्य होगा । पिछले दिनों जब मैंने आपके कान की तकलीफ़ का हाल और उसके लिए यूरोप जाने की वात पढ़ी तब भी मेरी इच्छा हुई थी कि मैं एक बार चेष्टा कर देखूं कि मैं आपको आराम पहुंचा सकता हूं या नहीं, परन्तु फिर मैंने लिखा नहीं। अब महात्माजी के निरन्तर रुग्ण होने के समाचार से चित्त में बेचैनी होती है। आप यदि ठीक समझें तो महात्माजी को थोड़ा मेरा परिचय देकर चर्चा करें कि वह कुछ समय यदि मुझे चिकित्सा करने का अवसर दें तो अपने मन में पूरी आशा रखता हूं कि उनके शरीर में ऐसी शक्ति और नवीनता उत्पन्न कर दूंगा कि जैसी २० वर्ष पूर्व उनके शरीर में थी। मैं आशा करता हूं कि आप इसपर पूरा विचार करेंगे ।

भवदीय,

चतुरसेन वैद्य

: ६३ :

शान्तिनिकेतन, २३-१२-३४

प्रिय जमनालालजी,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं होम मेंबर और वाइसराय से बड़ी संतोषजनक मुलाकात कर सका और मुझे आशा है कि स्थिति सुधरेगी। मैं आपसे २८ दिसम्बर को मिलना चाहता हूं। मैं सुबह ७ बजकर ५० मिनट पर विक्टोरिया टरमिनस पहुंच जाऊंगा और यदि आप एक मोटरकार का इन्तजाम कर देंगे तो मुझे बड़ी खुशी होगी। साथ ही अगर हो सके तो भूलाभाई के साथ ठहरने का इन्तजाम भी कर दें। लेकिन अगर यह सम्भव न हो तो किसी और जगह इन्तजाम कर दें। मैं ज्यादातर आपसे

ही बातचीत करना चाहता हूं और आपको ताजे-से-ताजा समाचार सुनाना

चाहता हूं। मैं बहुत थक गया हूं, पर मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि ऐसे नाजुक समय पर मैं भारत आ सका हूं।[1]

आपका परम प्रिय,
चार्ली एण्ड्रूज

: ६४ :

दिल्ली, १५-११-३७

प्रिय जमनालालजी,

आपके पत्र के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। कमल के कैम्ब्रिज जाने के बारे में सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। मैं चाहता हूं कि अगले वर्ष तक मैं वहां लौट सकूं और उसे कुछ मदद दे सकूं। पहले साल ठीक तौर से अभ्यास करने में बड़ी कठिनाई होती है।

यहां मैं लाला रघुवीरसिंह के पास कुछ दिनों के लिए ठहरा हुआ हूं। इसके बाद अम्बालालजी के पास अहमदाबाद जाऊंगा। बाद में अगर बापू वर्धा में होंगे तो साबरमती जाते हुए मैं उनके पास आकर एक-दो दिन के लिए आपके यहां ठहरना चाहता हूं। लगभग उसी समय लार्ड लोथियन भी बापू से मिलना चाहते हैं। और यह अच्छा होगा अगर उनके ठहरने के समय मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं। वह बड़े सीधे-सादे हैं और केवल एक रात आपके बंगले पर रहना चाहेंगे जिससे वह बापू से दो बार मिल सकें। बापू ने उन्हें इंग्लैंड से आमन्त्रित किया है और लिखा है कि वह भारत आकर सबकुछ खुद देखें और अब वह यही करने आ रहे हैं। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं और मैं आपको आश्वासन दे सकता हूं कि उनके लिए आप क्षणभर भी चिन्ता न करें। वह डाक्टर मॉट की ही तरह होंगे और उन्हींकी तरह खुशो-खुर्रम होंगे। मैं उन्हें लगभग ५ दिसम्बर को यहां दिल्ली में मिलूंगा और फिर आपको फौरन सूचना दूंगा कि वह किस समय वहां आयेंगे। लेकिन इसके लिए कोई खास तैयारियों की जरूरत नहीं होगी।[2]

बहुत प्यार के साथ,

चार्ली एण्ड्रूज

१-२ अंग्रेजी से अनूदित

: ६५ :

कालीकट,
१६-१-३४

पूज्य श्री जमनालालजी,

आपको कई दिनों से पत्र नहीं लिख सका। पहले तो आप प्रवास में थे, इसलिए मुझे आपका पता मालूम नहीं था। रामनारायण के जाने के बाद समाचार-पत्रों को तार आदि भेजने का जो काम वह करते थे, वह मुझे करना पड़ता है। बापूजी किसी कुशल और शरीर से मजबूत आदमी की तलाश करते ही रहते हैं। किन्तु अभी कोई नजर आया नहीं। स्वामी से भी पुछवाया है। आज स्वामी के नाम बम्बई पत्र भिजवाया है। स्वामी वर्धा आये थे, एसा सुना था। किन्तु अभी वहां हैं या नहीं, इसका ठीक पता न होने के कारण यह पत्र गोमतीबहन को भेज दिया है, कारण साथ में गोमतीबहन के लिए भी एक पत्र था।

बापू की तबीयत अभी तो अच्छी है। बंगलोर में डा. सुब्बाराव ने जांच की थी और यह रिपोर्ट दी कि तबीयत बहुत अच्छी है। इस रिपोर्ट को जान-बूझकर अखबारों में नहीं भेजा; कारण अगर लोगों को पता चले कि इतना श्रम करते हुए भी बापू की तबीयत अच्छी रहती है तो काम बढ़ा देंगे। बंगलोर में रक्त का दबाव १५५-१०० था। डा. अंसारी ने वर्धा में जांच करके संतोष प्रकट किया, तब रक्त का दबाव इतना ही था।

रामनारायण के बारे में बापू को काफी संतोष था, किन्तु वह काम का बोझ बर्दाश्त नहीं कर सके। इसलिए अब बापू बीमार कमजोर आदमी को लेने से हिचकिचाते हैं। कहते हैं—'चन्द्र अकेला बीमार है सो काफी है। और बीमारों को कैसे बढ़ाऊं।' कुसुम देसाई ने चाहा था, किन्तु उसने काफी देरी से ऐसा किया। अभी किशन है। पर उसपर बोझ नहीं डाला जा सकता। जी में आये तब थोड़ा काम करता है। ओम् आनन्द में है। हमारे लिए विनोद करने का अच्छा साधन है। बापू के पास पत्र भी लिखती है। मीराबहन को मदद करती है। मीराबहन उसकी फिक्र रखती है; और

थोड़ा उसपर हुक्म भी चलाती है न? हमेशा प्रवास में मीराबहन के पास रहती है। बापू के पास ही सो रहती है। प्रार्थना में गीता पढ़ती है।

यहां शामजी सुन्दरदास नाम के एक गुजराती व्यापारी हैं। आप शायद उनको जानते होंगे। बापू के तत्त्वों को माननेवाले हैं। उनकी बहन वाली नाम की है। उसकी उम्र १८ वर्ष की है। वह करीब डेढ़ वर्ष साबरमती आश्रम में रह चुकी है। लक्ष्मीबहन और रमाबहन जोशी उसे अच्छी तरह से जानती हैं। वह यहां अकेली पड़ जाती है। इसलिए उसके भाई का विचार उसे वर्धा-आश्रम में रखने का होता है। शारीरिक गठन ठीक है, किन्तु आजकल उसकी तबीयत ठीक नहीं रहती। ९९ डिगरी जितना बुखार रहता है। वर्धा में उसकी तबीयत ठीक न रहेगी तो वापस लौट आयेगी। किन्तु बापू का खयाल है कि वहां उसकी तबीयत ठीक हो जायगी। बापूजी ने इस बारे में द्वारकानाथजी को लिखने के लिए कहा था। वह आपके साथ बात करके भाई शामजी को तार से जवाब दें। आपको यह पत्र लिख रहा हूं, इसलिए सीधा आपको ही लिख रहा हूं। आप द्वारकानाथजी से पूछकर जो भी निर्णय करें वह तार से शामजी को सूचित कर दें। उनका पता है—शामजी सुन्दरदास, कालीकट।

स्वामी वहां हों तो उनको मेरा प्रणाम कहेंगे। पूज्य सौ. जानकीबहन को प्रणाम। ओम् की चिन्ता न करें। हम यहां उसे कुछ पढ़ा तो नहीं सकते, किन्तु दूसरी तरह उसे काफी संस्कार मिलते हैं। भाई मदनमोहन आनन्द में होंगे। देवदास और लक्ष्मी कल आये। आज शाम कोयम्बटूर जायंगे। वहां राजाजी से मिलकर मद्रास से दिल्ली जायंगे। ठक्करबापा आज आनेंवाले हैं। मलकानी का चार्ज आज पूरा हुआ। राजाजी ६ तारीख को सवेरे अलग होंगे। उसी शाम बापू तिरुचेंगडु आश्रम पहुंचनेवाले हैं। शंकरलालभाई आज आयंगे। बापू ने मद्रास से तार भेजकर खादी की बातें करने के लिए बुलाया है। आज रात से कोचीन-त्रावणकोर का

प्रवास शुरु होता है। अगला सोम-मंगल का दिन कन्याकुमारी में बिताने का कार्यक्रम है। बापू को बड़ा आनन्द होगा।

सेवक,
चन्द्रशेखर के प्रणाम

: ६६ :

चिदंबरम्, १६-२-३४

पूज्य श्री जमनालालजी,

आपके प्रवास की खबरें अखबारों से मिलती रहती हैं। बापूजी की तबीयत अच्छी है। दो दिन पहले राजाजी के आश्रम में जांच हुई तब वजन १०८ पौंड और रक्त का दबाव १६०–११५ था। डाक्टर राजन् कहते हैं कि यह ठीक है। राजाजी साथ घूम रहे हैं। २१ ता. तक अर्थात् तामिलनाड का प्रवास पूरा होने तक तो साथ हैं ही। उनकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। कहते हैं कि अप्रैल में उन्हें दिल्ली जाना पड़ेगा। जेल में खाट नहीं पकड़नी पड़ी, ऐसी तबीयत रही।

अभी वल्लभभाई आये हैं। इसलिए बापूजी का और मेरा काम ठीक हलका हुआ है। स्वामी द्वारा भेजे हुए हिम्मतलाल नामक एक नये ग्रेजुएट भी आये हैं। सब आनन्द में हैं। ओम् का वजन बढ़ता जाता है। वह हमेशा आनन्द में रहती है। मेरे साथ तो उसका बहुत ही अच्छा परिचय होगया है।

आपकी और पू. जानकीबहन की तबीयत अब अच्छी होगी? म्यूरियल लेस्टर कलकत्ता गईं। वहां से परसों वापस मद्रास आनेवाली हैं। बंगाल जाने का अभी तक अनिश्चित है। ९ मार्च के बाद बिहार जाना होगा, ऐसा लगता है। बिहार के बारे में बात करने के लिए कृपलानीजी मद्रास आनेवाले हैं।[1]

भाई मदनमोहन को सप्रेम वन्देमातरम्।

सेवक,
चंद्रशेखर के प्रणाम

---

[1] गुजराती से अनूदित

: ६७ :

साबरमती, २८-१०-२७

मुरब्बी श्री जमनालालजी की सेवा में—

इस पत्र के साथ आपकी जानकारी के लिए पिछले वर्ष का आंकड़ा और अगले वर्ष का बजट भेजता हूं। अवकाश मिलने पर देख जायं और कोई सूचित करने जैसी बात हो तो सूचित करें।

हिसाब पृष्ठ २ से आप यह देख सकेंगे कि असल में खादी का काम करने के लिए पैसा नहीं है।

इअरमार्क (निर्धारित) की गई करीब २१ हजार रुपये की रकम भी काम में आ चुकी है। कल मण्डल की बैठक में आपके घर-सम्बन्धी चर्चा हुई थी। उसके विषय में आपको मुरब्बी मगनलालभाई रूबरू खुलासा करेंगे। आप अजमेर में खादी-सभा के समय आवेंगे तब वह आपसे मिलेंगे ही और इस संबंध में विगत से चर्चा करेंगे। अपने नये घर में ५ हजार २१ और पुराने घर में प्लास्टर, खिड़की, दरवाजे बनाने में ५४३ रुपये खर्च हुए हैं, सो उस खाते में अभी जितना रुपया भेजा जा सके उतना मेहरबानी करके शीघ्र भेज दीजियेगा। पूज्य बापू की कोठरी के सामने दोनों ओर दो बड़े चबूतरे बापूजी के यहां आने के पहले ही बनवा लेने हैं। उनमें १५ सौ रुपये खर्च होने का अनुमान है। आंकड़े और बजट पर से आश्रम की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगा सकेंगे। इससे अधिक और कुछ नहीं लिखना है।

पूज्य बापूजी से मिलने के लिए आज बम्बई जा रहा हूं। वहीं गो-रक्षा के सम्बन्ध में भी सारी बातें कर लूंगा।

तकलीफ के लिए माफी चाहता हूं।[1]

लि.

छगनलाल जोशी का सविनय प्रणाम

१ गुजराती से अनूदित

: ६८ :

बम्बई, ४-२-१८

प्रिय जमनालाल,

आप मेरी संस्था के कुछ उद्देश्यों का पालन करेंगे, अतः आप मेरेलिए पुत्र के समान हैं। और आप श्रीमती बोस की निगरानी माता के समान करेंगे। मैं आपको आशीर्वाद देता हूं—आप दिन-पर-दिन महानतर बनें, और हमारे प्रिय देश की सेवा करें। मैं आपको सत्कार्यों के लिए समर्पित करता हूं, क्योंकि आप मेरेलिए पुत्र के समान हैं।[1]

आपका,
जे. सी. बोस

: ६९ :

कलकत्ता, ८-४-१८

प्रिय जमनालाल,

आप वर्धा से बाहर चले गये थे और आपके लौटने तक मैंने पत्र लिखना स्थगित रखा। घी तथा संतरों के लिए धन्यवाद। वे बहुत ही अच्छे थे।

मुझे यह कहते अफसोस होता है कि बम्बई में जिस दो लाख की थैली का वादा हुआ था उसके बारे में मुझे कोई सूचना नहीं मिली। मुझे कहा गया है कि सिर्फ ४७ हजार रुपये के करीब जमा हुए हैं, ज्यादा नहीं। चूंकि मेरी पूछताछ का कोई जवाब नहीं मिलता, इसलिए मैं सोचता हूं कि अच्छा यही होगा कि जो कुछ थोड़ी रकम मिली है वह मुझे भेज दी जाय। मैंने बम्बई के चन्दे की ताकत पर संस्था के विकास की योजनाएं बनाई थीं, और अब मैं देखता हूं कि वह आशा के अनुकूल नहीं हो सका।

मैं नहीं चाहता कि मैं अपनी पत्नी अर्थ भावी व्यवस्था के लिए किसी प्रकार का कोई लाभ लूं। इसलिए मुझे प्रसन्नता होगी यदि आप संस्था के लिए अपना चन्दा भेज देंगे। यह रकम या तो मुझे भेजी जा सकती है या इसे आप मेरे नाम संस्था के संचालक की हैसियत से कहीं अच्छे रूप में लगा दें और उससे जो आमदनी हो उसे यहां नियमित रूप में

[1] अंग्रेजी से अनूदित।

भेजने की व्यवस्था कर दें। मुझे अफसोस है कि मेरे यहां के काम में बड़ी कठिनाइयां पैदा होगई हैं, क्योंकि जिन चन्दों का वादा किया गया था वे अदा नहीं किये गए।

मैं एक छोटी-सी घड़ी, जिसे मैं खुद पहना करता था, आपकी छोटी लड़की के लिए भेज रहा हूं और आपके पुत्र के लिए एक छोटा अन्वीक्षण यंत्र भी।

आपको तथा आपके परिवार को आशीर्वाद।[1]

आपका शुभाकांक्षी,
जे. सी. बोस

: ७० :

दार्जिलिंग, १४-९-१९

आशीर्वाद,

आपका पत्र पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। अब मैं दार्जिलिंग में हूं, और यहां इस महीने के अन्त तक ठहरूंगा। मैं अक्तूबर के मध्य में इंगलैंड के लिए रवाना होने के पहले खासतौर से आपसे मिलना चाहता हूं। क्या आप इस महीने के अन्त तक कलकत्ता आ सकते हैं? अगर आप जल्दी आ सकें तो दार्जिलिंग आ जाइये, मैं आपके यहां ठहरने का इन्तजाम कर दूंगा।

आप मेरेलिए पुत्र के समान हैं, और मुझे यह सोचकर प्रसन्नता होती है कि कम-से-कम मेरा एक व्यक्ति तो ऐसा है जो अधिक-से-अधिक देश की सेवा कर सकता है। मैं आपको वह कारण बताऊंगा जिससे मेरा इंग्लैण्ड जाना जरूरी होगया है। मुझे यात्रा पसन्द नहीं है, क्योंकि सर्दी के मौसम की ठण्ड और अन्य कठिनाइयों का असर मेरी तन्दुरुस्ती पर पड़ेगा, लेकिन अपनी संस्था के हित के लिए मुझे सभी कठिनाइयों का सामना करना ही होगा। संस्था में जो वैज्ञानिक अनसन्धान किये गए हैं, उन्होंने बड़ी दिलचस्पी पैदा कर दी है, और इस संस्था के भविष्य के लिए सबकुछ अनुकूल है। सरकार अब इस बात पर विचार कर रही है कि इसे जो

[1] अंग्रेजी से अनूदित

सहायता दी जाती है वह स्थायी कर दी जाय या नहीं। मेरा खयाल है कि वह अनुदान की रकम बढ़ाकर ८० हजार रुपये सालाना कर देने के लिए राजी है बशर्ते कि इससे आधी रकम अर्थात् ४० हजार रुपये सालाना उसे सार्वजनिक रूप में मिल जायं। इसके लिए ५ लाख रुपये का निर्धारण और करना पड़ेगा।

सरकार इस बात से निराश है कि जो उसके देश के लिए गौरव का विषय है, जनता उसकी उपेक्षा करती है। मुझे कहा गया है कि मारवाड़ी समाज ने युद्ध के समय बहुत रुपया कमाया है और आप जैसे अपवादों को छोड़कर उन्होंने इस राष्ट्रीय कार्य में मदद नहीं दी। अगर देश के लोग काफी दिलचस्पी नहीं लेंगे तो सरकार से कुछ भी आशा नहीं की जा सकती।

मैं भारतमन्त्री से मिलने और अपनी संस्था का वर्तमान अनुदान जारी रखवाने के वास्ते सरकार की अनुमति के लिए अनुरोध करने इंग्लैंड जा रहा हूं। मैं अंग्रेजों से कोई मदद नहीं मांगूंगा, क्योंकि वह हमारे देश के लिए लज्जा की बात होगी। मैं सिर्फ अपनी सरकार से मदद मांग सकता हूं। पर जबतक कि हम भारतमन्त्री को यह आश्वासन न दे दें कि हमारे लोग आगे बढ़ रहे हैं तबतक वह विशेष कुछ न कर सकेंगे।

फिर भी मुझमें जो भी शक्ति है उसके अनुसार काम करूंगा और बाकी भगवान पर छोड़ दूंगा।

मुझे आशा है कि मैं अपनी लम्बी यात्रा पर रवाना होने के पहले आपसे मिलूंगा। कृपया वापसी डाक से पत्र भेजें।

आपके कल्याण के लिए मेरी शुभाकांक्षा।[1]

आपका शुभचिन्तक,
जे. सी. बोस

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

: ७१ :

दार्जिलिंग, २३—७—२५

आशीर्वाद।

मैं शनिवार को सुबह कलकत्ता लौट रहा हूं। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि आप वर्धा लौटने से पहले मुझसे मिलने आयेंगे। मैं आपके वर्तमान और भावी कार्य के बारे में बहुत-कुछ सुनना चाहता हूं।

मुझे इस बात से भी खुशी है कि शीघ्र ही एक अखिल भारतीय देशबन्धु स्मारक शुरु किया जानेवाला है। जबतक इस देश में सेवा के लिए देशबन्धु के समान अपना सर्वस्व प्रदान करनेवाले नहीं होंगे, तबतक कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। उनके सम्मान में स्मारक बनाने से उनके आत्म-त्याग का उदाहरण देशवासियों के मस्तिष्क में सजीव बना रहेगा।

आपने देखा होगा कि भारत को उसके प्राचीन गौरव पर आसीन करने के लिए जो भी प्रवृत्तियां चल रही हैं उनकी सफलता के लिए मुझमें पूरा उत्साह है। फिर भी मैंने केवल एक मार्ग का अनुसरण किया है और वह है ज्ञान-प्रसार का। मैंने यह महसूस किया है कि पूर्ण एकाग्रता के द्वारा ही जो कुछ थोड़ा-बहुत मैं कर सका हूं, कर सकता हूं और कार्य को आगे बढ़ा सकता हूं। दस वर्ष पहले मैंने यही प्रतिज्ञा की थी और इसका पालन मुझे करना है। मेरी व्यक्तिगत भावना तो जनता पर अपनेको लादने की नहीं है और मैं इसके प्रति बड़ी अनिच्छा रखता हूं। किन्तु जिस काम के लिए मैंने वर्षों का समय और अपना विचार लगाया है, केवल उसी हैसियत से काम में लगा रहना चाहता हूं।

मेरा विश्वास है कि भारत की मुक्ति अकेले ज्ञान से नहीं हो सकती, और न केवल राजनीति से। इसी प्रकार सामाजिक सेवा के द्वारा भी यह कार्य संपन्न नहीं किया जा सकता। परन्तु इन सबके सम्मिलित प्रयत्न से यह कार्य सिद्ध हो सकता है। इनमें से प्रत्येक की समस्या बड़ी कठिन है, और इसके लिए अन्धकार में से प्रकाश खोजने का प्रयत्न सारा जीवन लगाकर करना पड़ेगा। हममें से कुछको एक ही दिशा में सारे प्रयत्न लगा देने होंगे, फिर भी

मन को सावधान और सचेतन रखना पड़ेगा और सभी दिशाओं में सहानुभूति का विस्तार करना होगा। इन सबके अलावा हम सबको उस महान कार्य के लिए आत्मसमर्पण कर देना होगा जोकि मानवता के स्तर को ऊपर उठानेवाला है।[१]

आपका शुभचिन्तक,
जे. सी. बोस

: ७२ :

कलकत्ता, २७-८-२५

प्रिय जमनालाल,

ग्रामोद्योगों को फिर से जीवित करके आप जिस देश-सेवा में लगे हैं, उसके प्रति मैं अपने गर्व और प्रशंसा के भाव भलीभांति व्यक्त नहीं कर सकता। कर्तव्य की पुकार के प्रति आपने सबकुछ दे दिया है। आपके आदर्श का अनुसरण सभी करें, यह मैं चाहता हूं।[२]

आपका शुभचिन्तक,
जे. सी. बोस

: ७३ :

कलकत्ता, २२-२-२६

प्रिय जमनालाल,

आशीर्वाद। हमें इस बात की खुशी है कि प्रिय कमला का विवाह-सम्बन्ध शीघ्र होनेवाला है। हम उसे अपना आशीर्वाद भेजते हैं। आपने एक ऐसे ऊंचे कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित किया है, जिसमें मैं आपकी सफलता चाहता हूं। आपकी सन्तान के लिए सबसे बड़ी देन यह है कि वह अपने माता-पिता का अनुकरण करे।

बंगाल के रेशम-निर्माताओं की बनाई हुई एक छोटी-सी स्वदेशी भेंट मैं भेज रहा हूं, जिसका रेशम भी एक स्थानीय उत्पादन है। अगर कमला इसको कभी-कभी पहनेगी तो हमें बड़ी खुशी होगी। यह पार्सल महात्माजी की मार्फत साबरमती भेजा गया है। मुझे जिनेवा के राष्ट्र-संघ में बौद्धिक

[१-२] अंग्रेजी से अनूदित।

सहयोग सभा में भाग लेना है और मैं 'रजमक' (पी. एण्ड ओ. स्टीमर) द्वारा यूरोप जा रहा हूं। यह स्टीमर बम्बई से २० मार्च को रवाना होगा। यदि आप उस समय बम्बई के निकट हों तो हम आपसे मिलकर बहुत खुश होंगे।

हमारी शुभेच्छा और आशीर्वाद के साथ[1]

जे. सी. बोस

: ७४ :

सेंट्रल जेल,
नासिक, ३-११-३०

प्रिय सर बोस,

कुछ समय पहले मुझे समाचारपत्र से ज्ञात हुआ कि श्रीमती बोस तथा आप विदेश से लौट आये हैं। आपको मालूम हुआ होगा कि मुझे दो साल की सख्त सजा और ३०० रुपये जुर्माना और उसके न देने पर बदले में १॥ महीने की और सजा हो चुकी है, और मैं यहां उसे भोग रहा हूं। मैं सत्याग्रह आरम्भ करने के दूसरे दिन अर्थात् ७ अप्रैल को गिरफ्तार हुआ था। भगवान की कृपा से और मित्रों के आशीर्वाद से मैं अपनी सजा के दिन खुशी और साहस के साथ गुजार रहा हूं और अपना अधिकांश समय पढ़ने-लिखने और कताई में बिता रहा हूं।

आज मेरा जन्म-दिवस है और मैं अपना ४१वां वर्ष पूरा कर चुका। क्या मैं इस अवसर पर श्रीमती बोस और आपसे आशीर्वाद प्राप्त करने की चेष्टा करूं? मुझे निश्चय है कि मित्रों के आशीर्वाद से मुझे देश-सेवा की अभीष्ट शक्ति प्राप्त होगी और मैं भारतमाता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकूंगा।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि वह भारतमाता को अत्याचारी शासन से मुक्त करे और मानव-जाति को उसके सर्वोत्तम वरदान के साथ शान्ति एवं समृद्धि प्राप्त हो।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

आप दोनों को मेरा प्रणाम ।[1]

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

: ७५ :

कलकत्ता, २९-६-३७

प्रिय जमनालाल,

आशीर्वाद । मैं आपके पुत्र और पुत्र-वधू के लिए दीर्घ और सुखी जीवन की शुभ कामनाएं भेज रहा हूं। मातृभूमि की सेवा में वे आपके चरण-चिह्नों का अनुसरण करें, इससे अधिक मैं और कुछ नहीं लिख सकता ।

मुझे खेद है कि मैं कल व्यक्तिगत रूप में उपस्थित न हो सकूंगा । हाल की बीमारी के कारण डाक्टर ने मुझे आदेश दिया है कि मैं किसी प्रकार के समारोह में भाग न लूं ।[2]

आपका शुभाकांक्षी,
जे. सी. बोस

: ७६ :

दार्जिलिंग, २४ मई

हिमालय के इस अंचल से आपको अभिवादन । हम लोग दार्जिलिंग आगये हैं और यदि आप यहां आ सकें तो हमें बड़ी खुशी होगी । सर जे. सी. बोस अपने भाषण लिखने में बहुत व्यस्त हैं, लेकिन उनकी तन्दुरुस्ती अच्छी है। यहां बारिश बहुत हो रही है और सूर्य के दर्शन कभी-कभी ही होते हैं। पर हमें आशा है कि शीघ्र ही मौसम साफ हो जायगा ।

जुलाई में हम वापस लौटेंगे, इसलिए अगर आप आ सकें तो जून में यहां आ जायं । हमें आपको यहां पाकर बहुत प्रसन्नता होगी । आशा है कि आप अच्छे होंगे और आपके बच्चे भी ।

आशीर्वाद-सहित,[3]

अबला बोस

१-२-३ अंग्रेजी से अनूदित

: ७७ :

कलकत्ता, २५-३-१८

प्रेमपूर्ण अभिवादन,

आपके पत्र का हमने बड़ा स्वागत किया। मैं आपको लौटते ही तुरन्त जवाब लिखना चाहती थी, क्योंकि हम आपको बहुत-सी बातों के लिए धन्यवाद देना चाहते थे। हम चाहते थे कि वर्धा से गुजरते समय आपके छोटे पुत्र और पुत्री को देखते। ये बड़े सुन्दर बच्चे हैं। भगवान उन्हें आशीर्वाद दे, और उन्हें अपने पिता के समान ईमानदार और सच्चा बनाये। हम चाहते हैं कि भारत माता का हर बच्चा ऐसा ही बने।

यद्यपि मैंने आपको नहीं लिखा, लेकिन हम आपके सम्बन्ध में लगातार विचार करते रहे हैं। आप जैसों का परिचय पाकर जीवन सुखी हो जाता है।

बाहर से लौटने पर मेरे पति बीमार होगये और लगभग एक सप्ताह चारपाई पर पड़े रहे। अब वह अच्छे होगये हैं और उन्होंने हमारे यहां साहित्यिक समाज में बंगला में दो व्याख्यान दिये हैं। इन भाषणों का बड़ा आदर हुआ है और वे पुस्तकाकार प्रकाशित होंगे। वह सदैव ही घिरे रहते हैं और विज्ञान-संस्था तथा अपने अन्वेषण-कार्य में लगे रहते हैं।

८ अप्रैल को हम दार्जिलिंग जा रहे हैं और वहां जून के अन्त तक रहेंगे। आपने घी भेजकर बड़ी कृपा की। वह समय पर आ गया और चूंकि शुद्ध घी बहुत कम मिलता है, इसलिए आपके इस तोहफे की बहुत ज्यादा कदर की गई। मेरे पति आपको शीघ्र ही लिखेंगे। आपको तथा बच्चों को वह हम दोनों के आशीर्वाद। हमारी हार्दिक शुभेच्छा के साथ[1]

अबला बोस

पुनश्च : कृपया हमें पत्र लिखते रहें और जब कभी हो सके तो समाचार देते रहें।

[1] अंग्रेजी से अनूदित

: ७८ :

बोर्स इन्स्टीट्यूट,
कलकत्ता, १६-२-३८

प्रिय जमनालालजी,

लगभग ३ मास हुए जबकि वह महान आत्मा, जिसकी सेवा करने का सौभाग्य भगवान ने मुझे पत्नी के रूप में प्रदान किया था, इस संघर्षमय संसार से चल बसी। वह अपनी मातृभूमि को भगवान के ही समान प्रेम करते थे और उनका उद्देश्य जीवन में यही था कि वह भारत को उसका पूर्व गौरव प्राप्त करा सकें। यद्यपि उनका शरीर चला गया, किन्तु उनकी आत्मा उन सबको देख रही है और उन्हें आशीर्वाद दे रही है, जोकि मातृभूमि की सेवा में लगे हुए हैं।

आपके प्रेमपूर्ण स्मरण के लिए धन्यवाद[1]

अबला बोस

: ७९ :

देवली डिटेंशन कैंप, (राजस्थान)
२५-५-४१

प्रिय दामोदरदासजी,

आपका १५ ता. का पत्र मिला, अनेक धन्यवाद। काकाजी[2] के स्वास्थ्य का हाल सुनकर चिन्ता हुई। आशा है, डा. दास के इलाज से उन्हें लाभ होगा। जब फिर आप उनसे जेल में मिलें तो मेरा प्रणाम उन्हें दे देंगे।

मेरा स्वास्थ्य पहले ही जैसा है। मैं भी बापूजी का इलाज शीघ्र शुरू करनेवाला हूं।

सेवाग्राम आप जायं तो बापूजी को मेरा प्रणाम कह देंगे और अमृतकौरजी को भी। अगले सप्ताह मैं उन्हें पत्र लिखूंगा।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित [2] जमनालालजी बजाज

आशा करता हूं, आप अच्छी तरह होंगे। वहां श्री जानकीदेवी को मेरा प्रणाम देंगे।

आपका,
जयप्रकाश

: ८० :

सेवाग्राम, २१-७-४१

पूज्य श्री काकाजी की सेवा में,

आपका आशीर्वादी पत्र आज मिला। इलाहाबाद से मजिस्ट्रेट की इजाजत जयप्रकाश से मिलने के लिए आगई है, इसलिए मैं यहां से २६ ता. को देवली जाऊंगी, और जयप्रकाश से मुलाकात करके यहां फिर ३१ ता. को वापस आऊंगी। बापूजी को सब खबर बताकर फिर मैं तुरन्त १ या २ ता. को पटना चली जाऊंगी। देवली से वापस यहां होकर पटना जाने के लिए बापू ने कहा है। वहां से वापस आकर जो कुछ हाल होगा, मैं आपको भी सविस्तर लिखूंगी।

यहांका सब हाल अच्छा है। बापूजी की तबीयत अच्छी है। परसों से बापूजी को थोड़ी शान्ति है, क्योंकि अब मिलनेवाले कोई नहीं हैं। परसों बिड़लाजी भी चले गये। पू. बा की तबीयत ठीक है। बहन मदालसा की तबीयत बहुत अच्छी है। पू. काकीजी भी अच्छी हैं। खानसाहब की तबीयत अभी अच्छी नहीं हुई है। दांत का दर्द तो अच्छा होगया, लेकिन बुखार ९९ रहता है। पता नहीं क्या कारण है।

आपके आशीर्वाद की आशा रखती हूं।

आपकी पुत्री,
प्रभावती (जयप्रकाश)

: ८१ :

सेवाग्राम, २-८-४१

परम पूज्य काकाजी की सेवा में,

देवली में जयप्रकाश से मुलाकात हुई। और सब हाल अच्छा है। उनकी

तबीयत साधारणतः तो ठीक है। ऐसे कुछ तकलीफ नहीं है, लेकिन उनकी तबीयत वहां अच्छी नहीं रहती है। देवली की आबहवा ठीक नहीं है। उनके पैर और कमर का दर्द वहां ज्यादा बढ़ गया है। और वहांपर कुछ चिकित्सा भी नहीं हो सकती, इसके लिए मुझे बड़ी चिन्ता है। बापूजी की राय से मैंने कल यू. पी. सरकार को पत्र लिखा है कि उनकी तबीयत के इलाज के लिए देवली से उनको बम्बई या कहीं दूसरी जगह पर भेज दें। देखें क्या जवाब आता है। जयप्रकाश ने आपको प्रणाम कहा है और आपकी तबीयत की खबर पूछ रहे थे। राजा के बारे में आपसे मेरी जो बातें हुईं, सो मैंने उनको बता दी हैं। जयप्रकाश ने राजा को पत्र लिखा था, लेकिन उनको राजा ने कोई उत्तर नहीं दिया, ऐसा कहते थे। खानसाहब भी आज मेरे ही साथ पेशावर जा रहे हैं। उनकी तबीयत अब अच्छी है। बापूजी की तबीयत अच्छी है।

बहन मदालसा व काकीजी अच्छी हैं। मैं २६ ता. को जेल में रामकृष्ण से मिली थी, अच्छे हैं।

अब आपकी तबीयत कैसी है? अपनी तबीयत का समाचार लिखियेगा। पटना पहुंचने पर जो कुछ हाल होगा मैं आपको सब लिखूंगी।

आप मुझे वर्धा के पते पर ही पत्र लिखियेगा; क्योंकि १५ ता. को तो फिर मुझे वर्धा पहुंच ही जाना है।

आपके पत्र का राजा ने जो उत्तर आपको लिखा, वह मुझे देखने के लिए जरूर भेज दीजियेगा। राजकुमारी बहिन से मेरा प्रणाम। आज जल्दी में उनको पत्र नहीं लिख रही हूं क्योंकि यह पत्र मैं स्टेशन पर से लिख रही हूं।

आपकी पुत्री,
प्रभा का सा. प्रणाम

: ८२ :

दिल्ली, ३०-१०-३८

प्रिय जमनालालजी,

कुमारी फिलिपस्वर्न ने कल मुझसे संयोगवश कहा कि आपने मेहरबानी

करके दोसौ रुपया मेरे इलाज में खर्च करने के लिए भेजा है। आपकी इस मेहरबानी के लिए मैं किस तरह शुक्रिया अदा करूं ? और साथ ही उस खयाल और सोच-विचार के लिए भी, जिससे प्रेरित होकर आपने यह रकम भेजी। मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ और आपको यह आश्वासन देने की जरूरत नहीं कि मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा।

लेकिन मुझे आपके साथ सच्चाई का बर्ताव करना है और अपनी बीमारी को रुपया जमा करने का साधन नहीं बनाना है। आपरेशन और उसके बाद का इलाज सचमुच बहुत मंहगा हो जाता है और मेरे जैसे आर्थिक स्थितिवाले के लिए तो और भी ज्यादा; लेकिन मेरे छोटे भाई ने, जिनकी आर्थिक हालत अच्छी है अपनी रकम मेरे इलाज के लिए दी और मेरे मेहरबान दोस्त डाक्टर के. ए. हमीद ने बम्बई में ठहराने का बहुत अच्छा और आरामदेह इन्तजाम किया। ऐसी हालत में कुमारी फिलिपस्बर्न आपके भेजे हुए रुपये को उस काम के लिए इस्तेमाल नहीं करेंगी, जिसके लिए ये थे। इस तरह यह एक बचत हो जायगी। हालांकि इस तरह के कामों में बचत करना बहुत मुनासिब नहीं जंचता। इसलिए मैं बहुत मशकूर हूंगा अगर आप मुझे या कुमारी फिलिपस्बर्न को यह इजाजत दे देंगे कि हम इन रुपयों का इस्तेमाल जामिया के किसी और जरूरी काम अथवा आपके सुझाव के मुताबिक कहीं और करलें।

आप यह जानकर खुश होंगे कि अब मैं अच्छी तरह हूं और ३ नवम्बर को बम्बई से चला जाऊंगा। थोड़े दिनों के लिए मैं अपने छोटे भाई के साथ हैदराबाद ठहरूंगा और नवम्बर के मध्य तक वर्धा आकर आपके दर्शन करूंगा।

आपकी मेहरबानी के लिए एक बार फिर धन्यवाद।[1]

आपका,
ज़ाकिर हुसेन

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

: ८३ :

वर्धा, ९-११-३८

प्रिय ज़ाकिर साहेब,

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि अब आप अच्छे हैं और हवा-पानी बदलने के लिए बम्बई से हैदराबाद चले गये हैं। जब आप हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की बैठकों में शामिल होने के लिए वर्धा आयेंगे तो मुझे आपको देखकर खुशी होगी। मैं २० तारीख को बम्बई से लौटूंगा। रही वह छोटी-सी रकम, जोकि मैंने आपके खानगी इस्तेमाल के लिए भेजी थी, उसके बारे में मैं यही चाहूंगा कि हाल में उसकी जरूरत न होने पर भी आप उसे उसी शक्ल में रखलें। आपकी तन्दुरुस्ती की मौजूदा हालत में यह जरूरी है। आप अपनी आंखों पर ज्यादा जोर न डालें।

मुझे आपके हैदराबाद के पते की जानकारी नहीं थी, इसलिए मैं इसके पहले जवाब नहीं दे सका।[1]

आपका,
जमनालाल बजाज

: ८४ :

दिल्ली, ५-१-३६

मुरब्बी जमनालालजी,

यहां से ३६ मील दूर पथरिया नामक गांव में एक भाई ने सिलाई का यंत्र (मशीन) बनाया है, पर उसे कोई प्रोत्साहन नहीं देता, ऐसा एक मित्र से सुना है। मैंने उसे कहला दिया है कि अगर ऐसा हो तो उसे देश अपनायेगा, इसका मुझे विश्वास है।

इससे वह भाई उस मित्र के साथ गत २७ तारीख को मेरे पास आये। उनसे बातचीत करने से मालूम हुआ कि वह खास रत्नागिरि के निवासी हैं। यहां तो वह अपनी विधवा बहन के परिवार की मदद के लिए रहते हैं।

मैंने वह मशीन, उसका काम और उनके पास जो कागजात थे वे देखे।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

उनका नाम विनायक महादेव वैद्य है। मैं उनके यहां गया। उनकी स्थिति गरीबी की है। मशीन का अधिकांश भाग उन्होंने यहीं एक सुनार की मदद से पीतल ढालकर बनाया है और फिर उसे श्री नरसिंह चिन्तामणि केलकर की सहायता से १९२४ में सरकारी तौर पर पेटेंट भी करा लिया है। सरकारी जांच से मालूम हुआ है कि यह मशीन अन्य सिलाई मशीनों की अपेक्षा सरलता से चलती है। इसकी गति अधिक है और इसकी सिलाई मजबूत होती है। इसका पेटेंट नं. १९२४ का १०३११ है।

१९२२ में ये इसे गया-कांग्रेस में प्रदर्शित करने के लिए ले गये थे और वहां इन्हें स्वर्णपदक मिल चुका है। श्रीनिवास आयंगर और राजेन्द्रबाबू के सर्टिफिकेट भी मैंने इनके पास देखे हैं। गांधीजी ने 'हिन्दी नवजीवन' ७ मई, १९२२ के अंक में ऐसे यंत्र की खोज आवश्यक कहकर उनको प्रोत्साहित किया था।

इंजीनियरों की राय है कि सामूहिक रूप में यथोचित धातु से बनाने पर यह मशीन ३० रु० की लागत में तैयार हो जायगी।

मुझे दुःख हुआ कि इस परतंत्र देश में इस चीज की कद्र नहीं हो रही है, जबकि हर वर्ष यहां ७५ लाख रुपये की सिलाई मशीनें विदेशों से आती हैं।

ये भाई ग्राम-उद्योग-संघ को इस मशीन का पेटेंट देने को तैयार हैं। इस मशीन को बनाने में उनपर कुछ कर्ज होगया है। यदि संघ तैयार हो तो ये भाई मेरे साथ आपके पास वर्धा आने को तैयार हैं।

इसके बारे में क्या किया जाय, सलाह दीजियेगा।[1]

लि.

जेठालाल गोविन्दजी का वन्देमातरम्

: ८५ :

बम्बई, २५-१०-३४

प्रिय जमनालालजी,

जबसे यहां आया तबसे आपके बारे में बहुत विचार कर रहा था

---

[1] गुजराती से अनूदित

और यह सोच रहा था कि आप कब आयेंगे, परन्तु कल यह मालूम करके निराशा हुई कि अब आप कांग्रेस के बाद ही आयेंगे।

जाजूजी मदालसा की अच्छी खबर लाये हैं और हमें आशा है कि अब वह जल्दी अपनी खोई हुई ताकत फिर से प्राप्त कर रही है।

कांग्रेस के सम्बन्ध में हमें अपना पहला अनुभव बड़ा दिलचस्प लग रहा है और यह बड़ी खुशी की बात है कि हमने यह मौका हाथ से जाने नहीं दिया।

मेरी डेलिगेट टिकट और मध्यप्रदेश के तीन और व्यक्तियों के ऐसे ही टिकटों के बारे में कुछ असमंजस था, परन्तु अब ऐसी सम्भावना लगती है कि उन्हें टिकट मिल जायगा। हमें आशा है कि आपको वहां शान्ति से समय गुजारने का मौका मिलता होगा और अब तन्दुरुस्ती पहले से अच्छी होगी।[१]

आपका,
डंकन

: ८६ :

भगवद्-भक्ति आश्रम,
रेवाड़ी, ६-१०-३८

भाई जमनालालजी,

जोग नन्दकिशोर के ॐ जयश्रीकृष्ण की। आशा है, आप आनन्द से होंगे। गांवों का और गरीब कृषकों का काम, जो कि ग्राम-सुधार का एक खास कार्य है, आपने समझकर अपने हाथ में लिया और मेरे को आपसे इस कार्य में काफी सहायता का खयाल होगया है।

उस रोज दैवयोग से घनश्यामदासजी मिल गये और मैंने उनसे जिक्र किया। उन्होंने अपनी तसल्ली के लिए चरागाह देखने मि. श्यामलाल एम. ए. और एक पिलानी और एक उसी जिले के आदमी, जहांपर चरागाह है, देखने को भेजे। उनके देख आने पर घनश्यामदासजी को तसल्ली होगई और

[१] अंग्रेजी से अनूदित

उन्होंने कहा कि इस समय पिलानी में ३०० गायें हमारे पास है, २०० और गांवों में सून्नी डोल रही हैं, उन्हें इकट्ठी करके, कुल ५०० गायें हम चरागाहों में भेज देंगे और एक हजार गायें पिलानी के जमींदारों के यहां उनके मालिकों के साथ पहुंचा दी जायं, जैसे कि डालमिया दादरी से जा रहे हैं। जमींदारों (काश्तकार) की गायें, जिनके मालिक स्वयं साथ में होंगे, को चरागाहों में भिजवाने में अषाढ़ तक कोई १००० गायों पर अन्दाजन ६००० रु० रुपये खर्च होंगे।

घनश्यामदासजी से मैंने कहा था कि भाई जमनालालजी ने आपके सामने कहा था कि जब एक आदमी इन्टरेस्ट लेता है तो फिर दूसरा आदमी उस काम में क्यों लगे ? सो आप इस काम में सहयोग दें। उन्होंने कहा कि मैं तो सिर्फ पिलानी की गायों के वास्ते कर सकता हूं, और काम करन के वास्ते मेरे पास टाइम नहीं है।

भाई ! आप तो घनश्यामदासजी के जुम्मे कर गये और घनश्यामदासजी को पिलानी गांव के सिवाय और फुरसत नहीं। हारकर पूज्य महात्मा गांधीजी महाराज के पास जाना पड़ा। उनको नृत्य (डान्स) दिखाकर प्रसन्न करके, जैसे देवताओं ने मिलकर भगवान महादेव को पृथ्वी को गो रूप में आगे करके कृष्ण को पुकार सुनाई थी, ऐसे ही सुना दी।

महात्माजी का मौन था इससे बोले तो नहीं, लेकिन अपने नजदीक खड़ा करके बहुत प्रसन्नचित्त से तमाम बातें सुनीं। आखिर में हमने यह निवेदन किया कि इस बात को आप तक पहुंचाना, और भी जो कुछ बने, सो करना हमारा फर्ज है। अब आप जो भी कुछ उचित समझें करें। सो महात्माजी ने अपने हाथों से और हाव-भाव से ऐसे इशारे किये, जिससे हम यह समझे कि जैसे और बड़े काम उनके सामने हैं उसी तरह एक और भी काम उन्होंने समझ लिया है।

बाकी आपके पास कुछ और खबर आई होगी ? लिखने की कृपा करें।

आखिर में महात्माजी के चरणों की रज अपनी आंखों में लगाकर,

उनसे आज्ञा लेकर दस-बारह साधुओं की मंडली ने, सूरज तथा कमला सहित, जो डेपूटेशन में गय थे, देहली में आकर भोजन किया। मन में आया था कि महात्माजी के अतिथि बनें, लेकिन आपका थोड़ा डर लगा कि आप हमको अव्यावहारिक कहने लग जावेंगे।

शेष आनंद मंगल है। और सबकी तरफ से सादर ॐ जय श्रीकृष्ण की।

नन्दकिशोर भगत

: ८७ :

वर्धा, १९-१०-३८

प्रिय श्री नन्दकिशोरजी,

६-१०-३८ का पत्र मिला। शेखावाटी के अकाल-पीड़ित पशुओं को चराई का युक्तप्रांत के पश्चिमी जिलों में प्रबन्ध करने के सम्बन्ध में श्री पन्तजी का पत्र मिला है, जिससे मालूम होता है कि बुलन्दशहर, मेरठ तथा मथुरा जिले में ऐसे चरागाह नहीं हैं, जहांपर अधिक संख्या में पशुओं का प्रबन्ध हो सके। श्री पन्तजी इस सम्बन्ध में पूछताछ कर रहे हैं। झांसी के आसपास के जिलों में प्रबन्ध अवश्य हो सकता है। वहां के फॉरेस्ट आफिसरों को हिदायत कर दी गई है कि वे राजपूताना की तरफ से पशुओं को जंगलों में आने दें। यदि मेरठ के आसपास भी चरागाह होंगे तो पन्तजी सूचना करनेवाले हैं। इन जिलों में सूखा पड़ा है, अतएव इस बात की सम्भावना कम है।

आपका,
जमनालाल बजाज

: ८८ :

अकोला, ९-१२-३४

परम स्नेही भाईजी,

आपको पत्र लिखना चाहिए, यह महसूस होने पर आपको लिख रहा हूं, अन्यथा आप जैसे प्रसिद्ध पुरुषों को पत्र लिखकर उनका समय खराब करने की वृत्ति मेरी नहीं है।

कुछ रोज पहले सुना कि आप चरखा-संघ से त्यागपत्र देनेवाले हैं। बाद में यह सुना कि आप सब प्रवृत्तियों से अलग होना चाहते हैं। सारी संस्थाओं से त्यागपत्र देनेवाले हैं।

उक्त बातों को सत्य मान लेने का मन नहीं हुआ। पर तारा यहां आई थी। उससे जब यह सुना कि आप अपने स्वास्थ्य की दृष्टि से एक वर्ष तक सब प्रवृत्तियों से अलग होना चाहते हैं, तो मुझे इसमें कोई अयोग्यता नहीं दिखी। बल्कि यह निर्णय सर्वथा योग्य है, ऐसा मैंने मान लिया।

परन्तु कल कुछ बातें ऐसी सुनीं जिससे उस निर्णय की योग्यता पर मुझे शंका होगई। इसलिए यह पत्र लिख रहा हूं।

कुछ रोज पहले आपके जन्मदिन के निमित्त महिलाश्रम में कोई सभा की गई। वहां बहनों ने आपके दीर्घायुष्य की कामना की और आपसे दो शब्द सुनने की इच्छा की।

आपने अपने शब्दों में दीर्घायु होने की इच्छा का विरोध किया। आत्मघात करनेतक को आपका दिल कहता है, ऐसे भी बताया। कुछ काल के पहले श्री छोटेलालजी ने आत्महत्या की थी, उसका आपने समर्थन किया। मैंने जो कुछ सुना, वह अगर सबकुछ सत्य हो तो मैं आपको जो लिख रहा हूं उसकी तरफ ध्यान देने की प्रार्थना करता हूं।

एक पल के पहले किये हुए कर्म इस पल में पूर्वकर्म ही हैं।

किसी दुष्ट मनुष्य को कुछ काल के पहले दुःख दिया हो वही मनुष्य मौका देखकर अपनेको हानि करता है। वहां कर्म ज्यादा बासी है इतना ही। अभी पल पूर्व उबलते हुए दूध या पानी में हाथ गिरे तो वह कर्म ताजा है। उसका दण्ड भी शीघ्र ही होता है। कई दंड हम भोगते हैं, कारण पूर्व-कर्म की अपनेको स्मृति नहीं है, इसलिए हम समझ नहीं सकते हैं। कई दंड अज्ञात कर्मों के फल हैं। जो कर्म दण्ड-योग्य है, वैसा अपना खयाल नहीं होता है, उसके लिए भी मनुष्य कर्म भोगते हुए मौका पाकर आत्मघात तक की इच्छा करता है। परन्तु वास्तव में अपने दुःखों का कारण कोई ज्ञात-अज्ञात कर्मों का फल है, और हम उसको टालना चाहते हैं, परन्तु वे नहीं

टलते—मुश्किल है। यह पुनर्जन्म की मान्यता है।

आपके समय का दुरुपयोग किया हो तो क्षमा कीजिये। मेरी यह मान्यता है कि पूर्वजन्मों के दण्डस्वरूप भविष्य में फल भोगने पड़ते हैं। और बहुत-से लोग जन्म से ही वह दण्ड भोगते हैं, जिससे पुनर्जन्म के विचार को तृप्ति मिलती है।

अच्छे मित्र और उत्तम सम्बन्धी—अच्छे मित्र जैसे आप, उत्तम सम्बन्धी जैसे बापूजी—को प्राप्त करने की मेरी क्या योग्यता है? मैं धनिक तो नहीं हूं, परन्तु अकोले में ईश्वर-कृपा से सभी श्रेणी के लोगों का प्रीतिभाजन अवश्य हूं। यह सब पूर्वजन्म का फल नहीं तो क्या, इस जन्म में मैंने किया ही क्या है। भगवान की दया है कि घरबैठे बड़े-बड़े सज्जनों की सेवा का मौका मिलता है। अधिक क्या लिखूं, सब दुःखों को दूर फेंककर सदैव आनन्दमय बने रहना चाहिए। जैसे सन्त तुकाराम और नरसी मेहता आदि रहते थे। भगवान जिस तरह रखे उसी तरह रहना चाहिए।

आपका बन्धु,
नानाभाई का प्रणाम

: ८९ :

साबरमती, २३-८-३०

भाई श्री जमनालालजी,

नासिक जेल से छूटी हुई मंडली के भाइयों ने ही आपकी खबर दी है। आपने पूज्य बापूजी के लिए तकली के सूत की माला भेजी है, वह मिल गई। सुरेन्द्रजी ने इस मंडली के लिए कुछ स्थानों पर काम की व्यवस्था कर दी है। बालजी भाई, पंडितजी, पन्नालाल तथा अन्य कुछ भाई अहमदाबाद में काम कर रहे हैं। कुछ सूरत जिले में गये, कुछ बोरसद के विद्यार्थियों में काम करेंगे। जन्माष्टमी के दिन यहां गीता-पारायण में भाग लिया था। कुछ देर बोले कि इतने में पंडितजी आ पहुंचे, इसलिए उन्होंने भजन किया।

चिरंजीव केशव को १५ दिन टायफाइड बुखार आया। उसके बाद

चार दिन से अब ठीक है। हवा-बदल के लिए बीजापुर गया है। चिरंजीव रूखी की तबीयत भी अच्छी नहीं ह। वह भी साथ ही बीजापुर गई है।

भाई प्रभुदास कुछ दिनों बाद अलमोड़ा जायंगे । गिरिराज भी १॥ महीने से खाट पर पड़ा है। बालकोबा अच्छे हैं ।

भाई देवदास यहां जेल में आये हुए हैं। उनका वजन घटा है। स्वास्थ्य के लिए तीन दिन का उपवास किया। अब यहां से दोनों वक्त दूध भेजा जाता है । महादेवभाई, अब्बास साहेब, इमाम साहेब, मणिलाल, रामदास सब खुश हैं। भाई कोठारी को हाथ का रोग है, उन्हें यहां से दूध-रोटी और साग वगैरह भेजा जाता है । प्रार्थना और प्रवचन चालू है ।

किशोरलालभाई का पत्र पूज्य बापूजी को भेजा। उसके उत्तर के दौरान में वह मुझे लिखते हैं कि आप सब लोगों को पत्र लिखना तो शक्य नहीं है, पर उन्हें सबकी ही याद खूब आती है, ऐसा बता देने को जरूर लिखा है।

किशोरलालभाई, रमणीकलालभाई और रणछोड़लालभाई को प्रणाम। आप सबकी तबीयत कैसी है ?

यहां गंगाबहेन, प्रेमाबहेन, संतोषबहेन रसोई में और श्यामा गो-शाला में काम करती हैं। सब अच्छी तरह हैं। दुर्गाबहेन ठीक हैं।[1]

लि.
नारायणदास का प्रणाम

: ९० :

नासिक रोड, सेन्ट्रल जेल
सोमवार, कार्तिक सुदी १२
(३-११-३०)
जन्मदिन—४१ वर्ष पूरे हुए, ४२वां चालू

प्रिय श्री नारायणदासभाई,

जन्मदिन के निमित्त आप मेरा प्रणाम स्वीकार करें व आश्रम में बड़ों को मेरा प्रेम व विनयपूर्वक प्रणाम कहें और छोटों को वन्देमातरम्

[1] गुजराती से अनूदित

व आशीर्वाद कहें। मैंने परमात्मा से अंतःकरण से प्रार्थना की है कि वह सच्चाई, पवित्रता व मजबूती से सेवा-कार्य करने का बल प्रदान करे। अगर शरीर कायम रहा और वर्ष भर जेल-महल में रहना पड़ा तो भी, नीचे लिखे अनुसार कार्य करने का प्रयत्न करने का निश्चय किया है। विश्वास है कि परमात्मा की दया से व पूज्य बापूजी व गुरुजनों के आशीर्वाद से सफलता होवेगी।

१. अस्पृश्यता-निवारण—कम-से-कम एक मंदिर व पांच कुएं खुलवाना।

२. एक बाल-विधवा का अन्तर-उप-जातीय सम्बन्ध कराना। विवाह सत्याग्रह-युद्ध होने के बाद हो सकेगा।

३. कम-से-कम परदा करनेवाली दो बहनों का घूंघट छुड़वाना—पूर्णतया।

४. एक सच्चा मित्र, जिसका जीवनभर तक साथ निभ सके, प्राप्त करना; हो सके वहांतक मुसलमान, अस्पृश्य, पारसी, ईसाई, अंग्रेज में से।

५. कम-से-कम एक कुटुम्ब की, जो सच्चाई के साथ कार्य करता हो, आर्थिक सहायता करना।

६. कम-से-कम एक कुटुम्ब को देश-सेवा के लिए तैयार करना।

७. कीर्ति के लिए सेवा-कार्य करने की लालसा (जो बीच-बीच में मन में आती है) व अभिमान (यानी व्यावहारिक ज्ञान का घमंड) की माया एकदम नष्ट होना कठिन है, तथापि कम करने का जोर के साथ प्रयत्न करना।

इसका अर्थ यह नहीं है कि मान का पद स्वीकार न किया जाय। अगर सम्मान का पद स्वीकार करने से सेवा-कार्य अधिक होना सम्भव दिखे तो उस पद को कोशिश करके भी प्राप्त किया जा सकेगा।

पूज्य बापूजी, पूज्य बा व काकासाहब को मेरा नम्रतापूर्वक प्रणाम लिख भेजना। अगर यह पत्र भेजना सम्भव हो और आप उचित समझें तो यह पत्र ही भेज दें। यह तो आपको मालूम ही होगा कि यहां तीनों वर्गों,

ए. बी. सी. में चर्खे, तकली, पिंजण का काम ठीक चलता है। जो लोग यह काम करते हैं, उन्हें जेल का दूसरा काम नहीं दिया जाता है। मुझे अपना चरखा मिलने के बाद से आज तक ८० हजार तार सूत काता गया। अब तो मैं रुई साफ करके अपने हाथ से पींजकर पूनी भी बनाने लग गया हूं। पींजना रविशंकरभाई रोज सिखाते हैं।

यहां मित्र लोग सब आनन्द व उत्साह में हैं।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

: ९१ :

साबरमती, १०-११-३०

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र पूज्य बापूजी को आज भेज देता हूं। इससे वे आपका निश्चय जानेंगे।

आप पिंजाई का काम करते हैं, यह हर्ष की बात है। आपने वहां जितने मिकदार में पिंजाई और कताई दाखिल की है उतनी अन्यत्र नहीं हुई होगी। साबरमती-जेल में चि. कान्ति पिंजाई का वर्ग चलाता है। उसमें भाई देवदास, जगजीवनदास और भाई श्रीकान्त को सीखते हुए मैंने देखा ह। सुपरिन्टेन्डेन्ट के ओसारे में ही दोपहर के बाद यह वर्ग चलता है। अब कल से नया सुपरिन्टेन्डेन्ट आगया है, इसलिए यह चलेगा या नहीं इसका पता नहीं। आपकी तरफ से जो माला पूज्य बापू को भेजी गई थी, वह पहुंच गई। उनका पत्र भाई जंगरामजी के नाम इसके साथ है। यह आपको ही भेजना चाहिए, इसलिए आप भेज दीजियेगा।

सभी भाइयों को मेरा वन्दन कहिये। रणछोड़दासभाई का पत्र मिला। उनको प्रणाम। किशोरलालभाई किस तरह हैं? उनको तथा नरहरिभाई रमणीकलालभाई आदि सबको मेरा प्रणाम।

यहां इमामभाई ज़रा बीमार थे। अब अच्छे हैं। मैं उन्हें मिलने गया, उस समय भाई देवीदयाल, मणिलाल, कान्ती वगैरह मिले। सब ठीक हैं। अब्बास साहेब भी खूब आनन्द में हैं। यरवदा-जेल में प्यारेलालभाई अब

अच्छी तरह हैं। पूज्य बापू उनसे कभी-कभी मिलते हैं। पास रहने के बारे में पूज्य बापूजी इस प्रकार लिखते हैं—"जमनालालजी को खबर भेजना कि मैं किसीको मांगता नहीं, काकासाहब को भी नहीं। जमनालालजी या हरकोई या तो अपने प्रयत्न से आवे या सरकारी कृपा के बल से। प्यारेलाल मुझे कभी-कभी मिल सकेंगे इतना बन्दोबस्त मैं करा सका हूं। साथी मांगने में स्वार्थ की गन्ध है, इसलिए नहीं मांगता। सबके साथ रहने की मांग करता हूं। पर ऐसा दिन कहां मिलेगा? मथुरादास ने भी मांग की है, ऐसा काका से मुलाकात करनेवालों ने कहा है। महादेवभाई आजकल में आने चाहिए।

खेड़ा बारडोली में ठीक काम चल रहा है। खेड़ा में गंगाबहन काम करने गईं, साथ में छोटी बच्चियों को भी ले गईं। चन्द्रकांता, लक्ष्मी, पद्मा, नैन, कुसुम वगैरह गई थीं। वहां से पत्र आते हैं। थोड़े दिनों में वे सब पकड़े जायंगे। सूरत जिले में काम करनेवालों की खुशखबरी आती है। प्रेमाबहन लगभग १० बालकों को संभालती हैं। लीलाबहन भी यहीं हैं।

'आश्रम-समाचार' निकलने लगा है। पत्र लिखते रहें।[१]

लि.

नारायण खु. गांधी का प्रणाम

: ९२ :

वर्धा, ११-११-३४

मान्यवर जमनालालजी,

मेरा पिछला पत्र आपको मिला होगा। उत्तर के लिए कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं। वह उत्तर पाने के हेतु से लिखा ही नहीं गया था। मेरे प्रायः पत्र इसी प्रकार के समझें।

मीराबहन का हवाई डाक से पत्र फ्रांस से आया था। २२ को यहां पहुंचने की आशा रखती हैं। विलायत में लेंसबरी, चर्चिल, होर सबसे मिलीं। आखिर के दो व्यक्तियों ने बापू को संदेशे भी भेजे जो कि जबानी

१. गुजराती से अनूदित

यहां सुनाये जायंगे । होरवाली मुलाकात बिल्कुल गुप्त रखने की सूचना उसके मंत्री ने की थी ।

ऐसी खबर मिली है कि बापू के महासभा से अलग हो जाने से व्रिलिंगडन पर भारी असर पड़ा है और उनके त्याग और निखालसता पर उनकी श्रद्धा फिर कुछ जमी है ।

छोटे खानसाहब आजकल मुझसे पींजण और रामायण सीखते हैं । दोनों में अतिशय रस लेते हैं और पींजण में प्रगति भी आश्चर्यजनक की है । पहले दिन से ही अपने कातने की पूंणी आप बनानी शुरू कर दी थी । डा. खानसाहेब (Medical mission) पर एक गांव में कल जायंगे । नालवाड़ी से कोई छः-सात माइल दूर है । मुझे साथ आने को कहते थे । बापू की भी इच्छा थी । परन्तु फुरसत निकल सकेगी, इसमें पूरी-पूरी शंका है ।

बापू आज कहते थे, ये दोनों संत स्वभाव के मुसलमान मुझे मिले हैं । यह मेरी मुसलमानों के प्रति तपश्चर्या का फल है ।

नये बरस से मैंने दूध, घी, फल लेना शुरू कर दिया था—मात्र पू. बापू के आग्रह के वश होकर—उस रोज एक आउंस के करीब खून आगया था, रात को सोते-सोते ही । नये बरस के दिन उनका वचन मोड़ने की हिम्मत न पड़ी जबकि मन तो इनसब पदार्थों के सामने बलवा ही करता था । धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि उनके प्रति विरक्ति के कारण ।

परन्तु इसमें से भी ईश्वर मुझे बचा लेगा । जबसे दूध लेना शुरू किया है, खून बन्द ही नहीं हुआ । रोज आता है । एक-आध रोज और ऐसा रहा तो यथापूर्व फिर हो जाऊंगा ।

आपकी तबीयत में सुधार हो रहा होगा । कबतक वहां रुकने की सम्भावना है ? रामदास खिमजी तो अभी नहीं मिले होंगे ।

कुमारप्पा आज आ गये हैं ।

भवदीय,

प्यारेलाल

११-११-३४
(२-३० पी. एम.)

कुमारप्पा, बी. शिवराव, जुगलकिशोर इत्यादि की आज बापू के साथ स्वदेशी के बारे में १२ से १ तक बातें हुईं। हेड क्वार्टर्स वर्धा में ही रहेंगे, ऐसा लगता है।

मीराबहन का तार आया था—बिडीसी से मेहताब उसके साथ आ रही है। मेहताब, खानसाहब की लड़की, यह तो आप जानते ही हैं ना?

अब चन्द रोज़ में बापू सरहद के बारे में पत्र लिखेंगे। १५ दिसम्बर से पहले तो जाना नहीं चाहेंगे।

क्रिसमस में एंड्रूज फिर वापस आ रहे हैं। उनसे मशवरा किये बिना वह कुछ नहीं करेंगे। ऐसे पहले ही तै हो चुका था।

प्यारेलाल

: ९३ :

कलकत्ता, २८-२-४०

मान्यवर जमनालालजी,

मिसिज रायबहादुर परमानंद को आपके पास भेज रहा हूं। एवटाबाद में उनकें ही यहां हम ठहरे थे। वहां की हिन्दू जाति और राजनैतिक क्षेत्र में मुसलमान अंश को छोड़कर हमारे पक्ष का आधार भी रायसाहेब पर बहुत ज्यादा है। मिसिज परमानन्द बहुत पारमार्थिक काम करनेवाली हैं और इसके लिए योग्यता भी असाधारण रखती हैं। खूब सुशिक्षित और व्यवहारी हैं। खादी-प्रवृत्ति भी ठीक-ठीक अब शुरू की है। वह खासतौर पर फ्रंटियर में हिन्दू-कन्याओं की शिक्षा में बहुत काम कर रही हैं। बापू से मिली थीं। वह रुपया इकट्ठा करने आई हैं। आपको सारा किस्सा बतायेंगी। जुगलकिशोरजी से १० हजार मिला है। बापू ने 'पुरुषार्थ' करने के बाद फिर दो बार उनसे बात करने को कहा था। लोयलकाजी से आज मिली हैं। परिणाम आज दिनभर में निकल आवेगा। आप भी जो कुछ हो सके कर दें; और खासतौर से समय देकर सारा विवरण जानने के बाद

उन्हें लिख दें। जो प्रश्न उन्होंने अभी उठाया है वह सरहद प्रान्त में बहुत महत्त्व का है।

भवदीय,
प्यारेलाल

: ९४ :

कलकत्ता, १०-११-२९

प्रिय सेठजी,

आप अस्पृश्यता-निवारण के लिए जो उत्तम कार्य कर रहे हैं, उसकी जानकारी मैं दिलचस्पी के साथ-साथ करता रहा हूं।

परसों मैं बंगलौर के लिए रवाना हो रहा हूं, और १०-१२ दिन वहां ठहरने की आशा रखता हूं। उसके बाद २५ या २७ तारीख को मैं बम्बई के लिए रवाना हो जाऊंगा। वहां मेरा पता मार्फत एस. सी. बनर्जी, फाउन्टेन हाल, स्लीटर रोड, बम्बई होगा। पहली तारीख के लगभग मैं नागपुर होता हुआ कलकत्ता लौट जाने का इरादा रखता हूं। वहां तिलक महाविद्यालय के काम में मुझे व्यस्त होना है। अगर आप वर्धा में हों तो रास्ते में मैं वहां उतर सकता हूं, और एक दिन आपके आश्रम की मेहमानदारी का आनन्द ले सकता हूं।[1]

आपका,
पी. सी. राय

: ९५ :

बंगलौर, १९-११-२९

प्रिय बजाजजी,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। मैं २९ नवम्बर से २-३ दिसम्बर तक बम्बई में रहूंगा, ऐसी आशा करता हूं। इसलिए मुझे वहां आपसे १ दिसम्बर को मिलकर बड़ी खुशी होगी। फिर भी, चूंकि मुझे कलकत्ता में ५ दिसम्बर

---

१. अंग्रेजी से अनूदित

से आगे बहुत काम है, इसलिए मैं आपके साथ साबरमती जाने के आनन्द से वंचित रहूंगा।[१]

आपका,
पी. सी. राय

: ९६ :

बम्बई, १५-९-३६

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

यहां मैं आनन्द में हूं। हिन्दी-प्रचार-कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। विशेष, मैं आपके साथ की बातचीत के सिलसिले में श्री मुन्शी को मिली हूं। उनसे बातचीत करने से यह मालूम हुआ कि फिलहाल सभा के लिए चन्दा इकट्ठा करने को वह वचन नहीं दे सकते, क्योंकि उन्होंने पहले से ही भारतीय साहित्य परिषद को कुछ चन्दा इकट्ठा करने का वचन दे दिया है। उसपर भी उनके साथ की बातचीत से मैं अनुमान करती हूं कि वह करीब ५०० रुपये जितनी रकम सभा के लिए जुटा सकेंगे। यह मेरा अनमान मात्र ही है। आज मैं उनको पत्र लिख रही हूं। उससे मैं उनको अपनी बातचीत के अनुसार सभा को जहांतक बन सके वहांतक आर्थिक मदद देने को लिख रही हूं। मैं उनको अपने खुद के नाम कुछ निश्चित रकम रखने को भी लिख रही हूं। उनका जवाब आते ही आपको सूचित करूंगी, जिससे आप अपनी सभा की आर्थिक स्थिति से परिचित हो सकें।

आप बापूजी व बा को मेरे सविनय प्रणाम कहेंगे, और राजेन्द्रबाबू व खानसाहेब को वन्देमातरम् कहेंगे। राजन्द्रबाबूजी का स्वास्थ्य अब ठीक होगा। माताजी व अन्य कुटुम्बी-जनों को मेरी प्रेमपूर्ण याद दिला दगे। बाकी यहां खैरियत है।

पेरीनबहन का वन्देमातरम्

---

१. अंग्रेजी से अनुदित

: ९७ :

दिल्ली, २०-३-३७

प्रिय श्री बनारसीदासजी,

आपका प्रेम-भरा पत्र मुझे वर्धा से लौटकर यहां मिला। जिस परिस्थिति में मुझे इस जिम्मेवारीपूर्ण स्थान[1] के लिए स्वीकृति देनी पड़ी उसके बारे में तो यहां अधिक लिखना असम्भव है। कभी रूबरू मिलने पर ही आपसे इस सम्बन्ध में खुलासेवार बात हो सकेगी। गुरुजनों की आज्ञा के सामने सिर झुकाने के सिवा और दूसरा रास्ता ही नहीं था। फिर भी बहुत अच्छा होता, यदि आपका पत्र कुछ समय पूर्व मिल जाता।

मैं उम्मीद करता हूं कि आप जसे राष्ट्रभाषा-प्रेमियों के सहयोग से इस दिशा में आइन्दा कुछ ठोस कार्य हो सकेगा।

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। आप तो अवश्य आवेंगे ही।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ९८ :

२५-३-३७

श्रीमान् जमनालालजी,

सादर वन्दे। आपका कृपापत्र मिल गया। कृतज्ञ हूं। अपने अध्यक्षीय भाषण में, जिसकी छपी-छपाई प्रति आप प्रत्येक हिन्दी-पत्र को भेजें, आप हिन्दीवालों की इस बेहूदगी का जिक्र अवश्य करें कि कितनी अशिष्टतापूर्वक वे महात्माजी तथा काका कालेलकरजी प्रभृति अन्य भाषा-भाषियों पर आक्षेप करते हैं, और उनके सदुद्देश्य में ही आशंका करके अपनी कृतघ्नता प्रगट करते हैं। यह बीमारी हमारे यहां बेतरह बढ़ रही है। सम्मेलन के सभापति की हैसियत से आपको इसके विषय में अपनी सम्मति स्पष्टतया प्रकट करनी चाहिए।

श्रीमान् लक्ष्मीधरजी वाजपेयी ने जब पहले महात्माजी के विरुद्ध लिखा था तब भी मैंने 'विशाल भारत' में उनका घोर विरोध किया था।

---

1. 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का सभापतित्व

दुःख की बात है कि प्रायः सभी हिन्दी-पत्रों ने उस समय वाजपेयीजी का लेख छापकर अपनी गैर-जिम्मेवारी का परिचय दिया था। इस विषय में आप सारा वृत्तांत समय मिलने पर काकासाहेब को सुना दें और संक्षेप में पू. बापूजी को भी बतला दें।

आशा है, इस धृष्टता के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे।

'स्वराज्य' की भी कटिंग अलग से भेज रहा हूं।

विनीत,
बनारसीदास चतुर्वेदी

: ९९ :

दिल्ली, ३०-८-३१

पूज्य श्री सेठजी,

क्षमा कीजियेगा, मैं बम्बई से रवाना होने से पहले सेवा में हाजिर न हो सका और उसके बाद भी मिलना न हुआ। इसी कारण बापूजी से जो बातें हुईं उनका भी जिक्र आपसे नहीं हुआ।

बापूजी ने दो ही मार्ग मेरेलिए रखे हैं। या तो घर के कार्य में सहयोग देना और इस ओर से ध्यान हटा लेना, या घर से सब प्रकार का आर्थिक सम्बन्ध तोड़ देना और इस ओर पूरी तरह लग जाना। यदि इस ओर आना है तो उन्होंने पांच स्थान रहने को बताये हैं—आश्रम, अलमोड़ा, वर्धा, बीजापुर और बारडोली। आर्थिक सहायता गांधी-सेवा-संघ से लेने को कहा है। घर की ओर मेरे जो विचार हैं, वे आपको बता चुका हूं और उधर से ध्यान हटाने में ही कल्याण समझता हूं। तब प्रश्न यह है कि कहां जाकर रहूं और दिल्ली में जो काम करने का विचार किया हुआ है उसका क्या हो?

रहने को आश्रम और अलमोड़े में से एक चुनकर आपको शीघ्र लिखूंगा। यदि स्वास्थ्य या मन की शान्ति के लिहाज से यह अनुकूल न पड़े तो आपकी आज्ञा से दूसरे स्थान में जाऊंगा। आश्रम में यदि गया तो बापूजी ने कहा है कि खेती और बुनाई सीख लो। इसके अतिरिक्त संस्कृत

और अंग्रेजी का अभ्यास भी करना चाहता हूं। थोड़ा संगीत भी सीखने का है। यदि आपकी सम्मति कुछ और हो तो कृपा कर बताइयेगा।

अब प्रश्न हैं यहां के आश्रम के काम का। नरेला में तो कृष्ण नायर हैं ही और उनका काम अच्छा बढ़ रहा है; लेकिन पिछले दिनों उन्होंने कई व्याख्यान दे दिये, जिसके कारण शायद धारा १०८ में उनपर मुकदमा चले। उस सूरत में कठिनाई होगी।

उधर कुतुब से १½ मील इधर रामताल एक स्थान है, जिसका जिक्र मैंने आपसे किया था। वहां मैं गया था। स्थान बहुत ही सुन्दर है। वहां भी आश्रम खोल दिया है। ज्योतिप्रसाद बी. ए., जो आश्रम में रह चुके हैं, और भुवन, जिसे प्रभुदासजी ने अलमोड़े से भेजा था, इनको वहां रखा है। मैंने स्वयं भी वहां रहने का विचार किया था, लेकिन बापूजी की राय है दिल्ली छोड़नी चाहिए। मैं भी समझता हूं कि घर के लोगों को मैं जो आघात पहुंचा रहा हूं, निकट रहने से मोह बना ही रहेगा। इसलिए हृदय की दृढ़ता बढ़ाने को अलग रहना ही ठीक है; मगर इसमें आपकी क्या सम्मति है, यह जानना चाहता हूं; और मेरे पीछे यहां के काम का किस प्रकार प्रबन्ध होगा? यदि कृष्ण नायर जेल चले गये तो काम और कठिन हो जायगा।

आखिर में प्रश्न है, मेरे खर्च का। यद्यपि आपने कहा हुआ है कि मैं जबसे चाहूं, लेना शुरू कर दूं; लेकिन आश्रम में रहते हुए क्या मेरे लिए लेना उचित होगा, जबकि मैं पठन-पाठन में ही लगा होऊंगा और सेवा-रूप से कोई कार्य नहीं कर रहा होऊंगा। यह ठीक है कि भविष्य में मेरा जीवन सेवा के लिए ही होगा और वर्तमान में भी हर समय सेवा के लिए तैयार हूं; मगर जबकि कुछ सेवा नहीं करता, क्या इस प्रकार लेना स्वार्थ नहीं है?

इसी सम्बन्ध में एक बात और। आज जो खर्चा मैं घर से लेता हूं, उसमें कई जगह सहायतार्थ देता भी हूं। क्या दूसरी जगह से लेकर इनको जारी रखना उचित होगा?

अन्त में आपसे अपने लिए एक विशेष बात पूछना चाहता हूं, क्योंकि मुझे मालम है कि आपका और बापूजी का मेरे ऊपर कितना स्नेह है। आप मेरे कल्याण के सिवा कुछ बतायेंगे ही नहीं।

इस जीवन का कोई ठिकाना नहीं है। मालूम नहीं यह शरीर का खेल कबतक चलता रहे। जब एक दफा घर से मैं सब प्रकार का आर्थिक सम्बन्ध तोड़ देता हूं तो इधर से तो भविष्य में किसी प्रकार की सहायता लेना पाप होगा। उधर आपका और बापूजी का आज इतना प्रेम है, मगर कदाचित् जो आशाएं आप मुझसे रखते हैं उनको मैं पूरा न कर सकूं और मैं एक नालायक साबित होऊं या कोई ऐसी परिस्थिति आ जाय कि आप, या दूसरे मेरा भार सहन न कर सकें, उस सूरत में मेरा क्या धर्म होगा? मुझे अपनी आजीविका पैदा करने की स्वतन्त्रता होगी न?

इसी सिलसिले में आपकी एक और मामले में भी सम्मति चाहता हूं। बापूजी की राय थी कि मेरा जो कुछ भी मेरे पिता की सम्पत्ति में भाग हो उसे तीनों भाइयों को ही सौंप दिया जाय और उससे कोई सरोकार न रखा जाय; लेकिन मेरी अपनी यह तजवीज थी कि बजाय इसके कि भाइयों को देकर उसे खत्म किया जाय, उसका एक ट्रस्ट बना दें। आज तो मेरे ऊपर कर्जा भी है लेकिन यदि किसी दिन वह उतर जाय तो वह ट्रस्ट सार्वजनिक कार्यों में काम आ सकेगा; नहीं तो वैसे ही बरबाद हो जायगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसमें मोह भरा है, आसक्ति भी है; मगर यह सात्त्विक है, मेरा निजी स्वार्थ इसमें नहीं है। मैं अपने नाम के लिए भी ऐसा नहीं करना चाहता। आप अपना जो विचार हो कृपया प्रकट कीजियेगा।

अन्त में आपके आशीर्वाद चाहता हूं कि इस कार्य को दृढ़ता से पूरा करूं और भविष्य की चिन्ता छोड़कर पूर्णतया ईश्वर को आत्म-समर्पण कर दूं।

विनीत,

ब्रजकृष्ण के दण्डवत प्रणाम

: १०० :

दिल्ली, २८-११-३१

पूज्य श्री सेठजी,

नरेला में मकान तैयार होगया है। अब वहां आश्रम खोलने की रस्म करने का विचार है। इसके लिए डाक्टरसाहब के पास गया था और उनसे इस काम के करने की प्रार्थना की थी; मगर उन्होंने स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मजबूरी दिखाई और आपसे प्रार्थना करने के लिए कहा है। यदि आप दो-तीन दिन भी यहां के लिए निकाल सकें तो हम लोगों का बहुत-सा काम सहल हो जाय। आज तो हम इधर-उधर भटकते-फिरते हैं। कांग्रेस-वालों तक हमारी पहुंच ही नहीं है। उन्हें इधर ध्यान देने की फुरसत कहां! किसीसे मुलाकात करने के लिए घंटों और दिनों भटकना पड़ता है। यदि कोई खैर-खबर लेता रहे तो इतनी असुविधा न हो।

नायरजी की अपील की बाबत आपसे पूछना था कि इसे हाईकोर्ट में ले जाना चाहिए या नहीं। यहां डाक्टरसाहब से पूछा था। उनकी राय कुछ बहुत साफ नहीं है। इसलिए उन्होंने आपसे दरयाफ्त करने को कहा है। आप जैसी आज्ञा करें, किया जाय। डाक्टर रामकृष्ण और नायरजी के मुकदमे में, देखा जाय तो, कुछ भी नहीं है। लेकिन यहां के हुक्काम तो ऐसे आदमियों को बाहर रहकर काम करते देखना पसन्द ही नहीं करते; वे इन्हें क्यों छोड़ने लगे थे।

विनीत,

ब्रजकृष्ण के प्रणाम

: १०१ :

बनारस छावनी,

सौर, २५-५-१९८१ (२३-९-२५)

श्री जमनालालजी बजाज, वर्धा।

मैं आपको हृदय से नमस्कार करता हूं। घायल मुसलमानों की रक्षा करते हुए नासमझों के हाथ से गहरी चोट खाई और जान जोखिम उठाई।

आपने अपनेको महात्माजी का पक्का अनुयायी दिखाया, जो हम लोगों से नहीं करते बनता। इस अर्थ में तो हमारे ऐसे कच्चे आदमी शर्मिंदा होते हैं, आपके आगे। पर दूसरे और उत्तम अर्थ में आपने सब सच्चे हिन्दुओं और सच्चे कांग्रेसवादियों और देशवासियों का सिर ऊंचा किया। अंगुली और अंगूठे की चोट कभी-कभी कष्ट देती है, पर हम लोग प्रार्थना और आशा करते हैं कि आपकी चोट बहुत जल्द अच्छी हो जायगी।

शुभचिन्तक,
भगवान्‌दास

: १०२ :

बनारस-कंटोनमेंट,
सौर १६-५-१९८५ (१९-१०-२९)

श्री जमनालालजी बजाज, वर्धा।

आपका कृपापत्र वि. श्रा. शु. १२-८५ का मुझको चौथे दिन चुनार में मिला। परसों मैं यहां आया। कल काशी विद्यापीठ में वार्षिक समावर्तन संस्कार हुआ। दो-तीन दिन और यहां ठहरकर चुनार वापस जाऊंगा।

वे दोनों श्लोक मैंने नये ही बना लिये हैं, पर आशय उनका पुराना है। यदि हिन्दी पद्य में आशयानुवाद आप चाहें तो यों कर लीजिये—

छूत-अछूत विवेक में, जाति नाम नहिं हेतु।
निर्मल अथवा समल पुनि, भाव हिया में केतु ॥ (केतु-लक्षण:)
चित्त शुद्ध है भक्ति से, स्नानादिक से देह।
जिनके वे दर्शक सबै, स्वागत हरि के गेह ॥

शुभचिंतक,
भगवान्‌दास

पुनश्च—'केतु' शब्द हिन्दी में चिह्न या लक्षण के अर्थ में स्यात् अच्छी तरह प्रसिद्ध नहीं है। तो दूसरा विकल्प यह है, जिसको आप अधिक पसंद करें उसीको काम में लाइये।

छूत-अछूत विवेक में, जाति नाम न निमित्त।
• निर्मल अथवा समल पुनि, मनुज देह अस चित्त ॥

: १०३ :

बनारस छावनी, ३-८-४०

श्री जमनालालजी बजाज, वर्धा।

नमस्कार। एक पुस्तिका 'मानव-धर्म-सार' की एक प्रति उपहार रूप से भेजता हूं। कुछ पंडित मित्रों ने कहा कि बंगाल, मद्रास, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रान्तों के कितने ही पंडित न अंग्रेजी से परिचित हैं न हिन्दी से, इसलिए उनका ध्यान इधर लाने के लिए अपने विचार, समाज की व्यवस्था (Social Organisation by Varnas and Ashramas) के विषय में संस्कृत में लिखो। इसलिए यह पुस्तिका लिखी गई। मेरी प्रार्थना है कि आप स्वयं इसको देखें तथा विचारशील संस्कृतज्ञों को, जो निरे 'कट्टर' ही न हों, भी दिखावें। यदि आपको पुस्तिका उपयोगी जान पड़े तब मेरी दूसरी प्रार्थना है कि (१) काशी विद्यापीठ के पब्लिकेशन फण्ड के लिए आर्थिक सहायता मुझे दीजिये, तथा (२) इस पुस्तिका के प्रचार के लिए प्रतियां लेकर संस्कृत जाननेवालों और पण्डितों में बांटिये।

यह पुस्तिका तथा एक अंग्रेजी-ग्रन्थ (The essential unity of all religions) इसी पब्लिकेशन फण्ड से छपी है। विशेष हाल, जो लीफलेट इसके साथ भेजता हूं, उससे विदित होगा।

आशा है आप सकुशल होंगे।

शुभचिन्तक,
भगवान्‌दास

: १०४ :

लन्दन, १-६-३६

प्रिय मित्र,

जबसे आपने अपने लड़के की अभिभाविका बनने के लिए मुझसे कहा

तभीसे मैं इस खोज में थी कि उसके लिए कोई ऐसा सुन्दर घर और परिवार खोज दूं जहां वह इंगलैंड की सबसे अच्छी बातें, भौतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से ग्रहण कर सके। मैं समझती हूं कि अन्त में मैंने उसे पा लिया है और अब मैं जानना चाहूंगी कि वह आपको पसन्द है या नहीं ?

मेरी विवाहिता बहन हार्पेण्डन में रहती है और वहां उसकी एक सबसे पुरानी दोस्त श्रीमती सेलिसबरी हैं, जिसका परिवार बड़ा ही सुखी है, और उसके सभी सदस्य १८ से २६ वर्ष के वीच की उम्र के हैं। यह परिवार भवन-निर्माण, वास्तुशिल्प और कला का विशेषज्ञ है। वे हर विषय में दिलचस्पी रखते और एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखते तथा सच्चे मानों में ईसाई हैं। ये उदार विचार और खुले दिल के लोग हैं। हमने उनका विकास देखा है और मैं उन्हें उसी प्रकार के लोग समझती हूं जैसे आप पसन्द करेंगे। जब श्रीमती सेलिसबरी के सामने यह सुझाव रखा गया कि वे आपके बेटे को अपने यहां रखें तो उन्होंने बात पसन्द की, पर उसका निश्चय कुछ दिनों के बाद करेंगी। वह यह भी देख लेना चाहती हैं कि परिवार के लोग भी उस प्रकार की सदस्य-वृद्धि को पसन्द करते हैं या नहीं, क्योंकि वे ऐसी महिला हैं कि कोई बात अधूरी करना पसन्द नहीं करतीं। अगर वह किसी मेहमान को अपने यहां ठहराती हैं तो उसे परिवार के एक सदस्य के रूप में रखती हैं और उसका नाम शिविर के लिए आमंत्रित किये जानेवाले लोगों के नामों में शामिल कर लेती हैं। उन्होंने अब मुझे सूचना दी है कि उनका सारा परिवार इसके लिए उत्साहित है। अब कृपया हमें बतलाइये कि यह बात आपको जंचती है या नहीं।

हार्पेण्डन हर्टफोर्डशायर में है। बहुत सुन्दर जगह है। उसमें खुला मैदान है, जिसमें गर्मी की सारी ऋतु में सुनहरी भटकटइयों की बहार रहती है। वहां से लन्दन आने में ४० मिनट या उससे भी कम लगते हैं, इसलिए वहां रहकर कालेज में हाजिरी देना बिल्कुल संभव है। यदि आप चाहें तो वीवियन सेलिसबरी आपके पुत्र की कालेज की पढ़ाई का इन्तजाम आपके

लिए करने को तैयार हैं। वे यह काम विदेशों के एक-दो मित्रों के लिए पहले भी कर चुके हैं।

मुझे आशा है कि आपके बेटे अगस्त के मध्य तक पहुंच सकते हैं। क्या यह सम्भव है ? मैं चाहती हूं कि उस महीने तो वह मेरे साथ 'बो' में ही रहें। मैं आपके जवाब और उसके पहुंचने की राह देख रही हूं।[1]

आपकी,

म्यूरियल लेस्टर

पुनश्चः अगर आपको पसंद हो तो यह पत्र अपने बेटे को भेज दें।

: १०५ :

वर्धा, २३-५-३८

प्रिय बहन,[2]

आपके पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। आपकी बड़ी कृपा हुई जो आपने श्रीमती सेलिसबरी के साथ मेरे पुत्र के ठहरने का इन्तजाम कर दिया।

कमल कोलम्बो से लौट आया है। वह ९ जुलाई को इटालियन जहाज 'कांटेवर्दे' से रवाना हो रहा है। वह ओलम्पिया के खेलों में उपस्थित रहेगा, इसलिए अगस्त के दूसरे या तीसरे सप्ताह में लन्दन पहुंच जाने का इरादा रखता है। वह आपसे पत्र-व्यवहार करेगा और अगर आप यह चाहती हैं कि वह लन्दन इससे पहले पहुंच जाय, तो वह ऐसा भी कर सकता है।

बापू का और मेरा आपमें पूरा विश्वास है। आप कमल के ठहरने का जैसा भी इन्तजाम करना चाहें, बिना किसी हिचकिचाहट के करें। कमल ने आपका पत्र देख लिया है और आप उसके लिए जो भी इन्तजाम करेंगी, उसे वह खुशी से मंजूर करेगा। उसके रहने-सहने का इन्तजाम आप उसे अपने पास कुछ दिन ठहर लेने के बाद ही आसानी से कर सकती हैं।

---

[1]. अंग्रेजी से अनूदित [2]. श्रीमती म्यूरियल लेस्टर

रहा कमल का कालेज का कोर्स। यह श्रीमती सेलिसबरी उसकी राय लेकर उसे निश्चित कर सकती हैं।

हार्दिक अभिवादन के साथ।[1]

आपका,
जमनालाल बजाज

: १०६ :

प्रिय जमनालालजी,

मैंने आपके पुत्र के साथ एक-दो घंटे बहुत अच्छी तरह बिताये। वह अच्छा और प्रसन्न लगता था। मैंने ऐसा महसूस किया कि इंगलैंड में उसकी अभिभाविका बनना प्रसन्नता और सम्मान की बात होगी। हमारी अच्छी तरह निभ जायगी।

मैं डोवर की सफेद पहाड़ियों के पास आधे घण्टे में पहुंच रही हूं। मैं यहां 'बो' जाने के पहले अपनी बहन के साथ आज की रात गुजारूंगी।

बिदाई का अभिवादन स्वीकार हो।[2]

आपकी,
म्यूरियल लेस्टर

: १०७ :

कलकत्ता जानेवाली ट्रेन में,
४-१-३९

प्रिय जमनालालजी,

मुझे यह बात कहने में आनन्द हो रहा है कि हमारे तीन दिन के आगमन को आपकी लड़कियों ने उदारता एवं दयापूर्वक कैसा सुखद बनाया!

ओम् और मदालसा ने अक्सर हमें अपने माता-पिता की याद दिलाई। अवश्य ही उन्होंने अपने मां-बाप के गुण विरासत में पाये हैं।

मदालसा की अंग्रेजी अच्छी है। उसके पति ने अपना स्कूल दिखाने

१-२ अंग्रेजी से अनूदित

में हमारे साथ काफ़ी समय लगाया। मदालसा हमारे साथ महिलाश्रम स्कूल में भी आई। (मेरा मतलब लड़कियों के उस स्कूल से है जिसके निकट बापूजी १९३६ में बीमार होने पर ठहरे थे)। हमारे वर्धा पहुंचने के समय से ही दिलीप (अतिथि-गृह के कर्त्ताधर्त्ता) हमारे साथ रहे। वह हमारे विचारों को व्यक्त करने से पहले ही ताड़ जाते मालूम देते थे। हमने जो ज़रा-सी इच्छा की, वह जाहिर करने के पहले ही पूरी कर दी जाती थी।

दोस्त और हितैषी, अब आपसे विदा !

कमल के परिवार को मेरा प्रेम। मैं कभी कहीं उससे मिलने की आशा रखती हूं।[1]

आपकी,
म्यूरियल लेस्टर

: १०८ :

दिल्ली,

प्रिय श्रीमती बजाज,[2]

यह पत्र मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देने के लिए लिख रही हूं; क्योंकि आपने अपने घर में सचमुच हमें बहुत सुन्दर ढंग से रखा।

आपसे मिलने में बड़ा आनन्द आया, क्योंकि मैं आपके परिवार के अनेक लोगों को पहले ही से जानती थी। अब मैं उनके आकर्षण को समझ सकती हूं। मैं यह बहुत चाहती थी कि मैं आपकी भाषा बोल सकती। परन्तु उसका ज्ञान न होने पर भी जब आप कोई मजाक की बात कहती थीं तो मुझे भी हँसी आ ही जाती थी।

आपकी मेहमानदारी के लिए एक बार और धन्यवाद। वहां बड़ी खुशी में समय कटा।[3]

आपकी,
म्यूरियल लेस्टर

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित [2] श्रीमती जानकीदेवी बजाज

[3] अंग्रेजी से अनूदित

: १०९ :

नागपुर, १६-६-२३

श्रीयुत मगनलालभाई,

वन्दे । सत्याग्रह-संग्राम यहां जोर-शोर से व शांतिपूर्वक चल रहा है । गुजरात के ७५ स्वयंसेवकों की पहली बैंच में से कल १५ स्वयंसेवक गिरफ्तार हुए । ता. १८ तक यहां आये हुए सभी स्वयंसेवक जेल में चले जायंगे । उनका उत्साह सराहनीय है । सरकार भी अब कड़ी दमन-नीति का आश्रय लें रही है । सत्याग्रह-संग्राम में भर्ती होने के लिए केवल व्याख्यान देने के अपराध में सिवनी के तीन कार्यकर्ताओं को एक-एक साल की सख्त कैद और एक को ६ महीनों की सख्त कैद की सजा हुई है । बहुत जोर की अफ़वाह है कि हम लोग भी सम्भवतः इस १८ तारीख के पहले गिरफ्तार कर लिये जायंगे । परन्तु सत्याग्रह-संग्राम दबना अब कठिन है । जेल में जाने के लिए स्वयंसेवकों की काफी संख्या अभी मौजूद है । सिवनी की भांति यदि दूसरे स्थानों में स्वयंसेवकों को भरती करने में सरकार उपद्रव करे तो थोड़ी मुश्किल होगी परन्तु संग्राम के सफल होने की आशा है।

इस बार के वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव के अनुसार मेरे गिरफ्तार होने के बाद मेरी जगह आप खद्दर-विभाग में 'मेम्बर इन्-चार्ज' का कार्य करेंगे ही । मुझे आशा है, वर्तमान वर्किंग कमेटी हमारे खद्दर-कार्य को सफल बनाने में सब तरह से सहायता करेगी। मुझे आपको केवल यही लिखना है कि कई बातों का खुलासा पत्रों से बराबर नहीं होता और कई बार गैर-समझ भी हो जाती है । सो महत्व का कोई कार्य हो तो आप श्री जवाहरलाल-जी को समझा देंगे या वर्किंग कमेटी के समय मेम्बरों को समझा देंगे तो गैर-समझ नहीं होगी । आशा है, आपके व मथुरादासभाई के सम्मिलित उद्योग से खद्दर-कार्य में जरूर प्रगति होगी । इस बार गया-कांग्रेस के बाद मैं खद्दर-कार्य संतोषजनक नहीं कर सका, इसका मुझे विचार है । टेक्निकल विद्यालय तथा छात्रों को भी न देख सका । उसका भी मुझे खेद है । आप छात्रों को तथा विद्यालय के कार्यकर्ताओं को मेरी ओर से वन्देमातरम्

कहियेगा। खद्दर-विभाग में जो 'इयरमार्क' रकम है उसका, मथुरादासभाई के पत्र में मैंने खुलासा लिखा है, सो मथुरादासभाई आपको बतलावेंगे। आप दोनों की सम्मति से, किस प्रकार खर्च किया जावे, उसके बारे में उक्त पत्र में लिखा है।

श्री जवाहरलालजी यहां कल आनेवाले हैं। सो खद्दर-विभाग के संबंध में उनसे बात करूंगा, और भविष्य के बारे में मेरे विचार कह दूंगा।

भाई देवदास यहां कार्य करने के लिए आवेंगे ही। पूज्य बा का भी थोड़े रोज के लिए इधर आना ठीक होगा। भाई रामदास आना चाहें और पूज्य बा उन्हें भेजना चाहें तो उन्हें यहां आकर ऐसा कार्य हाथ में लेना चाहिए, जिससे गिरफ्तार होने का मौका मिले। पूज्य बा को मेरा प्रणाम। भाई रामदास तथा इतर मित्रवर्ग को मेरा वन्देमातरम्। मेरे गिरफ्तार होने पर जेल में कोई पुस्तक व अन्य कोई उपयुक्त वस्तु आपको मालूम दे, उसकी फेहरिस्त लिख भेजियेगा। चरखा रखना सम्भव होगा तो वर्धा से प्रवन्ध हो ही जायगा। मुझे इसमें सन्देह ही है कि सख्त कैद में चरखे की परवानगी देंगे। बच्चों को प्यार कहना। आश्रम के खर्च के लिए, मैं जेल में रहूं, तबतक बम्बई की दुकान से बराबर आता रहेगा।

भवदीय,
जमनालाल बजाज

: ११० :

साबरमती,
कार्तिक सुदी १, १९८३ वि. (१६-११-२६)

श्रीयुत जमनालालजी की सेवा में,

आज नया वर्ष है। सभीसे मिलना-जुलना और अभिनन्दन तथा अभिवन्दन सबको यथायोग्य रूप में किया। आप याद आये। आप स्नेही के तौर से रहे ही, पूज्यजन के रूप में भी। आपको संबोधन करने में यह संयम करता हूं। पूज्य भाव मन में दबाकर सामान्य रीति से संबोधन करता हूं। पर आज

यह व्यक्त करने को मन हो जाता है। आपके जैसे हृदय की विशालता और बालक जैसी हृदय की सरलता पूजनीय है। नये वर्ष के लिए आपको प्रणाम भेजता हूं।

पू. जानकी बेन, चि. मदालसा बेन, कमल तथा सब खुश हैं। अब बीमारी का लगभग शमन होगया है। भाई रामेश्वरप्रसाद की माताजी अभी बीमार हैं। पर आज बाहर निकली थीं। अब सुधार पर हैं। भाई गिरधारी बाइसिकल से गिर गये थे। वे भी अब अच्छे हो रहे हैं।

आपकी तबीयत अच्छी होगी।[१]

लि. सेवक,
मगनलाल का प्रणाम

: १११ :

गोरखपुर मा. शु. १, १९९२ (२७-११-३५)

प्रिय भाईसाहब,

कृपा-पत्र और श्री राधाकृष्णजी के विवाह के निमंत्रण-पत्र के लिए धन्यवाद। हां, अब तो मेरे ऊपर घर की जिम्मेदारी आगई। अब उतनी आजादी तो नहीं रहेगी। लेकिन "जाही विधि राखें राम ताही विधि रहिये।" एक बार तो झंझट कुछ ज्यादा-सा लगता है, पर जल्दी ही सब काम ठीक हो जाने की आशा है। पू. पिताजी के सामने मैंने कभी इन कामों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था, इसीलिए जरा उलझन-सी लगती है। आप लोगों की कृपा होगी तो सब पार कर लूंगा।

पू. पिताजी की हालत क्या लिखता, अन्त समय तक तो उनके बच जाने की आशा बनी रही। कुल २२ दिन ही तो बीमार रहे। मैं अंतिम समय में उनके पास रह सका, इससे उन्हें पूर्ण संतोष था और मुझे भी। मेरा दिल जो दिल्ली[२] जाने की गवाही नहीं देता था, उसमें यह बात भी थी। अब तो मेरा बाहर आना-जाना कुछ कम ही होगा। हां, आनन्द[३] कुछ काम

---

[१] गुजराती से अनूदित, [२] गांधीजी एक डेयरी संभालने को दिल्ली भेजना चाहते थे, [३] महावीरप्रसादजी के पुत्र।

दे देगा तो जाना-आना हो सकेगा। दिल्ली में मुझे ६ फरवरी को पहुंचना चाहिए। ८ तक मीटिंग है। उसके बाद एकाध दिन से ज्यादा तो नहीं ठहर सकूंगा। इतनी जल्दी ज्यादा दिन बाहर रहने की फुरसत नहीं मिलेगी। आनन्द को इस अवसर पर लाना ठीक नहीं होगा। मार्च में उसका मैट्रिक का इम्तहान है और इधर बाबूजी की बीमारी में महीना भर उनकी सेवा-टहल में रहने की वजह से पढ़ नहीं सका। मार्च के बाद तो उसे कुछ दिन आपके पास छोड़ना चाहता हूं।

कृपा रखें। योग्य सेवा लिखें।

विनीत,
महावीर

:-११२ :

गोरखपुर, ९-१२-३९

प्रिय भाईसाहब,

आपके खाते ६-७ रुपये लिखने हैं। अखबारों में पढ़ा कि इलाहाबाद में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में आप आ रहे हैं; मैंने कहा, चलो, बहुत दिन हुए, दर्शन कर आऊं। पर दर्शन नहीं हुए। अब यह दाम आपके दर्शन-खाते ही तो लिखे जाने चाहिए ? दर्शनों की इच्छा है, मालूम नहीं कब होंगे। आप जानना चाहते होंगे क्या करता हूं ? कुछ खादी का, कुछ हरिजन-सेवा का। काम कम भी कर पाता हूं तो भी इरादे तो बड़े-बड़े रखता ही हूं।

विनीत,
महावीरप्रसाद पोद्दार

: ११३ :

गोरखपुर, २२-६-४०

प्रिय भाईसाहब,

जहां महारथी लोग मौजूद हों, वहां मेरे जैसे आदमी का जाना कोई अर्थ नहीं रखता। फिर, मुझे नहीं बुलाया, मेरी सलाह नहीं ली, इस

लिए मैं मुंह मोड़ूं करूं, या काम में सहयोग न दूं, ऐसी बात तो है ही नहीं। आपकी उपस्थिति में जो निर्णय होगा वह बहुधा मेरी सम्मति से प्रतिकूल होने की आशंका नहीं है।[1]

विनीत,
महावीर

: ११४

बनारस सेंट्रल जेल,
११-८-४१

प्रिय भाईसाहेब,

११-६-४१ का कृपापत्र २७-६-४१ को मिला। देर-सबेर क्या, मिल गया, गनीमत है। बाहर आने की क्या पूछते हैं, पूरे एक साल की सजा है, जिसमें ६ महीने बीते हैं। मेरी नेकचलनी की खातिर से भरपूर छूट मिले तो भी अक्तूबर चढ़ ही जायगा।

हिमालय क्यों बाबा? जानकीदेवीजी की इजाजत ले ली है क्या? ठहरिये तबतक, अक्तूबर में चलेंगे, साथ ही।

गोरखपुर बनारस के कई आदमी छूटे, मियाद पूरी होने के पूर्व ही, पर सुना है, सरकार जिन्हें 'अन-इम्पॉर्टेंट' समझती है, उनके लिए ऐसा करती है। मैं तो सस्ते भाड़े 'इम्पॉर्टेंट' होगया।

यहां जेल के जिन मित्रों से आपका परिचय है उन्हें अब प्रणाम पहुं-चाना दुस्तर है, मैं मजमे से अलग हूं। अधिकांश से सबेरे भेंट होती है, सो आज का सबेरा तो चला गया और कल सबेरे मैं गोरखपुर जेल में होऊंगा। यहां आपके दो विशेष परिचित हैं, एक भाई बैजनाथजी और दूसरे बाबा राघवदासजी। सो बाबाजी से तो मौन हड़ताल तथा और कई बातों में मतभेद होने से रामा-श्यामा बन्द है। भाई बैजनाथजी को किसीके द्वारा पहुंचा देने की कोशिश करूंगा।

---

[1] यह पत्र 'गो-सेवा-संघ' के सिलसिले में लिखा होगा, ऐसा लगता है।

मुझे यहां नये-नये तजुरबे हुए हैं। मिलेंगे तब दिलचस्प किस्से सुनाऊंगा। देखता हूं, कइयों की झोली में जेवड़े[१] ही हैं। बिना बात की ईर्ष्या-द्वेष। योरप में लोग शस्त्रास्त्रों से लड़ते हैं, यहां लड़ाई जीभ की है। वैसे तो सारी लड़ाई 'हम बड़े' की है। बाबा और बच्चा सब डूबे हुए हैं, एक ही घाट पर। यह मत समझिये कि मैं कोई 'दूध का धुला' हुआ हूं, अपने तो मूर्ख-समुदाय के खासुलखास ही जो ठहरे।

मैंने कुछ दिनों पहले आपको एक लम्बी चिट्ठी लिखी थी, पर राह में कहीं गुम होगई, जान पड़ता है। वहां महिलाश्रम के पुस्तकालय में (मराठी में) महाभारत के सारांश स्वरूप तीन भागों में एक पुस्तक है। काकासाहब ने उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। मैंने श्री जयदयालजी गोयनका से गीता प्रेस से उस पुस्तक का अनुवाद निकालने के बारे में कहा था। उन्होंने कहा था, पुस्तक मंगवा लो, विचार किया जायगा। पुस्तक रेल पार्सल से गोरखपुर मेरे नाम से भिजवा देनी चाहिए। मैंने वर्धा में यत्र-तत्र से उसे देखा था। एक बार कुछ ज्यादा पढ़ जाऊंगा तो राय कायम कर सकूंगा और उन्हें भी निकालने को तैयार कर सकूंगा। मैंने महाभारत के अन्य पर्व पहले पढ़े थे, यहां शांति-पर्व पढ़ा है, प्रकाशित करने योग्य ग्रंथ है। पर सारांश या अनुवाद अच्छा होना चाहिए। आप जो पुस्तक भेजेंगे, सुरक्षित रहेंगी, वह शायद 'आउट-ऑफ प्रिंट' है।

इस साल आनन्द एम. ए. में दूसरे वर्ष में जायगा, परमानन्द मैट्रिक हुआ है, शांता दो बच्चों की मां होगई है।

कृपा तो आपकी है ही और आगे भी रहनी चाहिए।

स्नेहास्पद

महाबीरप्रसाद पोद्दार

---

[१] कहावत है 'बाबा की झोली में जेवड़ा निकला'—मतलब निकम्मे निकले।

: ११५ :

बम्बई, ३०-११-३१

प्रिय चि. मार्तण्ड,

तुम्हारा ६-१२ का पत्र मिला। पुस्तकें तो अभी नहीं मिली हैं। आजकल में मिल जावेंगी। मेरी समझ से कानूनी कार्रवाई करने में कोई आपत्ति नहीं है। 'मंडल'[1] एक पब्लिक संस्था है, उसके अनुचित नुकसान के लिए कानूनी कार्रवाई करना योग्य ही है। कोई अच्छा वकील रखना जरूरी है। ऐसे काम में वकील फीस तो चार्ज करेगा ही नहीं। पर पहले से खुलासा बात कर लेना ठीक रहेगा।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ११६ :

वर्धा, १७-७-३३

चि. मार्तण्ड,

तुम्हारा १४-७ का पत्र मिला। दिल्ली में 'मंडल' का निश्चय हो जाता तो ठीक रहता। श्री महाबीरप्रसाद ने जो सूचना तुमको की, वह प्रायः विचार करने योग्य ही मालूम होती है। 'मंडल' के लिए ऐसे एक सेवक की, जो अपना सारा जीवन उसमें लगादे, आवश्यकता तो है ही। यदि तुम्हें यह काम पसंद हो और तुम्हें इस काम में उत्साह भी हो, और अगर तुम यह निश्चय करलो कि तुम अपना जीवन इसमें लगा दोगे तो, मुझे तो पूरा संतोष होगा। तुम 'मंडल' द्वारा भी देश और समाज की काफी सेवा कर सकते हो, इसमें मुझे कोई शंका नहीं।

'मंडल' के लिए अगर तुम अपना जीवन दे सको तो तुम्हारे लिए अन्य कार्यों की चिन्ता करने का कारण नहीं है। ऐसी हालत में मन में अस्थिर होने का कारण भी नहीं रहता।

'मंडल' का कार्य अजमेर रहे या दिल्ली रहे, इसके लिए मेरी निज की वृत्ति वर्तमान परिस्थिति में तटस्थ की-सी है। 'मंडल' के कार्य की जवाब-

[1] सस्ता साहित्य मंडल

दारी 'मंडल' के प्रमुख, भाई घनश्यामदासजी अपने हाथ में व अपनी देख-रेख में रखना चाहते हों और 'मंडल' के लिए तुम अपना जीवन देने का निश्चय कर सकते हो, और तुम्हारे कार्य से और तुम्हारे जीवन देने के निश्चय से उन्हें भी पूर्ण संतोष होता हो, तो ऐसी हालत में मैं तो यही चाहूंगा कि तुम्हें और भाई घनश्यामदासजी को पूर्ण संतोष हो, वहीं 'मंडल' का कार्य रखने का निश्चित किया जाय। वैसी स्थिति में 'मंडल' को अगर दिल्ली ले जाने का निश्चय हो तो मुझे उससे एक प्रकार का संतोष और खुशी ही होगी। जहांतक भाई घनश्यामदासजी पूरी जिम्मेदारी लेना न चाहें और तुम्हारा उत्साह भी दिल्ली जाने का न हो, वहांतक स्थान-परिवर्तन उचित न होगा।

तुम्हारी इच्छा कुछ समय तक मेरे पास रहने की है, यह तो मुझे मालूम है और इसकी मुझे खुशी भी है। परन्तु यह तो देश का वातावरण शान्त होने पर तथा 'मंडल' का एक बार पूर्णतया निश्चय होने पर ही अमल में लाया जा सकेगा।

श्री हरिभाऊजी यहां आनेवाले हैं ही। तब उनसे बातचीत हो ही जायगी। तुम्हारे पूज्य पिताजी को प्रणाम।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ११७ :

दिल्ली, ५-१२-३६

पूज्य श्री भाईजी,

सा. प्रणाम। आपका कृपा-पत्र मिला।

'मेरी कहानी' के विषय में पंडित जवाहरलालजी का पत्र आया था और उन्होंने कुछ गलतियों की ओर ध्यान दिलाया है। अगले संस्करण में वे ठीक कर दी जावेंगी। अनुवाद और प्रकाशन-कार्य में जल्दी रहने से ये अशुद्धियां रह गई हैं। कुछ और सुविधा मिली होती तो पुस्तक इससे बहुत अच्छी निकलती।

'मंडल' के बारे में मैंने श्री घनश्यामदासजी को एक पत्र लिखा है,

उसकी एक नकल आपके पास भेजता हूं। आशा है, आपको यह पसंद आयेगा।

मैंने सुना है कि दासाहब[1] को श्री चौधरीजी की जगह राजपूताना हरिजन सेवक संघ का अध्यक्ष बनाने की आपने स्वीकृति दे दी है। दासाहब का स्वास्थ्य इन दिनों तो बहुत गिर गया है। उनकी तरफ से सबों-को चिन्ता होगई है। ऐसी हालत में मैं ठीक नहीं समझता कि उनको यह नई ज़िम्मेदारी और दी जाय। दूसरे, यह भी सुना है कि श्री चौधरीजी यह मानते हैं कि दासाहब ने अपना रास्ता साफ करने के लिए यह सब कुछ किया है। इस कारण भी इस अविश्वास के वातावरण में मेरी राय में दासाहब को इस झगड़े से अलग रक्खा जाय तो ही ठीक।

और सब कुशल है।

विनीत,
मार्तण्ड

: ११८ :

वर्धा, २६-१-३७

भाई मार्तण्डजी,

बम्बई से एक 'गांधी डायरी' निकलती है। इसकी यही विशेषता है कि इसमें पू. बापूजी के वक्तव्यों में से अच्छे-अच्छे वाक्य हर सफे पर उद्धृत किये गए हैं।

पू. जमनालालजी की आज्ञा हुई कि आपको पत्र लिखकर मैं पूछूं कि क्या आप भी ऐसा प्रयत्न कर सकते हैं? उक्त डायरी तो गुजराती में निकलती है। हिंदी में अभी तक ऐसा प्रयत्न नहीं हुआ है। कभी आप इस ओर आवेंगे तो आपको यह 'गांधी डायरी' मैं बता सकूंगा।

आशा है, आप इस विषय में अवकाश पाकर जरूर लिखेंगे।

दामोदर के प्रणाम

---

[1] श्री हरिभाऊ उपाध्याय, मार्तण्डजी के बड़े भाई।

: ११९ :

दिल्ली, २२-७-३७

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम।

कांग्रेस के मंत्री-पद स्वीकार कर लेने पर उन-उन प्रांतों में जहां कांग्रेसी मंत्री-मंडल बन गये हैं, 'मंडल' की पुस्तकों के प्रचार, कोर्स में रखे जाने या शिक्षा-विभाग द्वारा इनाम में देने के लिए स्वीकृत किये जाने आदि के बारे में क्या करना चाहिए और किनको लिखना और किनसे मिलना चाहिए, इस बारे में मैं आपकी सलाह और मदद चाहता हूं। मैंने इस विषय में एक पत्र श्री राजेन्द्रबाबू को तो लिखा है। मैं चाहता हूं संयुक्तप्रान्त, बिहार और मध्यप्रान्त के शिक्षा-विभाग के मंत्री के नाम 'मंडल' के संबंध में आप पत्र लिख दें तो कैसा ?

दूसरी बात यह कि पिछले महीने में काम से इलाहाबाद गया था। वहां श्री रामनरेशजी त्रिपाठी से मुलाकात हुई थी। नागपुर में पिछली बार रामायण के बारे में उनसे जो बातचीत हुई थी, उसीके साथ-साथ उनके प्रेस और दूसरी पुस्तकों के स्टाक को लेने की चर्चा हुई थी। इस बार की मुलाकात में उन्होंने मुझसे फिर वही चर्चा की थी। रामायण तो उन्होंने बेच ली है, ऐसा वह कहते थे। लेकिन प्रेस और दूसरी पुस्तकों का स्टाक वह बेचकर उससे मुक्त हो जाना चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि आप इस मामले में उनकी कुछ सहायता करें। 'मंडल' या और कोई दूसरी संस्था या व्यक्ति उनके स्टाक और प्रेस को ले ले। उन्होंने मुझे कहा कि मैं आपको इसके विषय में लिखूं। उसीके अनुसार यह मैं आपको लिख रहा हूं।

मद्रास में आपने 'साहित्य-भवन' के बारे में चर्चा की थी। अगर कोई ऐसी योजना बन सके और 'साहित्य-भवन' तथा 'हिन्दी-मन्दिर' दोनों को लेकर 'मंडल' की एक शाखा इलाहाबाद में स्थापित की जा सके, तो यह

होगा तो अच्छा। लेकिन यह किस प्रकार संभव हो, यही सोचना है।

विनीत,

मार्तण्ड

: १२० :

वर्धा, २७-१२-३८

प्रिय मार्तण्ड,

तुम्हारा २३-१२-३८ का पत्र मिला। मेरे नाम आनेवाले व उत्तर देने योग्य प्रायः सभी पत्रों का जवाब दे दिया जाता है। तुम्हें शिकायत करने का मौका तो नहीं होना चाहिए। तुम्हारे किस पत्र का जवाब देना रह गया ? लिखना।

तुम्हारी योजना के सिलसिले में मेरी तो यह राय है कि तुमको अपनी योजना पहले 'मंडल' की मीटिंग में रखनी चाहिए। अगर 'मंडल' उसे स्वीकृति दे दे तो तुम मंत्रियों से भी मिल सकते हो और जिनके नाम पू. राजेंद्रबाबू पत्र लिख सकते हैं उनके नाम वे पत्र लिख देंगे और मेरे पत्रों की आवश्यकता होगी तो मैं भी लिख सकूंगा। इन पत्रों को लेकर तुम मंत्रियों से मिल सकोगे व बातचीत कर सकोगे।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १२१ :

दिल्ली, २९-१-३८

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम। आपका पत्र मिल गया था। जब वर्किंग कमेटी के सिलसिले में श्री सुभाष बोस वहां आवेंगे तब आप उनकी आत्मकथा के 'मंडल' से हिन्दी में प्रकाशित करने के बारे में कुछ बातचीत करने की कृपा करेंगे। अगर इसमें आप मेरा वहां आना उचित समझें तो मुझे तार देने की कृपा करें। मैं आजाऊंगा। मैं इसके संबंध में भाईसाहब को भी लिख रहा हूं।

और यहां सब ठीक है। उत्तर शीघ्र दीजियेगा।

विनीत,
मार्तण्ड

: १२२ :

वर्धा, ३०-१०-३८

प्रिय मार्तण्ड,

तुम्हारा ता. २५-१० का पत्र मिला। मैंने 'सस्ता साहित्य मंडल' के ट्रस्टी-पद से जो त्यागपत्र दिया है, उसका कारण केवल यही है कि मैं प्रायः बहुत-सी संस्थाओं से अपना संबंध विच्छेद करने का प्रयत्न कर रहा हूं। और खासकर उन संस्थाओं से, जिसमें प्रत्यक्ष रूप से मैं काम देख नहीं पाता। इसके सिवा दूसरा कोई सबब नहीं है।

मेरे त्यागपत्र का तुमने जो मतलब निकाला, वह बिल्कुल गलत है। वर्तमान हालत में 'मंडल' का कार्यालय दिल्ली से वर्धा में लाने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती व मैं इस बात को पसन्द भी नहीं करता। 'मंडल' का कुल काम जब वहांपर सुचारु रूप से चल रहा है तब उसको वहां से हटाकर दूसरी जगह फिर से जमाना उचित नहीं होगा। मेरा नाम 'मंडल' में नहीं भी रहा तो भी तुम तो मुझसे वर्तमान में जैसा पूछते रहते हो वैसे आगे भी समय-समय पर पूछ सकते हो।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १२३ :

जयपुर-स्टेट-कैदी, १४-६-३९

प्रिय मार्तण्ड,

तुम्हारे पत्र का जवाब तो तुम्हें मिल गया होगा। श्री हरिभाऊ-जी से भी बातें हुई थी। भाई महावीरजी ठीक रस ले रहे हैं, जानकर खुशी हुई। तुम्हारे काम से उन्हें संतोष है, यह बहुत ही समाधान की बात है। श्री बैजनाथजी के इन्दौर के भाषण मिल गए हैं, हरिभाऊजी से कह देना। तुम्हारी भेजी हुई पुस्तकें जैसे-जैसे समय मिलता जायगा, वैसे-वैसे देखूंगा। अभी

तो वियोगी हरिजी की 'संतवाणी' देख रहा हूं। बहुत ठीक मालूम हो रही है। मेरे लिए इसकी पांच प्रति मेरे खाते में दाम लिखकर भिजवा देना। बिल भी साथ में भिजवा देना। इस पुस्तक का काफी प्रचार होना चाहिए, श्री हरिजी को मेरी ओर से कह देना। पूज्य पिताजी को प्रणाम कहना। श्री देवदासभाई, लक्ष्मी वगैरे से कभी मिलो तो वन्देमातरम् कहना।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम

: १२४ :

जयपुर-स्टेट-कैदी, १८-६-३९

प्रिय मार्तण्ड,

'संतवाणी' की पांच पुस्तकें कल मिल गईं व बंट गईं। मुझे पांच पुस्तकें और भिजवा देना। आश्रम-भजनावली की प्रार्थना के श्लोकों का व उपनिषत्स्मरण का, जिस प्रकार गुजराती-अनुवाद साथ दिया है, वैसा ही सरल भावपूर्ण हिन्दी-अनुवाद छपा हो तो मुझे दो भजनावली भिजवा देना, अन्यथा श्री हरिभाऊजी को कहकर 'नवजीवन कार्यालय' से पत्र-व्यवहार करके हिन्दी-अनुवाद छपवाना जरूरी है। तुम्हारे यहांसे उपयोगी डायरी (सम्भव हो तो) हाथ-कागज पर, छपवाने की व्यवस्था हो सके तो करनी चाहिए। उससे प्रचार-कार्य में भी मदद मिलेगी। श्रीहरिभाऊजी व महावीर-प्रसादजी से सलाह करना। तुम्हें जंच जावे तो चुने हुए उपदेशपूर्ण भजनों की सुन्दर छोटी-सी भजनावली अनुवाद के साथ छप सके तो उससे भी प्रचार में मदद मिलेगी। अनुवाद वियोगी हरिजी या हरिभाऊजी करें तो ठीक रहेगा।

हरिभाऊजी से कहना कि ग्वालियर में सुधार[१] तो प्रारम्भ होगये। वर्तमान स्थिति देखते हुए ठीक हैं। जनता के मिनिस्टर का फैसला होते ही मुझे सूचित करें। अगर श्री हिरवे हो जावें तो मुझे तार कर देवें। श्री आंग्रे को मेरी ओर से भी बधाई लिख भेजें। मैं जल-चिकित्सा कर रहा हूं। नवीन-चिकित्सा-

[१] ग्वालियर रियासत में राजनैतिक सुधारों से संबंध है।

विज्ञान तो आगया है। और कोई दूसरी छोटी किताब, केवल टब-बाथ कैसे लेना, इसपर मिलती हो तो भिजवा देना। घर में सब अच्छे होवेंगे ?

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १२५ :

दिल्ली, ११-७-३९

पूज्य श्री भाईजी,

सा. प्रणाम। आपका कार्ड मिला। 'मंडल' की पिछली बैठक में मैंने आपका त्याग-पत्र पेश किया था और जैसीकि वर्धा में आपसे बातचीत हुई थी, कि जनरल बोर्ड में आपका नाम रहने दिया जाय और कार्यकारिणी से हटा लिया जाय, यह आपकी इच्छा भी बता दी। पर सब सदस्यों की और खासकर श्री बिड़लाजी की राय यह रही कि आपका इस्तीफा स्वीकार नहीं किया जाय और आपसे पुनः प्रार्थना की जाय कि आप उसे वापस ले लेने की कृपा करें।

पिछली बार 'मंडल' की बैठक में पास हुए प्रस्ताव तथा कार्यवाही की जो नकल मैंने आपके पास भेजी थी उसमें यह प्रस्ताव भी था। फिर भी मैं आपके पत्र की नकल श्री घनश्यामदासजी के पास भेजता हूं।

हरिभाऊजी अजमेर गये हैं। बापनासाहब-संबंधी आपका संदेशा- उनको भेज दिया है।

मेरे पत्र के उत्तर में श्री. पोद्दारजी ने एक पत्र भेजा है उसकी तथा श्री घनश्यामदासजी के पत्र की नकल भेजता हूं।

'संत-वाणी' हमने २००० छपाई थी। १००० प्रतियां बची हैं। २००० की लागत कोई ६००) आई थी।

और सब ठीक है।

विनीत,

मार्तण्ड

: १२६ :

जयपुर-स्टेट-कैदी, १२-७-३९

प्रिय मार्तण्ड,

तुम्हारे ता. ८-७ व ११-७ के दोनों पत्र नं. ३०१५ व ३०३६ के मिले। श्री. हरिभाऊजी भी परसों मिल गये थे।

१. श्री महाबीरप्रसादजी को पूरा समाधान देना तुम्हारा कर्तव्य है। श्री महाबीरप्रसादजी इस काम की जानकारी भी रखते हैं। स्वतंत्र राय भी दे सकते हैं। उनकी राय पर भाई घनश्यामदासजी का मेरा व हरिभाऊजी का भी, जहांतक मैं समझता हूं, विश्वास है। मेरी राय से तो, औरों की राय के मुकाबले में ज्यादा-से-ज्यादा मान इन्हींकी राय को ही देना चाहिए। अगर हो सके तो कमेटी का ठहराव करा लेना चाहिए कि इन्हींकी राय से मंत्री पुस्तक लिखाने व छपाने का काम करें। तुम ठीक समझो तो मेरा यह पत्र भाई घनश्यामदासजी को पढ़ा देना। मैंने पत्र-व्यवहार देख लिया है। तुम भाई घनश्यामदासजी की राय से उनका समाधान व उत्साह फिर से प्राप्त कर लोगे, ऐसी आशा है।

२. क्या 'सन्त-वाणी' लागत कीमत में दे सकोगे? सबोंसे सलाह लेकर लिखना, तब मैं विचार करूंगा उसका प्रचार बढ़ाने का। तुम्हारे हिसाब से करीब पांच आना प्रति पुस्तक लागत पड़ती है। पांचसौ कापियां इस हिसाब से देना चाहो तो पांचसौ मैं ले लूंगा। परन्तु मैं मुफ्त में प्रचार नहीं करूंगा। बने वहांतक दाम वसूल करूंगा।

३. नवजीवनवाले ही आश्रम-भजनावली हिन्दी अर्थ-सहित छापने-वाले हैं, सो ठीक।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम

: १२७ :

गोपुरी,
वर्धा, ७-२-४२

प्रिय मार्तण्ड,

तुम्हारा २-२-४२ का पत्र मिला। श्री हरिभाऊजी का भी पत्र आया था। भाई घनश्यामदासजी 'मंडल' के अध्यक्ष हैं। उनकी इच्छा के मुताबिक महावीरप्रसादजी को संतोष देते हुए काम करना चाहिए। और मैं विशेष क्या लिख सकता हूं। थोड़े में यही है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १२८ :

सत्याग्रह-आश्रम,
साबरमती, १८-१-२६

प्रिय भाई,

(चूंकि हमारे एक ही पिता हैं, आप मुझे भाई कहकर संबोधित करने की अनुमति देंगे।)

आपके पोस्टकार्ड के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! मैं खुशी से हर पखवाड़े में आपको एक बार लिखूंगी और बापू के समाचार आपको दूंगी। लेकिन फिलहाल आप मुझे हिन्दी में लिखने को न कहें। मैं हिन्दी में पत्र उतनी जल्दी नहीं लिख सकती, जितना अंग्रेजी में और चूंकि मेरे पास फुरसत का समय बहुत कम है, अच्छा यह होगा कि मैं जल्दी-से-जल्दी तरीके से लिखूं।

मुझे यह लिखते हर्ष होता है कि बापू अब पहले से अच्छे हैं। जब हम पहली बार यहां लौटे, उन्हें जोर की सर्दी हो रही थी और पहले सप्ताह में उनके स्वास्थ्य में बहुत कम सुधार हुआ। लेकिन इस दूसरे सप्ताह में वह कहीं ज्यादा बेहतर हैं। पहले हफ्ते में उनके वजन में केवल आधा पौंड की वृद्धि हुई, लेकिन इस हफ्ते में करीब-करीब २ पौंड बढ़ गये हैं।

हमारे यहां लौट आने पर अब वह मेरे प्रति बड़े सख्त हैं और मुझे स्वयं

सिवाय उनके चर्खे की देखभाल करने के और कुछ नहीं करने देते। वह कहते हैं कि मुझे अपने काम जितनी तेजी से मैं कर सकती हूं, मुझे करने चाहिए, और जबतक मैं हिन्दी, कताई, भोजन बनाना आदि अच्छी तरह न सीख लूं तबतक मुझे उनकी मदद नहीं करने दी जायगी। अब मैंने अपना खाना पकाने का पूरा काम आप करना शुरू कर दिया है, इसलिए आप कल्पना कर सकते हैं कि मैं कितनी व्यस्त हूं।

विनोबा यहां हैं, यह बड़ी अच्छी बात है और मुझे विश्वास है कि इससे बापू को मदद मिलेगी। देवदास और कृष्णदास दोनों बाहर हैं और इससे हमारे पास आदमियों की बड़ी कमी है। विनोबा बापू को कताई सिखाते हैं और वह आधा घंटे में १२१ गज सूत कातने के लक्ष्य पर पहुंच गये हैं। मैं भी सीख रही हूं और परिणामतः मेरी गति बढ़ रही है।

मुझे आशा है कि आप ठीक होंगे और मैं जल्दी ही यहां आपसे मिलने को उत्सुक हूं। कृपया आश्रम के सारे भले मित्रों को मेरी वंदे कहिये और अपनी पत्नी को मेरा हार्दिक अभिवादन दीजिये।[१]

सदा आपकी स्नेहभाजन,
मीरा

: १२९ :

लन्दन, २६-९-३४

मेरे प्यारे भाई जमनालालजी,

बापू और महादेव से आपके बारे में समाचार पाकर मैं उनकी कृतज्ञ हूं। आपरेशन के समय आपपर भगवान की बड़ी दया हुई। मैं इन दिनों आपके बारे में सोचा करती थी। बापू और महादेव को मैंने जो पत्र लिखे हैं उनमें आपको सन्देश भेजा करती थी। पर मैं नहीं जानती कि वे पत्र आपको मिले या नहीं। इस बीच मैं आपको पत्र लिखना चाहती थी, लेकिन यहां का जीवन बड़ा ही व्यस्ततापूर्ण है।

मेरा यहां का अनुभव बड़ा ही अद्‌भुत है। मैं यहां के लोगों

---

[१] अंग्रेजी से अनूदित

से, जैसाकि आप जानते हैं, कुछ दिलचस्पी लेने की आशा रखती थी, लेकिन वह इतनी मिली कि जितनी मुझे आशा नहीं थी। मेरा विश्वास है कि अगर हम इस देश के मजदूर-वर्ग को सच्चाई की जानकारी करने का ठीक मौका दें तो यहां के सार्वजनिक मत को बदल सकते हैं। अभी तक इस बात की विधिवत् कोशिश नहीं की गई है कि जिससे जनसमूह तक पहुंचा जाय, क्योंकि जनता तो हिन्दुस्तान और बापू के बारे में बिल्कुल कुछ नहीं जानती। लेकिन मुझे यकीन है कि कुछ काम की बात हो सकती है। मैं एक ऐसी योजना यहां के दोस्तों के साथ बना रही हूं और उसे बापू के सामने रखने जा रही हूं। लौटने पर मुझे आप सबसे बातें करने के लिए काफी मसाला मिल गया है।

अब मैं एक सप्ताह के लिए सभाओं में भाग लेने अमेरिका जा रही हूं। मैं वेनिस से ९ नवम्बर को जहाज द्वारा बंबई के लिए रवाना होऊंगी और २१ को घर पहुंच जाऊंगी। शायद उस समय आप वहां मिलेंगे और मुझे आशा है कि आपको अच्छी हालत में देखूंगी।

सबको प्रेमसहित,

आपकी बहन,
मीरा

पुनश्च : मेरी सभाओं में जो फोटो बिके हैं उनकी रकम साथ में भेजती हूं। इससे प्राप्त रकम १८ पौंड १४ शिलिंग ७ पेंस तक पहुंच चुकी है। यह पूरा-का-पूरा मुनाफा जो कि बिहार के लिए है।[१]

: १३० :

वर्धा, २१-५-३६

प्रिय भाई जमनालालजी,

यहां मैं आपके घर में प्रेम और सौजन्य से घिरी हुई हूं। मैंने सेगांव छोड़ना पसन्द नहीं किया, लेकिन मैंने ऐसा अनुभव नहीं किया कि मुझे ऐसे प्रेमपूर्ण दबाव के विरुद्ध जाना चाहिए। पर उस दिन सुबह मेरा

---

१ अंग्रेजी से अनूदित

आना सम्भव नहीं था, क्योंकि मैं सफर के काबिल नहीं थी। मुझे अफ़सोस है कि मैं आपसे न मिल सकी।

कृपया मेरी तन्दुरुस्ती के लिए अब फिक्र न कीजिये। तीन दिन से मुझे बुखार नहीं आया और मैं कुनैन ले रही हूं।[1]

आपकी,
मीरा

: १३१ :

वर्धा, १५-८-२४

प्रिय मूलचंदजी,

आपका १२-८-२४ का पत्र मिला। यह पढ़कर आनन्द हुआ कि आप अपना समय राष्ट्रीय शिक्षा और खादी-प्रचार में लगाना चाहते हैं।

आपने अपने पत्र में यह नहीं लिखा है कि भविष्य में आपको कम-से-कम कितने वेतन की आवश्यकता पड़ेगी। अतएव कृपया निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देंगे।

(१) सरकारी पाठशालाओं में आप कितने समय से काम करते हैं और कितने दिनों से मुख्याध्यापक रहे हैं?

(२) आपका निवासस्थान (मकान) कहां है?

(३) आपकी पारिवारिक जिम्मेवारी कितने मनुष्यों की है तथा किन-किन लोगों की है?

आपका,
जमनालाल बजाज

: १३२ :

रेहली (सागर) १४-९-३३

मान्यवर सेठसाहब,

मैं ता. १०-९-३३ को यहां आ पहुंचा हूं। श्री पं. हरिभाऊजी का पत्र मिला। समाचार जाने। उन्होंने उत्तर आपको भेजने को लिखा है, इसलिए

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

यह आपको भेज रहा हूं। मेरा ध्येय राष्ट्रीय शिक्षा है, केवल खादी ही नहीं। खादी को मैं राष्ट्रीय शिक्षा का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग समझता हूं। इसी दृष्टि से मुझे खादी-कार्य करना पसन्द भी है। खादी के साथ शिक्षा तथा शिक्षा के साथ खादी कुछ-न-कुछ होनी ही चाहिए, ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा रहा करती है। शिक्षा में हरिजन-सेवा का भी समावेश है ही। लगातार ७ वर्ष से मैं विचार कर रहा हूं, परन्तु केवल खादी से मेरे मन का समाधान नहीं होता है।

कार्य करने के लिए मुझे तो राजस्थान ही पसन्द है। स्थान रींगस के जितना समीप हो उतना अच्छा, जहां से कि साल में एक-दो बार रींगस का काम भी संभाला जा सके। उसको संभालने की मैं अपनी नैतिक जिम्मेवारी मानता हूं, क्योंकि वहां अपना तीन-साढ़े तीन साल का समय और काफी रुपया खर्च हो चुका है। यदि राजस्थान के बाहर भी रहने की आवश्यकता पड़ ही जाय तो मुझे खुद को तो आपत्ति नहीं, घर के लोगों को आपत्ति है।

राजस्थान में खादी-कार्य के लिए श्री शंकरलालभाई ने तो इन्कार कर दिया था और श्री देशपांडे जी खादी-स्वावलम्बन-कार्य के लिए बिलकुल उदासीन होगये हैं। इसलिए इन लोगों की सलाह कैसे ली जाय?

काम के निश्चय करने को १०-५ दिन के लिए यदि मेरी वर्धा आने की आवश्यकता आप समझें तो लिखें। मैं आ जाऊंगा। आने-जाने का खर्चा चरखा संघ पर पड़ेगा या और कहीं सो देख लीजियेगा। यह मैं जान लेना तो बहुत जरूरी समझता हूं कि मुझे यहां के बाद किस जगह क्या करना है?

मूलचन्द का प्रणाम

: १३३ :

वर्धा, ५-१०-३३

प्रिय मूलचन्दजी,

आपका ३०-९-३३ का पत्र मिला। मैंने पढ़ लिया। बापूजी ने भी

पत्र पढ़ लिया था। जेठालालभाई से भी इस विषय में बातें की हैं। उनके वहां पहुंचने पर आप उनसे विस्तार के साथ बातचीत कर लीजियेगा।

मेरी राय तो यह है कि जिस काम में आपका खूब मन लगे और भीतर से प्रेरणा हो वही काम करना चाहिए। किस काम में आपका उत्साह विशेष होगा, इसका निश्चय तो स्वयं आपको ही करना ठीक होगा। आपका आज तक का अनुभव देखते हुए तो खादी-कार्य ही आपके उपयुक्त जान पड़ा है। पर उसमें मन न लगे तो हरिजनों की सेवा और शिक्षा इत्यादि के कार्य भी किये जा सकते हैं। आप खूब विचारकर एक निर्णय करें।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

: १३४ :

छावनी नीमच, ४-५-३५

मान्यवर सेठसाहब,

आपका २-५-३५ का पत्र मिला। समाचार जाने।

मैं भी यही मानता रहा हूं कि मैं जयपुर स्टेट के लिए बाहरी आदमी नहीं हूं, यद्यपि मेरा खुद का जन्म छावनी नीमच का है। हमारे पूर्व-पुरुष रींगस के थे; परन्तु स्टेट की दृष्टि में स्थानिक और बाहरी की, पता नहीं क्या परिभाषा है ?

मैंने जो प्रार्थनापत्र श्री पंडित हरिभाऊजी की सलाह से इन्दौर के भानुदास शाह वकील से लिखवाकर भेजा है, उसकी नकल आपको भेज रहा हूं। इसका मुझे अभीतक तो कोई उत्तर नहीं मिला है।

इन्दौर में पूज्य बापूजी को समय नहीं था, इसलिए मिल तो नहीं सका; परन्तु वहांसे पत्र में अपना संक्षिप्त विवरण निर्वासन के सम्बन्ध में लिखकर भेज दिया था। उसका जो उनका उतर आया है, उसकी नकल भी आपको सूचनार्थ भेज रहा हूं।

पत्र के अन्त में पूज्य बापूजी ने पूछा है कि रींगस का काम अब कौन देखेगा ? इस प्रश्न का उनको क्या उत्तर दिया जाय, सो मेरी तो समझ में

नहीं आता है। इसलिए इस विषय में आप जैसा उचित समझें वैसा पूज्य बापूजी को उत्तर दे देवें और उसकी सूचना मुझको भी देने की कृपा करें।

मेरा विचार यहांपर ता. १५-५-३५ तक रहने का है; क्योंकि यहां पर शारदा ऐक्ट लागू कराने की बातचीत कुछ मित्रों से चल रही है।

मूलचन्द का प्रणाम

: १३५ :

वर्धा, २०-१०-३६

श्रद्धेय जमनालालजी,

सादर प्रणाम। पू. राजेन्द्रबाबू की आज्ञानुसार तारीख २८ को प्रयाग में समिति की बैठक बुलाई है। आपको सूचना की प्रति भेजी है, सो आपको मिल गई होगी।

आपको स्मरण होगा कि दक्षिण भारत में जब हिन्दी-प्रचार का कार्य पहले-पहल शुरू हुआ था तब बाबू शिवप्रसादजी गुप्त से वहां के कार्य के लिए १० हजार रुपये का दान मिला था। अब इधर के अहिन्दी प्रान्तों में काम शुरू किया जा रहा है, इसमें भी उनकी शुभ कामनाओं के साथ-साथ आर्थिक सहायता प्राप्त कर लेना अच्छा होगा। चूंकि २४ तथा २५ को पू. बापूजी भी वहां उपस्थित रहते हैं और समिति के सभी प्रमुख सदस्य भी पार्लियामेंटरी बोर्ड की मीटिंग के संबंध में काशी पहुंच जाते हैं, इसलिए पू. राजेन्द्रबाबू की भी इच्छा थी कि अबकी समिति की बैठक बनारस में करली जाय। लेकिन राजेन्द्रबाबूजी ने बिलासपुर पहुंचकर रास्ते से ही तार दे दिया कि प्रयाग में बैठक बुला ली जाय। उसके अनुसार बैठक बुलाई गई।

मैं आपको लिख ही चुका हूं कि अनुमान-पत्र के अनुसार इस साल के खर्च के लिए ८ हजार रुपये की स्वीकृति चाहिए। इसके अलावा अगर हमें बाकायदा काम शुरू करना हो, उसे बढ़ाना भी हो, तो यह जरूरी है कि बंगला, मराठी, गुजराती आदि प्रमुख भाषाओं में आवश्यक पाठ्य-पुस्तकें छपा लें। इन पाठ्य-पुस्तकों के छपा लेने से कार्य में सुविधा ही नहीं होगी

बल्कि प्रचार-कार्य में लगाने के लिए कुछ रुपये भी निकल आयेंगे। इस दिशा में फिलहाल, यद्यपि तीन-चार हजार रुपये से काम चल सकता है, फिर भी कुछ खास रकम इस हिसाब में प्राप्त करना आवश्यक है। आपको मालूम होगा कि मद्रास सभा में पुस्तक-विभाग में कुल १५ हजार रुपये लगे हैं। उनकी आमदनी (मुनाफा) इस विभाग में सालाना आठ और दस हजार रुपये के बीच में रहती है। प्रचार के लिए यह खासी रकम हो जाती है। मेरा यह निवेदन है कि आप इस समय पर श्री शिवप्रसादजी से, जबकि वे पूज्य बापूजी के कर-कमलों से भारतमाता का मंदिर खुलवा रहे हैं, भारत माता की एकमात्र वाणी हिन्दी के प्रचार के लिए भी दान प्राप्त कर सकते हैं।

उनका दान पाठ्य-पुस्तक-प्रकाशन में लगाया जा सकता है या खास इसी काम के वास्ते उनसे सहायता मांगी जा सकती है। मैंने इस संबंध में काकासाहब को भी लिख दिया है।

विशेष समक्ष,

आपका विनम्र

मो. सत्यनारायण

: १३६ :

धारवाड़, २०-६-३९

पूज्यवर,

सादर प्रणाम।

करीब पौने दो वर्ष तक आपके आश्रय में रहकर, आपके मार्गदर्शन से वर्धा में कार्य करने का जो सुअवसर मुझे मिला था उसे मैं अपने जीवन का एक भाग्यपूर्ण समय समझता हूं। आपने जिस प्रेम तथा वात्सल्य के साथ मुझसे काम लिया और काम कराया उसे भूल नहीं सकता। जब मैं बीमार पड़ गया था तो आपने जिस सहानुभूति के साथ मेरी पूछताछ की और मुझे सहायता पहुंचाई वह मेरे लिए सदा स्मरण रखने की बात है। मुझे मालूम है कि मेरे-जैसे सैकड़ों कार्यकर्ताओं को आपने प्रेम के कच्चे धागे से बांध

रखा है। इस पत्र के द्वारा आपके स्नेहपूर्ण व्यवहार के लिए धन्यवाद पहुंचाना चाहता हूं।

आपका विनम्र सेवक,
मो. सत्यनारायण

: १३७ :

पिहरी, १३-२-३६

पू. चाचाजी,

सविनय पावां धोक। आपका पत्र नहीं आया, सो देना।

ता. १३-१-३६ से १३-२-३६ का एक मास का संक्षेप हाल लिखता हूं। ता. २०-१-३६ से निश्चित पढ़ाई शुरू हुई। शुरू में गणित सीखता था। अब तीन-चार दिन से इतिहास पढ़ना शुरू किया है। धीरे-धीरे दूसरा विषय लिया जायगा। सवाल चौथी क्लास के बराबर करता हूं। किताबें अभी तक आई नहीं। इसका कारण यह है कि मनिआर्डर आने के बाद किताबें मंगाई गईं। किताबें बनारस से मंगाई थीं, किन्तु वे वहां मिली नहीं, पीछे कल प्रयाग विश्वविद्यालय बुक डिपो को आर्डर दिया है। इस महीने के आखीर तक आ जायंगी। किताबें कुल १७-१८ रुपये की हुई हैं। इसके अलावा पार्सल-खर्च अलग से लगेगा। याने किताबों की कीमत २० रुपये तक चली जायगी, ऐसा मालूम होता है। विद्यालय की ओर से हरएक विद्यार्थी के घर को हर मास एक पत्र दिया जाता है, उसपर से आपको मालूम हो ही जायगा। यह पत्र मुझे भी देखने की इच्छा है।

: दिन-चर्या :

०४-००	सबेरे उठना
०४-०७	डायरी लिखना, हिसाब लिखना, पत्रलेखन स्कूल के अभ्यास का स्वाध्याय
०७-०८	शौच, मुखमार्जन
८-८.४५	दिनभर का कोई बचा हुआ काम करना
८-४५-९.३०	स्वाध्याय

९.३०-१० स्नान, कपड़े धोना

१०-११ भोजन परोसना, भोजन करना

११-११.३० स्कूल-प्रार्थना और गीता-क्लास, लेकिन परोसने की ड्यूटी होने से बहुत वक्त गैरहाजिर रहना पड़ता है।

११.३०-४ स्कूल—१ क्लास हिस्ट्री (इतिहास) बाकी के समय अरिथ-मेटिक (सवाल) करना।

४-४.३० विश्रान्ति या शौच वगैरह जाना।

४.३०-५ सूत निकालना।

५-६ फुटबाल खेलना, स्काउट प्रार्थना।

६-७ भोजन परोसना, भोजन करना।

७-७.१५ प्रार्थना, इसमें भी कई वक्त गैरहाजिर रहता हूं।

७.१५-८ लायब्रेरी—अखवार आदि पढ़ना।

८-१० पढ़ना, बातें करना इत्यादि।

१०-४ निद्रा।

ऊपर लिखे-अनुसार मेरी दिनचर्या है। पढ़ने के अलावा जो काम किया उसका अहवाल—

साहित्य-परिषद में ग्राम-सेवा पर एक निबन्ध लिखकर सुनाया। यह परिषद यहां हर महीने में हुआ करती है। विद्यालय की मासिक पत्रिका में सुधार-योजना हलवाई की दुकान पर लिखी, वह संपादक की टिप्पणी में प्रकाशित हुई। क्रियात्मक संघ की मीटिंग में एक प्रस्ताव रखा, वह पास हुआ। यह मीटिंग हर महीने की दो तारीख को हुआ करती है। इसके वाद बोर्डिंग की मीटिंग में भोजनालय के बारे में सुधार-योजना रखी कि दाल धोकर बनाई जाय, चावल का पानी नहीं निकाला जाय; यह भी मंजूर हुआ। यह मीटिंग हर महीने की ७ तारीख को हुआ करती है। भोजनालय की मीटिंग में भी एक योजना रखी। यह मीटिंग हर मास की ८ या ९ को होती है। यहां पर एक विद्यार्थी-मंडल है, इसकी हर रविवार को मीटिंग हुआ करती है। इसकी हर मीटिंग में हाजिर रहता हूं। इसका सभासद भी बना

हूं। मण्डल की तरफ से एक स्कूल की उपयोगी चीजों की एक दूकान है, वह भी देखता हूं। मण्डल की तरफ से एक अतिथि-सत्कार कमेटी की स्थापना हुई है। उसका प्रधान कार्यकर्ता मैं हूं और मेरे मददगार दो और विद्यार्थी हैं। इस मास में स्वास्थ्य अच्छा रहा। मेरा तौल १०६ पौंड है। भोजन परोसने की ड्यूटी मैंने स्वयं ली है। यह हर पन्द्रह दिन पर बदलती है, लेकिन मैंने बदलवाई नहीं। भोजनालय के मैनेजरसाहब ने मेरी भोजन परोसने की ड्यूटी की प्रशंसा अपनी रिपोर्ट में की है। सब टीचर लोग मुझसे प्रसन्न हैं। इस महीने की विशेष बातें—धोबी को एक भी कपड़ा धोने नहीं दिया। हलवाई के यहां से कोई चीज लेकर नहीं खाई, इत्यादि। दूध यहांपर १० सेर से १४ सेर तक मिलता है, लेकिन वह भी ले नहीं सका। मेरी फरवरी की छात्रवृत्ति अभी तक आई नहीं है। विद्यालय के प्रेसीडेंट साहब अभी बम्बई में है। वह वहांसे लौटते वक्त वर्धा उतरेंगे। आपकी तबीयत कैसी है ? और कुछ काम-काज हो तो लिखियेगा। इस मास में डाक-खर्च विशेष हुआ है।

आपका बालक,
मोहनलाल

खादी-क्लास एक दिन पश्चात् हुआ करता था, उसे प्रयत्न करके रोज का किया गया है। चतुर्भुज ने वन्देमातरम् लिखा है। भूल-चूक क्षमा कीजियेगा।

: १३८ :

वर्धा, १०-८-३७

प्रिय राघवनजी,

आपका ३०-७-३७ का पत्र मुझे इलाहाबाद में मिल गया था।

पू. बापूजी के साथ की गई चर्चा से आपको मालूम ही हुआ होगा कि दक्षिण भारत के काम के लिए आवश्यक धन-संग्रह की जिम्मेवारी भी दक्षिण के लोगों पर ही है। कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़ने पर तो, सम्भव है, कुछ कार्यकर्ता उत्तर से भी बुलाये जा सकें; पर आरम्भिक जिम्मेवारी के बारे में तो उपरोक्त अण्डरस्टैंडिंग ही हुआ है।

श्री पद्मपतजी सिंहानिया द्वारा जो रुपये मिले हैं, उसके विनिमय की शर्तों में एक शर्त यह भी है कि वह रकम द. भारत को छोड़कर अन्य अहिन्दी प्रांतों में सरफ की जाय।

मेरे निज के बारे में तो मैं इतना ही लिख सकूंगा कि मेरी पुरानी जिम्मेवारियां ही इतनी अधिक हैं कि अव नई जिम्मेवारी मैं नहीं उठा सकूंगा।

सम्भव है, इन्दौर से और भी कुछ रुपया आ जावे, पर मुझे आशा तो कम ही है। वहां से रुपये प्राप्त होने पर तो पू. बापूजी आपको शीघ्र ही भिजवा देंगे, पर आपको वहां की आशा छोड़ देनी चाहिए।

मेरा खयाल है, इस सम्बन्ध में आप माननीय श्री राजाजी से अवश्य बात करें तथा सहायता प्राप्त कराने के सम्बन्ध में उन्हें स्मरण दिलावें। वह दक्षिण के [illegible]रा कुछ प्रवन्ध अवश्य करा सकेंगे।

आप मेरी अनुपस्थिति में ही वर्धा आगये, जिससे आपसे अधिक परिचय नहीं हो सका।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३९ :

वर्धा ९-३-३०

पू. काकाजी,

सविनय प्रणाम।

भाई कमलनयन की इच्छा अभी साबरमती आने की नहीं है। इस संबंध में उसने एक खुलासेवार पत्र आपको कल दिया था, सो पहुंचा होगा। पू. बाबासाहेब का एक पत्र साथ में भेज रहा हूं, जिससे उनके मनकी आपको जानकारी हो जायगी। पू. विनोबाजी ने कहा था कि किसी के बिना काम रुका नहीं रह सकता। यदि काम रुका रह जाय तो स्वराज मिलने की आशा वृथा है। इसलिए जिसे जहां रहने की जरूरत मालूम पड़े, वह वहां रह सकता है।

पू. विनोबाजी अभी सिंदी के झाड़ काटने का सत्याग्रह करने के संबंध

में विचार कर रहे हैं।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४० :

वर्धा, १२-३-३०

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक।

ता. १० को यहां सरदार वल्लभभाई को बधाई देने के निमित्त रात्रि को ८॥ बजे सभा हुई थी। पू. बाबासाहब सभापति और पू. विनोबाजी वक्ता थे। सत्याग्रह के लिए जो आज तैयार हों उनके नाम देने के लिए सभा में जाहिर किया कि वे अपने नाम विनोबाजी को दें। पू. विनोबाजी अब जंगल से लकड़ी काटने का सत्याग्रह करने की सोच रहे हैं। सिंदी में काटने में तो मालगुजार आदि से विशेष संबंध आता है, इसलिए जो जंगल ठेके से नहीं दिये गए हों, ऐसी जगह सत्याग्रह करने का इरादा हो रहा है।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४१ :

बम्बई, ४-१०-३४

चि. राधाकृष्ण,

पत्र तुम्हारा ता. २-१० का देरी से मिला, आशा है ता. १३ को प्रचारकों से मिलना हो सकेगा। श्री थत्तेजी प्रायः ठीक होगये, जानकर संतोष हो रहा है। श्री पद्मावती का पूरा संतोष होगया होगा, नहीं तो उसे उसके पिता के हवाले ही एक बार तो करना होगा। मौका लगे तो बापूजी व विनोबा से काकासाहब की बातें करवा देना। हरिभाऊजी को तो अजमेर जल्दी जाना ही होगा। वहां की जिम्मेवारी (चुनाव को लेकर) वह आये हैं, उसे पूरा करना पड़ेगा। श्री धोत्रे को आराम तो पूरा मिलता ही होगा।

श्री एन्ड्रूज व जोन्स से आज मैं मिल लिया था, कल फिर मिल लूंगा। हरदास साध का पत्र भेज रहा हूं। तुम पढ़कर उसका पत्र मेरे नाम का तुम्हारे पास व मेरा पत्र उसे दे देना। इसकी दवा-पानी की व्यवस्था पू. जाजूजी की सलाह से ठीक हो सके तो जरूर करने का खयाल रखना चाहिए। तुम उसे हिम्मत देना और जाजूसाहब की सलाह से व्यवस्था कर लेना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४२ :

वर्धा, ५-८-३८

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक। आप सब लोग अच्छी तरह पहुंच गये होंगे। पू. काकासाहब को कल दोपहर तक तो ठीक रहा। पीछे ११॥ से रात को ११ तक ८ दस्त लगे। बहुत कमजोरी आगई है। दफ्तरी चाहते हैं कि उन्हें ताकत के लिए अंडे का रस दिया जाय। वह लेना नहीं चाहते। अभी सुबह दफ्तरी ने साफ कह दिया है कि काकासाहब की शक्ति इतनी कम होगई है कि वह अंडे का रस लेना न चाहते हों तो वह जोखम नहीं उठा सकता। पू. जाजूजी यह बात कहने पू. बापूजी के पास गये हैं। काकासाहब अंडे लेना मंजूर नहीं करेंगे, यह साफ है। अतः अब उनका इलाज बदलना पड़ेगा, ऐसी साफ बात है। पू. बापूजी की क्या सलाह होती है, उसपर निर्भर है।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४३ :

वर्धा, १०-८-३८

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक।

कल नाना आठवले की तबीयत एकाएक खराब होगई। शाम को तो डाक्टरों ने आशा छोड़ दी थी। लेकिन इंजेक्शनों के जोर से रात तो

निकल गई है और शाम की अपेक्षा अच्छे भी मालूम देते हैं। इससे फिर उम्मीद होगई है कि शायद बच जावें। पू. बापूजी को खबर लगते ही वे पैदल ही रात को चले आये थे। नाना का हार्ट पहले से ही कमजोर है, सो कब फेल हो जाय, इसका डर बना रहता है। लीवर काम नहीं करता। ग्लूकोज के इंजेक्शनों के जोर पर शक्ति बना रखी है। देखा जाय दिन कैसे निकलता है।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४४ :

वर्धा, १२-८-३८

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक। आपकी २ चिट्ठियां कल ही मिली। तार भी मिला। श्री नाना आठवले के देहावसान का तार कल दोपहर में आपको दिया था, वह मिला होगा। नाना की बीमारी ता. ९ के बाद एक-सी बढ़ती ही गई और कल दोपहर को ११॥ बजे उनका देहान्त होगया। उनकी माताजी ने काफी हिम्मत बनाई। खुद रोने के बजाय अन्य रोनेवालों को सान्त्वना देने का काम किया।

कल सरदारसाहब मुंबई गये। जाते समय मुझसे पूछा कि यहां आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक बुलाई जाय तो व्यवस्था हो सकती है न? मैंने कहा कि बरसात के दिन हैं, यहां व्यवस्था करना बहुत कठिन होगा। खर्च भी काफी हो जायगा। अच्छा हो, कहीं दूसरी जगह व्यवस्था हो जाय। उन्होंने कहा कि दूसरी जगह तो बहुत लोग मांगते हैं। पर बापूजी यहां हैं न? उनका सुभीता देखना होगा। खर्च तो टिकिटों से निकल जायगा। व्यवस्था होने की ही दिक्कत है। तब मैंने कहा कि आप लोग यहीं करने का तय करेंगे तब तो किसी तरह व्यवस्था हो ही जायगी। बाकी यहां सुविधा बिल्कुल नहीं है।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४५ :

वर्धा, १४-८-३८

पू. काकाजी,

सविनय प्रणाम ।

आपकी कलकत्ते की ता. १०-८-३८ की चिट्ठी कल मिली । पूज्य भुआजी तथा नर्मदा के बारे में समाचार लिखे सो बिल्कुल ठीक है । चिट्ठी पढ़कर कई पुरानी बातें याद आने से दिल भर आया । इतनी जबर्दस्त सहनशक्ति व उदारता तो भगवान न आपको ही दी है । अति परिचय से मनुष्य में अवज्ञा के भाव हो जाते हैं । गंभीरतापूर्वक यदि आपके जीवन से हमारी तुलना की जाय तो विंध्यपर्वत के सामने छोटी-सी टेकड़ी के समान हमारे हाल हैं ।

मेरे जीवन में जो अधिक-से-अधिक आनन्द की बात है वह आपके परिवार में जन्म लेने की । ईश्वर की मुझपर इतनी असीम कृपा है कि जिसकी कोई हद नहीं । मेरे समान भाग्यवान तो आप भी नहीं हैं । भगवान ने कुछ ऐसी बांटणी की है कि जवाबदारी और तकलीफ व गालियां आपके हिस्से और आराम, धन्यवाद व बड़ों का आशीर्वाद मेरे हिस्से । चाचीजी की भी आंच लगती है सो आपको और स्नेह मिलता है सो मझे । ऐसी अजब ईश्वर की लीला है । फिर भी आपका-सा भाग्य तो आपका ही है ।

यदि भगवान की कृपा हो और आपके जीवन में बुद्धि पर विश्वास कुछ कम होकर ईश्वर पर अधिक हो जाय तो आपको उच्चतम शांति का अनुभव मिलने लग जाय । जिसने अपना सारा जीवन उसकी सेवा में अर्पण कर दिया, उसपर वह प्रभु इतनी कृपा नहीं करेगा क्या ? अवश्य करेगा । आज नहीं तो कल अवश्य करेगा । लेकिन अभी उसकी परीक्षा पूरी नहीं हुई दिखती है ।

कल जबसे पत्र पढ़ा, तबसे आपका एक-सा स्मरण हो रहा है और उसी कारण यह चिट्ठी मुझसे लिखी गई ।

आप यहां ता. २० को आ ही जावेंगे। नालवाड़ी में जो जमीन खरीदनी है उसके लिए मुझे ता. १८ या १९ को वम्बई जाना पड़ेगा ऐसा दिखता है। उस जमीन के मालिक महंत वम्बई रहते हैं।

पू. काकासाहव की तवीयत दिन-व-दिन सुधरती जा रही है। कुछ घूमने-फिरने लायक होने पर पूना की ओर हवा वदलने के लिए जाने का सोचा जा रहा है। यहां सब प्रसन्न हैं।

आपका वालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४६ :

वर्धा, १५-११-३८

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोकं। सरदारसाहव, कृपलानीजी, मिस हरिसन व त्रावनकोर डेप्युटेशन के ९ आदमी, इतने लोग यहां ठहरे हुए हैं। श्री एन्ड्रूज, विड़लाजी, जेराजानी, भाडगांवकर, औंध के राजकुमार व अन्य कई मेहमान आनेवाले हैं। औंध के राजकुमार आज आवेंगे। उन्ह ऊपर जवाहरलालजी के कमरे में ठहराने का सोचा है। वे कल या परसों चले जावेंगे। पीछे उस कमरे में विड़लाजी को ठहरावेंगे। वे तो ता. १७ को आ रहे हैं। पं. जवाहरलालजी कव आ रहे हैं तथा विड़लाजी कव जा रहे हैं, इसका कुछ पता नहीं। आप यहां कव आयेंगे ? चरखा-संघ की मीटिंग ता. १८ को होगी। पू. सरदारसाहव आये तवसे मैं दोनों समय उनके साथ बंगले पर ही भोजन करता हूं। सिंध के प्रीमियर अल्लाबख्श कल आ रहे हैं। उनका प्रबंध सरकिट हाउस में किया है, व उनके लिए कार शुक्लाजी भेजने को कह गये ह।

मेहमानों की धूम चल रही है।

आपका वालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४७ :

वर्धा, १६-११-३८

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक। साथ में भगतजी का पत्र है। पू. बापूजी से पूछा था। चक्षु-यज्ञ करने में उनको कोई हर्ज नहीं है। सरदारसाहब कह रहे थे यह तो गरीबों के फायदे की बात है। गुजरात में भी कराते हैं। आपकी अनुमति आवे तो या आपके आने पर स्थानीय लोगों की सभा करके अन्तिम निर्णय किया जाय। खर्चा तो डेढ़-दो हजार से भी अधिक होगा, एसा लगता है। बाकी कुछ ठीक अन्दाज नहीं लगता। भगतजी की पार्टी को बुलाया जाय तो उसमें भी काफी खर्चे की बात होगी।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १४८ :

मोरां सागर, २२-२-३९

चि. राधाकृष्ण,

तुम्हारा १५-२ का पत्र व सामान की पेटी कल शाम को मिली। चि. रामकृष्ण का पत्र व फोटो भी मिले। मैं यहां खूब शांति से व समाधान से हूं।[१] याने मस्त हूं। मेरी चिन्ता नहीं करना। बाहर की चिंता नहीं करने का खयाल रखता हूं। श्री हरीभाऊजी व मित्रों को प्रणाम वन्दे। याद तो प्राय: सबकी आ ही जाती है।

यहां रामायण पढ़नेवाला कोई है तो नहीं, फिर भी तुम रामायण भिजवा देना। मैं ही पढ़ने का ध्यान रखूंगा। मेरे पत्रों की आशा नहीं रखना। मैं तो जबतक स्टेट-प्रिजनर हूं, महीने में चार पत्र वर्धा जानकीदेवी को लिख भेजूंगा। वहांसे तुम्हें खबर मिल जाया करेगी।

जमनालाल बजाज का आशीर्वाद

---

[१]. जयपुर स्टेट में कैदी की हैसियत से।

: १४९ :

मोरां सागर, ६-४-३९

प्रिय राधाकृष्ण,

तुम्हारा ता. ३१-३ का पत्र कल शाम को मिला। तुम्हारे जाने के बाद खांसी तो बन्द होगई (अब बिल्कुल नहीं आती है), पांव का दर्द भी एक बार तो चला गया। मैं फिर से बराबर पांच-छः माइल घूम आता हूं। एक दिन तो आठ-नौ माइल का चक्कर होगया था। ज्यादा घूमना होता है तब जोड़ में जरा दर्द हो जाया करता है। मैं वहां तैल-मालिश तो बराबर करता हूं। सीकर से भेजा हुआ तुम्हारा मलम लगाया करूंगा।

अभी तक भोजन तो एक बार ही करता हूं। दो-तीन रोज से दूसरे कुएं का (मोरांगढ़ से) पानी पीने को मंगाता हूं। यह कुछ ठीक मालूम देता है। एक-दो रोज में बराबर मालूम हो जायगा। यहां का पानी तो सबों को ही भारी और भूख बन्द करनेवाला मालूम दिया। इसलिए पानी तो गरम करके पीता था। अब मोरां से जो पानी आता है वह ठंडा ही पीता हूं। बाद म गरम करने की जरूरत मालूम दी तो गरम कर लिया जायगा। गरम पानी से प्यास मिटती नहीं। मेरा वजन ता. १६ के बाद याने २१ रोज में नहीं हुआ है; क्योंकि यहां कांटा ह नहीं। डाक्टर ता. १६-३ के बाद आये नहीं। मेरी समझ से वजन ज्यादा घटा नहीं होगा। सब मिलकर १०-१२ रतल शायद कम हुआ हो। वजन कम होना तो कोई बुरी बात नहीं है, परन्तु हवा-पानी की खराबी के कारण व खाना न खाने के कारण कम हो तो वह ठीक नहीं। गर्मी पड़ना शुरू होने के कारण वात (वायु) की शिकायत कम होगई है। तुम फिर दूसरी बार दिल्ली जा-आये होगे। पू. बापूजी के स्वास्थ्य की थोड़ी चिन्ता हो जाया करती ह। तुमने उनके स्वास्थ्य के बारे में कुछ भी नहीं लिखा, न तुमने अपना वर्तमान में रहने का पता लिखा। यह पत्र तो मैं जयपुर, खादी-भंडार के पते से भेज रहा हूं।

राजकोट का फैसला अभी तक पढ़ने को नहीं मिला। शायद अबकी

पेपर आवेंगे उनमें पढ़ने को मिल जावे। बीच में तो पेपर बराबर तीसरे रोज आते थे, अब फिर गड़बड़ी होगई है। तो भी आगे-पीछे आ ही जाते हैं।

बापूजी का लेख तुमने भेजा वह भी देख लिया व अखबार में भी आया वह भी पढ़ लिया।

विधायक़ कार्य तो असली जड़ (पाया) हमेशा की दृष्टि से है ही। शांति का लाभ भी, तपस्या करना तो बड़ी बात हो जाती है, मनुष्य के जीवन के लिए अवश्य उपयोगी हो सकता है; अगर वह उसका पूरा फ़ायदा उठा सके तो। मुझे कल शाम की प्रार्थना में पहली बार सुख-समाधान व शांति का अनुभव हुआ। अगर इस प्रकार हर रोज समाधान मिलने लग जावे तो फिर क्या कहना! तुम्हारा बिहार जाना तो होता दिखाई नहीं देता। जाना हो जाता तो अच्छा ही था। वर्धा के पत्र तो राजी-खुशी के मेरे पास भी आ जाया करते हैं।

फलों में मोरां से पपीता प्रायः आ जाया करता है। मुझे पसन्द भी है। आजकल हरा साग भी एकाध मिल जाता है। विट्ठल राजी है। तुमने वर्धा, पू: मा वगैरे को मेरे से मिलने के बाद पत्र दे ही दिया होगा। फिर से राजी-खुशी लिख देना। चि. दामोदर तुम्हारे पास ही होगा। मदन कोठारी कहांपर है? आठवें रोज राजी-खुशी का पत्र भेज दिया करो।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च: श्री हरिभाऊजी तो बिहार जावेंगे ही, जाना भी चाहिए। चि. अनसूया को लिख देना पत्र देवे, राजी-खुशी के। राजपूताना शिक्षा-मंडल के पत्र का जवाब दे देना।

ता. ३-४ को अखबार मिले थे, बाद में नहीं मिले। फिर गड़बड़ शुरू होगई। मरजी उनकी।

 ज. ब.

: १५० :

जयपुर, १८-६-३९

पूज्य काकाजी,

सविनय पांवाधोक। साथ में शिवनारायणजी आचार्य का पत्र भेजा है। इनको क्या जवाब देना है? साधारण तौर से तो कालेज की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति नहीं देने की अपनी नीति है। बाकी इस बारे में कुछ सोचना हो तो लिखियेगा।

वर्धा का चिरंजीलालजी का पत्र वापस भेज रहा हूं। मालगुजारी तो नहीं लेने का तय ही है। उसका सवाल ही नहीं। अब तो पांच खेत हैं उनमें से पहला खेत तो देना है ही। बाकी के चार खेत रहे, उनमें से क्या करना है? यह सवाल है। पू. बापूजी से पूछा था कि नं. एक के खेत के अलावा उनको कितनी जमीन चाहिए, इस बारे में उन्होंने कहा कि यह आपको तय करना है। उन्हें कुछ खास नहीं कहना है।

बक्शीश-पत्र केवल जगह का कराया जाय या इमारतोंसहित? इसमें तो रजिस्ट्रेशन के खर्च का ही खास सवाल है; बाकी तो इमारतों सहित कराने में मतभेद की बात ही नहीं। पर फालतू खर्च क्यों लगाया जाय? इमारतों की रकम का अलग जमा-खर्च बही-खातों में तो किया जा सकता है।

आपका,
राधाकृष्ण

: १५१ :

वर्धा, ११-८-३९

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक। आपके छूटने की खबर परसों शाम को असोशियेटेड प्रेस द्वारा बंबई में मिली। मैंने कल्पना तो छूटने की कर ही रखी थी, इससे तार की राह देखता ही था।

पू. बापूजी से मैं कल मिला। आपकी इच्छा अभी जयपुर रहने की

हैं सो कहा। उन्होंने इसे पसन्द किया और कहा कि मैं भी उसे अभी यहां नहीं बुलाऊंगा। लेकिन डा. भरूचा को एक वार दिखाने की जरूरत है, सो उन्हें जयपुर बुला लेना चाहिए। परीक्षा उनसे करवाकर वाद में जो इलाज उचित हो सो कराया जाय। उसमें कोई वात नहीं ह। परीक्षा करने में डाक्टर की बरावरी कोई नहीं कर सकते। दूसरी वात यह कि आप जहां जेल में थे वहीं अव रहना पू. वापूजी को तथा सरदार को कतई पसन्द नहीं है। वहां से तो तुरन्त शहर में आ ही जाना चाहिए। वापूजी का कहना है कि जहां शेरों[1] के कारण हम शोर मचाते थे वहीं छूटने पर रहना जरा भी उचित नहीं है। वे तो अभी भी इसपर कुछ लिखना चाहते हैं, सो आपको वहां से तुरन्त दूसरी जगह जाने के लिए कहा है। मैंने कई दलीलें दीं कि वह शिकारखाने की एरिया में हैं। शिकारखाने के दुःखों की जानकारी की दृष्टि से वहां रहना अच्छा है आदि। पर वह उनको ठीक नहीं जंची। उन्होंने अंत में यह कहा कि जव शेर-वाघ आदि का मारने का इंतजाम हो जाय तव भले ही वहां रह सकते हैं, पर अभी नहीं। सरदारसाहव का कहना है कि अभी तो गांव में नहीं रहना चाहिए। काम शहर में करना है तो दूर-दूर भागने से कैसे काम चलेगा ? आदि।

आपका वालक,
राधाकृष्ण वजाज

---

[1] जयपुर शहर से कोई ४-५ मील के फासले पर कर्णावतों के वाग में जमनालालजी को वंदी किया गया था। यह मकान जंगल के पास होने से इसके चारों तरफ तथा आसपास की बस्तियों में भी शेर आ जाया करते थे। ये शेर आदमियों व जानवरों को मार भी दें, तव भी सरकारी कानून था कि इनको राज्यधिकारियों के अलावा और कोई नहीं मार सकता था। इनको अधिकारियों के शिकार करने के लिए सुरक्षित रखा गया था। लोग परेशान थे और डर की जिंदगी गुजारते थे। इसलिए इस कानून के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयत्न जमनालालजी ने किया था।

: १५२ :

वर्धा, २४-१०-३९

पू. काकाजी,

सविनय प्रणाम।

आप वर्किंग कमेटी पर आवोगे ऐसी कल्पना थी, पर तबीयत के कारण नहीं आये सो ठीक ही रहा।

काशीकावास में अभी मासिक रु. ८५) की सहायता चालू की है। खादी का काम करना है। उसमें दस-पंद्रह का नुकसान लग सकता है सो सब मिलाकर करीब मासिक रु. १००) वहां १० माह तक देने की बात है; सो रु. १०००) की कोष की चिट्ठी सही करने के लिए भेजी है। यह रकम पहले सीकर भेजने में यह हेतु है कि खादी का काम शुरू करने, रुई, सामान इत्यादि के काम में एकदम रुपया खर्च करना हो तो इसमें से खर्च किया जा सके। अलग कैपिटल देने की जरूरत न रहे।

आपका बालक,
राधाकृष्ण

: १५३ :

वर्धा, २-८-४१

पू. काकाजी,
सविनय पांवाधोक।

पवनार में अपने बंगले व मंदिर के बीच में जो एक जमीन का टुकड़ा था वह ग्राम-सेवा-मंडल में खरीद लिया है। उस जगह पू. विनोबाजी के व कुछ विद्यार्थियों के लिए मकानात बनाने का विचार था, जिससे बंगला खाली भी होजाय व पू. विनोबाजी पास भी रहें। पर सत्याग्रह चलता है, तबतक ग्राम-सेवा-मंडल की ओर से वहां कोई मकान अभी बनाने की पू. विनोबाजी ने इजाज़त नहीं दी। वहां अपने बंगले के पास आपके लिखे अनुसार जगह बनाने का प्लॉन श्री गुलाटीजी से लेकर आपको एस्टीमेट के

साथ भेज दूंगा। गुलाटीजी को सेवाग्राम से बुलाना होगा, इससे इस काम में थोड़ा विलम्ब होगा।

आपका वहां ठीक जम गया, यह खुशी की बात है। बाकी आपका कहां ठीक नहीं जमता ? और आपके लिए प्रेम की भी कहीं कमी नहीं, ज़बकि आपमें ही वह तन है।

सेवाग्राम की सब जमीनें ग्राम-सेवा-मंडल के नाम रजिस्टर हो चुकी हैं। सेवाग्राम आश्रम का प्रबन्ध पू. बापूजी के समक्ष और आगे किस तरह का रहेगा, इस बारे में पू. बापूजी ने जो पत्र ग्राम-सेवा-मंडल को दिया है उसकी नकल आपकी जानकारी के लिए इसके साथ भेजता हूं। ग्राम-सेवा-मंडल ने अपनी ता. ३१-७-४१ की बैठक में इस पत्र का ठराव रूप से स्वीकार भी कर लिया है।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १५४ :

नाळवाडी, २७-८-४१

पू. काकाजी,

सविनय प्रणाम।

मैं आज सुबह पू. विनोबाजी से मिलकर आया। ता. १९ की शाम से उन्हें ज्वर आ रहा है। आज नौ दिन में पहली बार नार्मल, ९७ $\frac{3}{4}$ डिग्री टेम्परेचर, हुआ है। इंफ्ल्युएंजा व मलेरिया मिलकर यह बुखार था, ऐसा डाक्टरों का मत है। वह काफी कमजोर होगये हैं। जेल के भीतर उनके कमरे में ही मुलाकात हुई थी। साथ में मोघेजी व सागरमलजी थे। नौ दिनों में दवाई कुछ नहीं ली। जेलर का तो दवाई के लिए आग्रह था, पर सुपरिटेंडेंट का विशेष जोर नहीं था। इसलिए वे दवा को टाल सके। खांसी शुरू से ही थी। अब कम है। गला खराब हो रहा है। सेवा में गोपालराव भाई हैं। वजन इन दिनों में बढ़ा नहीं। अब तबीयत सुधार पर है।

भाई रामकृष्ण से भी मिला था। वह बहुत प्रसन्न है। पू. विनोबाजी के

पास ही रहता है। बियाणीजी, भारूकाजी, गोपालरावभाई आदि सब प्रसन्न हैं।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १५५ :

सीकर, ७-११-४१

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक। दिल्ली में गाडोदियाजी को गो-सेवा-संघ का विधान दिखाया। सदस्य पत्रक दिया। उनकी अभी नियम लेने की तैयारी नहीं है। भाई परमेश्वरीप्रसादजी से मिला। उनके भाई-भाई का अलग होने का चल रहा है। अलग होने पर हिस्से में कौन-सी दुकान आती है, यह वे अभी नहीं कह सकते। अभी दवाइयों का जो काम है उसे वे चालू रखना चाहते हैं। पिताजी की इजाजत अभी नहीं ली है। उनकी इजाजत नहीं हुई तो वे नहीं आ सकेंगे। उनकी स्त्री के विचार भी इतने अनुकूल नहीं हैं। ऐसी स्थिति में उनका अपने काम में आ सकना बहुत ही कठिन दिखता है। एक ही बात आने के पक्ष में है, और वह यह कि इनकी खद की इच्छा, जीवन भर जिस विषय का ज्ञान प्राप्त किया, उसमें कुछ कार्य करने की है। लेकिन इनके भरोसे बैठने में कोई सार नहीं दिखता है।

विड़ला हाउस में पू. रामेश्वरजी, घनश्यामदासजी, लक्ष्मीनिवासजी, श्रीगोपालजी नेवटिया मिले थे। घनश्यामदासजी ने गाय के कत्ल किये गए चमड़े का इस्तेमाल न करने के नियम-पालन की अपनी असमर्थता प्रकट की है।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १५६ :

सीकर, ११-११-४१

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक। पत्र आपका ता. ६ का पू. चाचीजी के नाम का कल शाम को मिला। आप गोपुरी रहने आ गये होंगे।

श्री शास्त्रीजी आदि मित्रों को गो-सेवा-संघ का विधान दिखा दिया है। अभी किसीको भी सभासद बनाने का आग्रह नहीं कर रहा हूं। जहां-जहां का दौरा होगा, वहां-वहां की गोशालाएं देख लेने का सोच रखा है। घी की योजना की दृष्टि से भी विचार चालू है। तोरावाटी व अलवर की तरफ किसीको क्षेत्र की जांच के लिए भेजने का इरादा है।

मुरलीधर नाम का एक ब्राह्मण का लड़का, जो चरखा-संघ में काम करता था तथा सत्याग्रह के समय मेरे पास भी काम किया था, उसकी इच्छा गोसेवा के काम में आने की ह। चरखा-संघवाले खादी के काम में उसे लेने का सोच रहे थे। मेरी दृष्टि से यह लड़का अपने काम आ जावेगा। अभी तो इसे १५ रु. मासिक देना होगा, शिक्षण समय तक। उसके बाद योग्यतानुसार वेतन दिया जा सकेगा। इसे यहां घी की योजना का काम देने का, नहीं तो वर्धा साथ ले आने का, सोचा है। प्रथम तो उसे सेवा-कार्य की शिक्षा देनी होगी। उसके वाद काम का देखा जावेगा।

सीकर-सम्मेलन व प्रदर्शनी का काम ठीक तरह से हो गया है। लोगों को काफी संतोष रहा। उपस्थिति भी उम्मीद से अधिक ही रही। स्त्रियों की सभा में करीब हजार-पन्द्रहसौ की व सम्मेलन में तीन-चार हजार की उपस्थिति थी। प्रदर्शनी में ३ दिन में एक हजार की खादी बिकी। पुरोहित-जी भी कल प्रदर्शनी में आये थे। एक रोज मेरे साथ मुकुन्दगढ़ चलने की वात उनसे हुई है।

आपका वालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १५७ :

सीकर, २३-११-४१

पूज्य काकाजी,

सविनय पांवाधोक। सेवाग्राम का शिक्षण-वर्ग १ दिसम्बर से शरू होगा सो ठीक। यहां से एक-दो अच्छे कार्यकर्ता मिल सक तो देख रहा हूं। मुरलीधर को साथ लेता आऊंगा। वर्धा की गो-रक्षण की खबरें आई ऋषभ-

दासजी द्वारा सब मिलीं। दौसा में रामकरणजी व एक कार्यकर्ता हैं। उनकी इच्छा इस कार्य में है, ऐसा पता लगा है। सो उन्हें सीकर बुलाने का सोचा है। उनके बारे में श्री रामेश्वरजी आदि का मत अच्छा है। मेरा भी पहले का थोड़ा परिचय है।

पू. बापूजी का व्याख्यान सावंत के पास था। उन्होंने बंग को दिया बताते हैं। शायद कुंदर के पास भी हो। श्री पुरोहितजी मुकुन्दगढ़ नहीं जा सके। उनको उस रोज काम था। उन्होंने दिसम्बर के अंत के लगभग एक बार जाना मंजूर तो किया है। मैं अभी दुबारा नहीं मिल सका। मिलने पर पता लगेगा। खूड़ ठाकुरसाहब के पास हो आऊंगा।

वनस्थली में दो रोज रहा। वहां का काम खूब बढ़ रहा है। १८० लड़कियां होगई हैं। और भी बढ़ने का खयाल हो रहा है। परीक्षाएं स्वतंत्र बनाने की शास्त्रीजी की बहुत अभिलाषा है। महिला-मंडल ने जो परीक्षा-समिति बनाई है उसमें इनका एक पूरा समय काम करनेवाला आदमी ले लें, तो उस काम को गति मिल सकती है। श्री माथुरजी व रघुराजजी इन दोनों में से एक को वे दे सकेंगे, ऐसी बात हुई है। उनका खर्चा परीक्षा-समिति को उठाना पड़ेगा। इस बारे में शास्त्रीजी और भी विचार करके लिखेंगे।

गोविन्दगढ़ से चरखा-संघ का हेड आफिस रींगस ले आने की मुझ कल्पना आ रही है। कई दृष्टि से रींगस केन्द्रीय स्थान है व सुविधाजनक भी है। पर रींगस में दो बातों का खास विचार करना होगा। उसमें से जकात का तो, जयपुर के अंतर्गत की हो जाने से प्रश्न हल होगया। अब एक ही बात रही है कि जयपुर खास में हेड आफिस रखना अच्छा या सीकर जैसे ठिकाने में? यदि सीकर जैसे ठिकाने में काम का केन्द्र रखने में खास आपत्ति न लगे तो फिर रींगस का विचार अधिक गंभीरतापूर्वक किया जा सकता है। रींगस में जंक्शन स्टेशन, शेखावाटी का द्वार, पानी की बहुतायत, लड़के-लड़की सबकी शिक्षा की सुविधा आदि कई अनुकूल बात हैं। सो आप इस बारे में अपनी

निश्चित राय शीघ्र ही लिख भेजिये। हम सब प्रसन्न हैं। आपकी कमजोरी कम हो रही होगी।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १५८ :

वर्धा, ३०-११-४१

प्रिय राधाकिसन,

श्री मंगलसिंहजी खूड़ ठाकुर गो-सेवा-संघ के सदस्य हो गये, जानकर खुशी हुई। वह एक बार इधर आ जावें तो उन्हें भी समाधान मिलेगा व मुझे भी खुशी होगी। तुम उनको लिखना। गो-सेवा-संघ का कार्य अब जम जाने की आशा बढ़ती जा रही है।

आदमियों का भी जोड़-तोड़ बैठ जाता दिखता है। पत्र-व्यवहार ठीक चल रहा है। विधान बम्बई से सोमवार को आ जायगा। मंगल को रजिस्ट्री करवाने भेज दिया जायगा। रजिस्ट्रार को पुछवा लिया है। थोड़ा मामूली फेर-फार करना होगा, सो कर दिया जायगा। इस सर्वोदय के अंक में विधान, उद्देश्य व बापू का भाषण का सारांश छप जानेवाला है।

बकरी लाने व घी की व्यवस्था की जरूरत नहीं। यहां संतोषकारक व्यवस्था होगई है, बापू के लिए। चिमनलालभाई ने लिख भेजा है।

आज हमारी झोपड़ी (महल) का नांगल (गृह-प्रवेश) हुआ। जीमनेवाले तीन थे। रसोई बनानेवाले व परोसनेवाले सात जने थे। आनन्द रहा। चि. अनुमद्दू, बालक राजी हैं। सरदार कल, और बापूजी ता. ९-१२ को एक महीने के लिए बारडोली जायंगे।

जमनालाल के आशीर्वाद

: १५९ :

सीकर, ४-१२-४१

पू. काकाजी,

सविनय पांवाधोक।

कल श्री शास्त्रीजी, देशपांडेजी, रामेश्वरजी आये थे। पू. हरिभाऊजी,

वालकृष्णजी शेखावाटी के दौरे से यहां आ ही गये थे थे। पू. हरिभाऊजी हरमाडा में बैठकर कार्यकर्ताओं की शिक्षा का काम कर सकें तो अच्छा है। यह विचार सवने एक दिल से पसन्द किया है। लोक-परिषद के काम की बात भी सामने थी। पर हम सब लोग इस बात पर पूरे एकमत हैं कि हरिभाऊजी का स्वास्थ्य अव घूमने लायक नहीं है। उन्हें एक जगह बैठने का काम ही दिया जाना चाहिए। वे ता. ८ को तो वर्धा आ ही रहे हैं। इस बारे में श्री देशपांडेजी ने आपको एक पत्र दिया है। वह भी इसके साथ है।

यहां के चरखा-संघ के पूरे कार्य-निरीक्षण का एक पत्र पू. जाजूजी को मैं लिख रहा हूं। उसको देखने से आपको थोड़े में सब कल्पना आ जायगी।

पू. चाचीजी कल महारानीजी के पास होआईं। साधारण बातचीत हुई।

आपका बालक,
राधाकृष्ण बजाज

: १६० :

गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी,
सौर १२-९-१९८६ (२६-१-३०)

श्री सेठ जमनालालजी बजाज,
मार्फत : सुपरिंटेंडेंट ऑफ जेल,
वर्धा (सी. पी.)।

श्रीमन्महोदय,

नमस्ते। आपने जिस प्रेम से प्रेरित होकर गुरुकुल विश्वविद्यालय में भारतीय दृष्टि से अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र के अध्यापन कराने के लिए सामयिक रूप से चार वर्षों तक पढ़ाई का जो प्रवन्ध किया, उसके लिए हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

आपने आशा दिलाई थी कि चार वर्ष के परीक्षण की रिपोर्ट

आने पर "श्रीमहात्मा गांधी अर्थशास्त्र गद्दी" को स्थिर करने पर विचार कर लिया जायगा।

गत चार वर्षों की रिपोर्ट से आपको विदित होगा कि इस कार्य में कितनी सन्तोषजनक उन्नति हुई है तथा भविष्य में होने की आशाएं हैं।

भवदीय,
रामदेव
(मुख्याधिष्ठाता)

: १६१ :

प्रयाग, २५-५-३९

प्रिय श्री जमनालालजी,

कांग्रेस सरकारें 'मुसलिम संतों के चरित्र' पुस्तक का प्रचार कर और कांग्रेस भी उसके प्रचार में ध्यान दे तो हिन्दू-मुस्लिम-वैमनस्य को चुपचाप शांत होने में बड़ी सहायता मिलेगी। इस पुस्तक को साधारण सस्ते कागज पर छापकर इसका मूल्य भी एक रुपया किया जा सकता है। आप इसपर अपनी सम्मति भेजें और अपने कांग्रेसी सहयोगियों को लिखकर उनका ध्यान आकर्षित करें तो लाभ हो सकता है। मैं स्वयं इसके प्रचार का इच्छुक हूं। पैसे की दृष्टि से नहीं, जनता के लाभ की दृष्टि से। अतः इसके दूसरे भाग के अनुवाद और प्रकाशन में अधिक-से-अधिक परिश्रम मैं कर दूंगा।

आपका,
रामनरेश त्रिपाठी

: १६२ :

मद्रास,
माघ सुदी २ सं. १९८७ (२०-१-३१)

पूज्य श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मिति माघ बदी ११ का मिला। पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। यद्यपि मेरी इच्छा सदैव आपके हाल जानने की होती है, किन्तु

आपका ठिकाना न मालूम होनें के कारण पत्र नहीं दे सका हूं। समाचार-पत्रों में यह तो पढ़ा था कि आपको दो वर्ष कारागार की सजा हुई है, किन्तु यह विल्कुल ही मालूम नहीं कि आपको किस जेल में रखा है अथवा किस श्रेणी में रखा है।

दक्षिण भारत-हिन्दी-प्रचार का कार्य तो ठीक चल रहा है। यह तो आपको मालूम ही होगा कि हरिहर शर्मा को एक साल के कारागार की सजा मिली थी, जिसमें अभी भी दो-तीन महीने वाकी ह। सत्यनारायणजी काम वहुत अच्छी तरह देख रहे हैं और मेरे से जो हो सका है, मैं भी करता हूं। प्रेस का प्रबंध अलग कर ही दिया था, उसपर भी सेक्यूरिटी मांगी गई थी। हम लोगों ने १ मास तक प्रेस को वंद रखकर चेष्टा करके आर्डर को केन्सल कराकर फिर प्रेस चालू कर दिया था, जोकि वरावर काम कर रहा है। एक मास बंद रखने में हमें हानि तो वहुत ही हुई, वाकी सेक्यूरिटी देना तो हमारे लिए असंभव ही था। प्रेस पुराना होगया है, इसलिए नया लेने का विचार है।

खादी-वस्त्रालय का कार्य तो अच्छी तरह चल रहा है। जितनी मांग है उसको वे पूरा नहीं कर सकते, ऐसी हालत है। लेकिन कोंगू भंडार की हालत खराब है, जिसके लिए तिरपुर से भाई पी. डी. आसर आये थे और मैंने उनसे प्रबंध कर लिया है। आशा है, यह काम भी अच्छी तरह चलेगा।

सभी मित्रों को आपकी ओर से "वन्देमातरम्" कह दिया है। सभी प्रसन्न हैं। आपको सविनय वन्देमातरम् लिखने को कहा है। कर्णसिंहजी तो पहले की तरह ही कार्य कर रहे हैं, कोई भी फर्कवाली बात नहीं है। यदि श्रीनिवास आयंगरजी इस समय यहां कार्यभार को ले लेवें तो मद्रास कभी भी पीछे नहीं रहता।

मैं पहलेवाला काम ही कर रहा हूं, बल्कि व्यापार को बिल्कुल बंद कर दिया है। एक जनरल स्वदेशी लि. नाम की कंपनी खोली है, उसमें स्वदेशी कपड़े का व्यापार करता हूं। खादी का भी कोंगू-वालों से इन्तजाम किया है। कार्य अच्छी तरह चल रहा है। यहां इस कार्य को अच्छी सफलता

मिलने की आशा है, किन्तु मैं तो आर्थिक कठिनाइयों के कारण इसकी विशेष उन्नति नहीं कर सकता हूं। मेरा विचार दूसरे कामों को छोड़कर इसी कार्य को करने का है। ईश्वर सहायता करेगा।

भाई महादेवलाल सराफ का पत्र पहले तो आता था, अब नहीं आता है। कारण मालूम नहीं।

वन्देमातरम्।

आपका,
रामनाथ

: १६३ :

नागरी प्रचारिणी सभा
बनारस, सौर १६, १९९४
३०-३-३८

प्रिय महोदय,

आपने राष्ट्र-भाषा-प्रचार-कार्य के निमित्त जो सराहनीय उद्योग किया है, उसके लिए सभा आपकी अत्यन्त अनुग्रहीत है। अपने गत १२ मार्च के अधिवेशन में सभा नें आपको अपना मान्य सभासद स्वीकार किया है। आपसे सविनय निवेदन है कि सभा से इस सम्मान को कृपापूर्वक स्वीकार करें।

आपका,
रामनारायण मिश्र
(सभापति)

: १६४ :

जुहू, १०-४-३८

प्रिय श्री रामनारायणजी,

आपने अपने ३०-३ के पत्र में लिखा है कि आपने मुझे मान्य सदस्य बनाया है। कृपया लिखिये कि मान्य सभासद की क्या-क्या जिम्मेवारियां

हैं। आप उससे क्या अपेक्षाएं रखते हैं। नागरी प्रचारिणी सभा का विधान और नियमावली भेज दीजियेगा, ताकि मुझे इस विषय में अधिक सोचने में सुविधा हो।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

: १६५ :

नई दिल्ली, १०-१-३५

पूज्य भाई जमनालालजी,

सप्रेम नमस्ते। बापूजी के स्वास्थ्य-समाचार पत्रों में पढ़कर मन व्याकुल रहता है। समय हो तो लिख भेजें कि अब वह कैसे हैं?

जनवरी में मैं ठक्करबापा के साथ पंजाब का दौरा करनेवाली थी। हरिजन-कार्य के लिए रुपये जमा करने थे, लेकिन अब बापा ने अपना विचार बदल दिया और गुजरात का दौरा करने चले गये। अभी मैं यहीं हूं। कुछ दिन के लिए लाहौर जाऊंगी। फिर आशा है कि मार्च महीने में दौरा आरम्भ कर सकूंगी।

जिस कमला के बारे में मैंने लिखा था, वह शायद मैट्रिक पास है। अंग्रेजी अच्छी जानती है। उसका पति पंजाब में वकील था। उसके पास कुछ जायदाद और रुपया है। देश के काम में सहानुभूति रखती है। सच्ची और मेहनती स्त्री है। आप उससे अवश्य पत्र-व्यवहार करें। मेरा विचार है कि वह आपके आश्रम के लिए अवश्य उपयोगी सिद्ध होगी।

बापूजी की खबर अवश्य दें।

आपकी,
रामेश्वरी नेहरू

: १६६ :

जालोर (जोधपुर राज्य),
४-२-४२

श्री प्रिय भाई जमनालालजी,

सप्रेम नमस्ते। आपका निमंत्रण मिला था। हीरालालजी शास्त्री ने

भी आपके पत्र की नकल मुझे भेज दी थी। परन्तु उस समय तो मेरा आना बिल्कुल असम्भव था। जयपुर, जोधपुर और उदयपुर के राज्यों में प्रवास का ठहराव हो चुका था। पिछले मास की २२ तारीख से मैं प्रवास के लिए निकली हूं और ता. १७-१८ फरवरी तक अभी इन्हीं प्रदेशों में हरिजन-काम से फिरते रहना है। इसलिए आशा करती हूं कि आप मेरी अनुपस्थिति को क्षमा करेंगे। सिवा इसके गो-सेवा का काम तो मेरेलिए बिल्कुल नया है। उसके संबंध में तो मैं कुछ जानती नहीं। जिस क्षेत्र में मैं पड़ी हूं, उसी में पूरा काम हो जावे तो बहुत है। नया काम मैं क्या ले सकूंगी!

इस बार मार्च के महीने में हरिजन-सेवक-संघ की वार्षिक बैठक वर्धा में होनी निश्चित हुई है। उस समय वहां आने पर आपसे मिलना होगा, तब जबानी बातचीत भी कर लेंगे।

आशा है, आप सकुशल होंगे। जानकीबहन को व लड़कियों को यथायोग्य—

आपकी बहन,
रामेश्वरी नेहरू

: १६७ :

भुसावल, १२-३-२६

सेवा में श्री सेठजी,

पहले ही 'नवजीवन' पढ़ा, मन पर बहुत असर हुआ। आपकी तपश्चर्या के फलस्वरूप ही आपको ऐसी विधि को कबूल होनेवाले साथी, दामाद, कन्या, पत्नी और आपके खद का मनोविग्रह तथा पूज्य बापूजी की मदद मिली है। और किसके भाग्य में यह है भला! परमेश्वर से मेरी हार्दिक मांग क्या है, यह इसपर से आप अन्दाजा लगाकर समझ सकते हैं। अभी तक चिरंजीवी शान्ति का निश्चित रूप से तय नहीं हुआ। देखें भगवान क्या करते हैं।[1]

भवदीय,
वासुदेव दास्तान

[1] मराठी से अनूदित।

: १६८ :

सत्याग्रहाश्रम,
वर्धा, १६-६-२८

श्री जमनालालजी,

सावरमती-आश्रम में ब्रह्मचर्य के संबंध में जो नियम बने हैं उस विषय में यहां भी सहज भाव से चर्चा होती रहती है। यहां भी वही नियम रहें, ऐसा सहज ही लगता है तथा संस्था के व व्यक्ति के तेज की रक्षा भी उसी-में है, यह स्पष्ट है। नियम बनाने से कुछ लोग जायंगे, यह भी दिखाई देता है। तथापि नियमों का पालन करने में ही कल्याण होनेवाला है, इसलिए नियम होना ही चाहिए, ऐसा लगता है। आपका भी विचार जानने की इच्छा है। आपकी राय जानने में आपकी स्थिति कठिन हो जाती है। पर विद्यालय की दृष्टि से आपके विचार जानना आवश्यक भी है।

आपका स्वास्थ्य अब कैसा है? यहां कब आने का इरादा है?[१]

विनोबा के प्रणाम

: १६९ :

भिवापुर, १८-१-३२

श्री जानकीबाई,

मैं कल अचानक ही यहां आया। मेरा कार्यक्रम जल्दी ही तय हो तो फिर यहां आना ही चाहिए न।

बीच में रामदेव से मिलने के लिए और यशवंत के नतीजे के लिए थोड़ा ठहर गया था।

मदालसा के शिक्षण की चिन्ता न करें। उस संबंध में मैंने योजना बनाई है। बालकोबा उसका वर्ग लेंगे और यथासंभव थोड़ी देर सितार भी सिखायंगे। संस्कृत भी चालू है ही। कन्याशाला में उसका रहना ही उचित है, यह मेरी निश्चित राय है।

मैं यहां कितने दिन रहूं यह पता नहीं। बाकी वहां व्यवस्था तो रखी है। वहां से डाक, चिट्ठियां, प्रूफ (गीताई के) आदि लेकर कुंदर यहां रोज

---

[१] विनोबाजी के सब पत्र मराठी से अनूदित हैं।

शाम को आवेगा और सुबह मेरी डाक आदि लेकर जावेगा। बालकों की इस सेवा के लिए मैं उनको बदले में क्या दूं ?

इस तरह से मेरे साथ रोज का संबंध रखा जा सकता है। मेरी इच्छा है कि मेरे द्वारा आप लोगों की सेवा आपकी शर्तों के मुताबिक ही हो।

कमलनयन, ओम्, रामकृष्ण की ओर आप ध्यान दे ही रही हैं।

विनोबा के प्रणाम

: १७० :

भिवापुर, २४-८-३२

श्री जानकीबाई,

आपकी और रामेश्वरजी की चिट्ठी मिली। जमनालालजी को मैंने आज सुबह पत्र लिखा है। तार देने की जरूरत नहीं थी। तार में और पत्र में एक ही दिन का अंतर रहता। पत्र आज मेल से रवाना हो ही जायगा।

इसके अलावा सुपरिंटेंडेंट को भी मैं पत्र लिखनेवाला हूं। बाकी जमनालालजी की चिंता करने का मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता। परमात्मा सारी चिंता कर रहा है और वह खुद भी वजन कम न हो, इसका ध्यान रखने ही वाले हैं। वजन १७० पौंड तक कम हुआ है, उसमें कोई भी हर्ज नहीं। ५ पौंड और कम हुआ। उसकी भी मुझे विशेष चिंता नहीं होती। जमनालालजी जान-बूझकर लापरवाही नहीं करेंगे।

विनोबा के प्रणाम

१७१ :

पवनार, १०-९-३२

श्री जानकीबाई,

यह चिट्ठी लानवाले सज्जन श्री मोगे हमारे साथ जेल में थे। वह खानदेश में स्त्रियों का सम्मेलन कर रहे हैं। उसके लिए मदालसा को ले जाने के लिए वह आये हैं। जमनालालजी ने उनको वैसा सुझाया था। आपकी अभी तक की परिस्थिति में आप मदालसा को भेजसकेंगी या नहीं, यह आप देख लें और उन्हें वैसा सूचित करें।

विनोबा के प्रणाम

: १७२ :

वर्धा, ९-१२-३२

श्री जमनालालजी,

आपके जन्म-दिन की याद करके प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद यह लिख रहा हूं। आज की मेरी प्रार्थना मानो धुलिया जेल में हुई।

आपके स्वास्थ्य की म चिंता करना नहीं चाहता। मेरे बदले सब तरह की चिंता करनेवाला सर्वत्र व्याप्त हैं।

आपकी ओर से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिली हुई सूचनाओं पर, अपनी वृत्ति के अनुसार, यथासंभव अमल करता रहा हूं। लोगों के साथ पहले से अधिक परिचय रखता हूं। पत्र-व्यवहार थोड़ा-बहुत करता हूं और हजामत भी नियमित बनाने की कोशिश करता हूं।

कमलनयन की पढ़ाई के प्रश्न की जवाबदारी उठाने की मेरी इच्छा तो होगी ही; लेकिन डेढ़ सौ पौंड का बोझ उठाने की शक्ति आवेगी कि नहीं, यह भगवान जानें। उसका सद्भाव और मन की मुक्तता मुझे अच्छी लगती है। किन्तु संयम की और विचार की कमी है।

मनोहरजी को प्रह्लाद और रामदास ये दोनों बच्चे अच्छे मिले हैं। पिछले जन्मों के किसी पुण्य से ही मनोहरजी का पावन संग उन्हें मिला है। श्री रामेश्वरजी के श्रीराम की व्यवस्था जमा रहा हूं। पोतनीस के साथ मेरा पत्र-व्यवहार चल रहा है।

मदालसा को भगवान ने अशक्तता दी है। लेकिन भगवान की यह देन भी कल्याणकारी बनाई जा सकती है, यदि उस प्रकार की दृष्टि हो। उस लड़की में निग्रह अभी थोड़ा कम मालूम होता है। लेकिन हरि-प्रेम है और हरि-प्रेम रखनेवाले के प्रति मुझे जो हार्दिकता लगती है, उसका वर्णन नहीं कर सकता। वर्धा में मैं जिस दिन रहूं उस दिन सवेरे ७ से ८ तक का समय मैंने उसे दिया है। अभी तो मेरी प्रिय ज्ञानेश्वरी शुरू की ह। उस वक्त ओम् और वत्सल भी आती हैं।

मेरा स्वास्थ्य सदा की भांति उत्तम है। आरोग्यवान् और दुर्बल।

बीच में पवनार में प्रातःकाल नदी पर स्नान करने का प्रयोग किया। इसलिए दो दिन जरा जुकाम होगया था। उसकी बेमतलब जाहिरात होगई और आपका संदेश पल्ले पड़ा।

लिखने को कुछ खास नहीं था, फिर भी चार पंक्तियां लिखने की इच्छा हुई तो लिख डाली हैं।

मणिभाई, पुरुषोत्तमभाई, माधवजी, गुलजारीलालजी (वहां हों तो) मीरसाहब आदि लोगों को सप्रेम नमस्कार। चि. चौदस को आशीर्वाद।

विनोबा के प्रणाम

: १७३ :

वर्धा, १८-११-३३

पूज्य विनोबाजी,

कल आते समय चि. कमला से मालूम हुआ कि, चि. मदालसा की भी इच्छा कुछ रोज यहां पहाड़ पर अपनी मां के साथ रहने की है। मैंने उसे पूछा तो उसने कहा विनोबाजी की इजाजत हासिल नहीं की है। अगर वह आना चाहे और आप भेजना चाहो तो उसे श्री चिरंजीलाल बड़-जाते के साथ भिजवा सकते हैं। अमरावती से एक ही बार सुबह सात बजे के लगभग चिकलदा के लिए मोटर छूटती है और वहां ११॥ के करीब पहुं-चती है। यहां की आबहवा ठीक मालूम देती है। मुझे तो एक ही रात्रि में ठीक-ठीक शांति व दिमाग में हलकापना मालूम देने लगा। मदालसा अगर आना चाहे तो वह सोमवार को यहां पहुंच जावेगी तो ठीक रहेगा, ऐसी उसकी मां की इच्छा है।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: १७४ :

वर्धा, ८-८-३४

श्री जमनालालजी,

आप यहां से शरीर से गये हैं, फिर भी मन से यहां की चिंताओं में अभी घिरे हैं, ऐसा कल के, स्वामी के, पत्र से मालूम पड़ता है।

कन्याश्रम के बारे में निश्चित निर्णय अभी नहीं कर सका हूं। लेकिन जो भी निर्णय होगा धर्म रूप ही होगा। संस्था का रूपांतर करना हो या देहांतर भी करना जरूरी हो जाय, मगर जो शुभ, कल्याणकारक और आवश्यक होगा, वही करेंगे। इसलिए इस विषय में आप पूर्ण रूप से निश्चित रह सकेंग तो अच्छा होगा।

संस्था में ज़रा दिक्कत पैदा हुई कि उसे बिखेर दें, ऐसी मेरी वृत्ति नहीं है। बापूजी की तो कतई नहीं है। लेकिन भंग करना ही धर्म हो जाय तो फिर उसे भंग कर देने की भी वृत्ति रखनी ही चाहिए। नहीं तो सेवा करने की इच्छा होते हुए अ-सेवा हो जायगी। संस्था हमने आसक्ति से शुरू नहीं की है। जिस हेतु से शुरू की है, उस हेतु के रक्षण के लिए जो करना उचित होगा, वह करेंगे।

स्त्रियों की उन्नति के विना हिन्दुस्तान की सारी उन्नति रुकी हुई है, इसमें ज़रा भी शक नहीं है। यह मैं निश्चित रूप से मानता हूं कि उसके लिए प्रयत्न करना अत्यन्त आवश्यक है। भविष्य में स्त्रियों की सेवा में ही मेरा उपयोग हो, ऐसी ईश्वर की इच्छा भी हो सकती है। धुलिया जेल में किसे कल्पना थी कि स्त्रियों की सेवा करने का मौका मुझ मिलनेवाला है? लेकिन ईश्वर की वैसी मर्जी थी। जो कुछ हो सो ईश्वर की इच्छा से हो, मेरी इच्छा से न हो। ईश्वर की इच्छा मान लेने के लिए मैं तैयार रहूं तो मेरा कर्तव्य पूरा हो जाता है। इसी प्रकार आपका कर्तव्य है, इसी तरह औरों का भी।

आपका कल का पत्र अभी मिला। आपका यह कहना सही है कि कोई विशेष स्त्री के मिले बिना स्त्रियों की संस्था चलना कठिन है। लेकिन इसका मैं अधिक सूक्ष्म अर्थ करता हूं, विशेष स्त्री हम कहां से पावेंगे? ऐसी कोई होगी तो वह स्वयं ही कोई-न-कोई काम क्यों नहीं शुरू करेगी? इसलिए स्त्रियों की सेवा याने ब्रह्मचर्य, यह समीकरण मैं अपने मन में समझा हूं। उसीपर आघात हो तो कितनी ही बड़ी संस्था चलाकर भी क्या सेवा होगी?

भक्त मीराबाई एक बार वृन्दावन गई हुई थी। वहां एक संन्यासी

आये हुए थे। उनके पास हजारों लोग उपदेश-श्रवण करने के लिए जाते थे। मीराबाई को भी श्रवण की आतुरता थी ही। इसलिए उन्हें वहां जाने की इच्छा हुई, लेकिन संन्यासी बाबा का नियम था कि स्त्रियों का दर्शन करना नहीं। मीराबाई को बुरा लगा। उन्होंने उन संन्यासीजी को पत्र लिखा—

"हुं तो जाणती हती, के व्रजमां पुरुष छे एक। व्रजमां बसीने तमे पुरुष रह्या छो, तेमां भलो तमारो विवेक या भलो।"[1]

इस आदेश के अनुसार अगर हम चल सकें, जगत के एक ही पुरुष को पहचान सकें, तो संस्था का संचालन न करके भी हम स्त्रियों की सेवा कर सकेंगे, ऐसी मेरी श्रद्धा है। और आपकी भी है, ऐसा मैं मानता हूं।

इसलिए यहां की परिस्थिति के संबंध में पूर्ण रूप से निश्चिंत रहकर आप पूरे अर्थ में आराम, जैसा शरीर से वैसा मन से, करेंगे तो वह योग्य होगा। ऐसा कर सकेंगे तो बापू को भी यहां आराम मिलेगा।

बापू के इस समय के उपवास ईश्वर की कृपा से निर्विघ्न ही नहीं, बल्कि आनन्दमय होंगे, ऐसे लक्षण मालूम होते हैं।

विनोबा के प्रणाम

: १७५ :

(बंबई से वर्धा जाते हुए) २२-८-३४

श्री जमनालालजी,

यह मैं ट्रेन में लिख रहा हूं। इस बार मेरा आना आवश्यक था, ऐसा मुझे लगता ही नहीं था। लेकिन कमलनयन की इच्छा, महादेवभाई की सिफारिश और बापू की सम्मति का खयाल करके मैंने आना उचित समझा।[2] मुख्यत: कमलनयन की इच्छा का मैंने अधिक खयाल किया। और उसके

---

१. "मैं तो समझती थी कि ब्रज में एक ही पुरुष है; ब्रज में रहकर भी तुम पुरुष बने रहे यह कैसा तुम्हारा विवेक?"

२. जमनालालजी के कान के ऑपरेशन के समय का जिक्र है। यह आपरेशन घातक भी हो सकता था। इस कारण से विनोबाजी आपरेशन के समय वर्धा से बंबई गये थे।

लिए मुझे पछतावा नहीं है। मेरे आने से जानकीबाई को संतोष हुआ, उसमें मुझे संतोष है। जानकीबाई के प्रति अनेक कारणों से मेरे मन में आदर है। यह सही है कि उनमें निर्णय-शक्ति कम है; लेकिन उनकी बुद्धि 'आपरेशन' करने लायक है, ऐसा मुझे नहीं लगता। कुछ-कुछ बातों में वे जो सूक्ष्म विचार कर सकती हैं, यह देखकर उनकी बुद्धिमत्ता के संबंध में अनुकूल धारणा पैदा होती है। उदाहरण के रूप में, दुःख का उद्गार प्रकट करने के लिए उनका जो गुण दिखाई दिया और सब-कुछ सहन करके दुःख का उद्गार विल्कुल ही प्रकट न होने देने में जो हानि है, वह दिखाई उसमें भी हेतु था। 'हे मां, अरी मां' आदि चिल्लानेवाला इन्सान जिस प्रकार से आसपास के लोगों को चिंता में डालता है, उसी प्रकार सब दुःखों को दबा देनेवाला भी आस-पास के वातावरण में चिंता पैदा कर सकता है। इसलिए दुःख में चिल्लाने बैठें, यह सूचित करने का मेरा हेतु नहीं है। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' इतना ही भावार्थ लिया जाय। परन्तु जानकीबाई की जो दलील मुझे कुतूहल पैदा करनेवाली जान पड़ी उसको मिसाल के तौर पर ले रहा हूं।

इस ऑपरेशन के समय, संभव हो तो, बापू पास में रहें, ऐसी उनकी इच्छा थी। अपनी वह मांग उन्होंने बाद में विचारपूर्वक छोड़ दी। किन्तु उनकी उस मांग में भी एक मधुर हेतु था। बापू की हाजरी में ऑपरेशन निर्विघ्न रूप से संपन्न होगा, इस खयाल से वह नहीं कह रही थीं। बापू के आशीर्वादों पर उनकी श्रद्धा थी ही। लेकिन यदि समझो ऑपरेशन के समय आपके प्राण चले गये तो? एसी स्थिति में बापू पास में हों तो अंत समय में आपको उनके दर्शन होंगे, यह उनकी कल्पना थी। ये कल्पनाएं किसीको पागलपन भी लग सकता है, यह मैं कबूल करता हूं; लेकिन वे मुझे पावन और मूल्यवान मालूम देती हैं।

कवि नें कहा है 'अति स्नेहः पाप शंकी'। अत्यधिक स्नेह के कारण चाहे जैसी शंकाएं आने लगती हैं। बेमतलब धुकधुकी लगने लगती है। कुछ ऐसी ही जानकीबाई की स्थिति है। इसलिए उनकी बातों का अक्षरार्थ छोड़कर और भावार्थ लेकर उनको संतोष देने का प्रयत्न करना उचित है।

नर्स से गलती होजाय तो गुस्सा नहीं आता, घरवालों से गलती होजाय तो गुस्सा आता है। यह विश्लेषण भी विचार करने जैसा है। हमारे पिताजी मुझे खूब मारते थे। एक दिन विचार करके उन्होंने आजीवन मारना छोड़ दिया। पहले दिन मुझे आश्चर्य हुआ कि मार कैसे नहीं पड़ी; क्योंकि मार खाना तो हमारी रोज की खुराक थी। पर दूसरे दिन भी मार नहीं पड़ी; तब मैं समझा कि अब तरीका बदला है। और वही बात थी। वह मारते भी थे तो विचारपूर्वक और मारना छोड़ा भी तो विचारपूर्वक। अगर मैं बाहर के किसी आदमी को कहता कि वह मुझे मारते थे तो कोई भी सच नहीं मानता, क्योंकि सारी दुनिया के साथ उनका व्यवहार प्रेम और दयालुता का होता था। मुझे वह मारते थे तो वह भी प्रेमपूर्वक और दयापूर्वक मारते थे, ऐसा ही मैं उस समय समझता भी था। लेकिन इतना समझते हुए भी मुझपर उस मार का अनुकूल असर नहीं होता था। मुझपर गुस्सा करने का उनको पूरा हक था, ऐसा मैं आज मानता हूं और उस समय भी मानता था, लेकिन इस हक का उन्होंने इस्तेमाल न किया होता तो ज्यादा असर होता, ऐसा मुझे लगता है। यह जरूर मेरे विरुद्ध की बात थी कि मेरा स्वभाव लापरवाही और आग्रही था। और इसीलिए जो विचार मैंने हमारे पिताजी के बारे में प्रकट किया है उसे प्रकट करने का मुझे वस्तुतः कोई भी अधिकार नहीं है।

यह सब लिखने का कोई खास उद्देश्य नहीं है, ट्रेन में वक्त पड़ा है, उसको काम में ले लिया, बस। अब यह समाप्त करके कातने लगूंगा।

तकली कातने में मुझको ऐसी अनोखी स्फूर्ति और शांति मालूम होती है कि मेरे मानसिक शब्दकोश में माता, गीता, और तकली ये तीन शब्द अक्षरशः समानार्थक बन गये हैं। 'आई' (याने मां) इस शब्द में मेरे घर की सारी कमाई संचित हो जाती है। 'गीता' शब्द में वेदों से लेकर 'संत-परम्परा तक'-जितना अध्ययन किया वह सब आ जाता है। और 'तकली में' बापू-जैसों की संगति का सार उतर आता है।

विनोबा के सप्रेम प्रणाम

: १७६ :

वर्धा, १७-११-३४

श्री जमनालालजी,

कल आपका अकारण स्मरण हो रहा था । 'अकारण' कहने का कारण यह कि आपका ईश्वर पर विश्वास होने से स्मरण की आवश्यकता ही नहीं थी । इसलिए उसके बाद कुछ समय भजन में बिताया । हालांकि आपका स्मरण हो रहा था तो भी चिंता ज़रा भी नहीं थी ।

जानकीबाई ने सगुण भक्ति ठीक साधी, मेरे भाग्य में तो सदा निर्गुण भक्ति ही लिखी हुई है ।

विनोबा के प्रणाम

: १७७ :

वर्धा, २१-११-३४

श्री जमनालालजी,

जन्म-दिन का पत्र मिला । आपके हाथों से आजतक जितनी सेवा हुई, उससे कहीं अधिक सेवा भगवान को आपसे लेनी है, ऐसी मेरी श्रद्धा है । पिछले साल आपको जो शारीरिक यातनाएं भोगनी पड़ीं उन्हें आगे की सेवा का में पूर्व चिह्न समझता हूं । भगवान की दया अद्‌भुत है । उसका यथार्थ ज्ञान किसे होगा ? किन्तु हमें उस ज्ञान की आवश्यकता भी नहीं है । श्रद्धा ही काफी है ।

विनोबा के प्रणाम

: १७८ :

अनंतपुर १०-२-३५

श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मिला । श्री रामेश्वरजी को मैंने शांत रहने के बारे में पहले ही पत्र लिखा था । और आजकल तो प्रायः रोज ही खत जाता है ।

ता. १४ अथवा १५ को वर्धा पहुंचने की कल्पना है । यहां का सूक्ष्म निरीक्षण गोपालभाई की सूचना और निदर्शन के अनुसार कर रहा हूं ।

जो योग्य प्रतीत हुई वे सूचनाएं दी हैं और दे रहा हूं। सब सूचनाओं का सार अंत में लिख रखनेवाला हूं।

इस महीने के अंत तक बहुत करके वर्धा में ही रहना होगा। बीच में तालुका के एक-दो केंद्रों में जाना होगा। मार्च के पहले सप्ताह में येवले की ओर जाना होगा।

मेरा कार्यक्रम आपने पूछा इसलिए लिखना चाहिए। बाकी मेरी इच्छा कहें या वासना कहें या विचार कहें तो वह मुझे दो ही बातें करने की देते हैं। एक भगवान का नाम लेना, दूसरे दिनभर कातना। इसके अलावा तीसरी प्रेरणा मुझे होती ही नहीं। पढ़ना, लिखना, चर्चा; व्याख्यान इत्यादि सबकी कीमत मुझे अक्षरशः शून्य प्रतीत होती है। नाम-स्मरण और कातना, इन दोनों का अर्थ मुझे मेरेलिए एक ही मालूम देता है। इसलिए मैं इन दोनों को मिलाकर १ समझता हूं। इस १ पर ० रक्खें तो १०,१०० इत्यादि होंगे। लेकिन १ की मदद न हो तो सारे ० (शून्य) बेकार हो जायंगे।

१ की चिंता मैं करूं, ० की चिन्ता करने के लिए सारी दुनिया समर्थ (काबिल) है। इसलिए मेरा नित्य का कार्यक्रम आश्रम में दिनभर कातना और रात में चिंतन करना, इतना ही रहता है; और यही आगे भी रहेगा, ऐसा लगता है। इस विषय में आपको शायद मदालसा से जानकारी मिली होगी।

पिछले दिनों मैंने दोनों वक्त की प्रार्थना के दरम्यान मौन शुरू किया, वह आश्रम तक ही लागू था, बाहर नहीं। आगे चलकर बाहर भी लागू किया। वैसा ही इस कार्यक्रम का होगा, ऐसा भविष्य दिखाई देता ह। इस तरह से पहले मर्यादित नियम का 'प्रयोग' और बाद में व्यापक नियम का 'योग' ऐसा मेरा झुकाव है। इसे धीरे-धीरे आगे बढ़ाने का विचार है। भीति अथवा आसक्ति का तो पता ही नहीं है।

उपरोक्त मुख्य कार्यक्रम के अविरोध से साध्य करने के लिए निम्न कार्य करने हैं।

१. म. (महाराष्ट्रधर्म) साप्ताहिक के लेखों का चुनाव मैंने अधिकांश कर लिया है। वह पूरा करके छापने के लिए देना।

२. महादेवभाई का गीता का भाषांतर ठीक करके देना।

३. खानदेश (पूर्व और पश्चिम) में दिये गए व्याख्यान और उनके बीच-बीच में जो चर्चाएं हुईं उन्हें एकत्र करके प्रकाशित किया जाय, ऐसी साने गुरुजी की इच्छा है। उसकी मैंने सम्मति दी है। इस समय प्रवास में वह साथ में ही थे। उनका लेखन पूरा हो जाने पर वह वर्धा आकर मुझे पढ़कर सुनावेंगे। उसमें दुरुस्ती वगैरे कर देना।

४. गीता के प्रवचन ध्यानपूर्वक बारीकी से जांचना। यह अंतिम काम जरा फुर्सत से होगा।

पहला सात दिन में होगा। दूसरा एक महीना लेगा। तीसरा बहुत करके तीन सप्ताह में होने जैसा है। चौथे की जल्दी नहीं की जा सकेगी।

साथ में सत्यदेवजी का दिया हुआ शृंगार-प्रकरण नत्थी किया है। इस संबंध में आप जो कर सकें वह करें।

मदालसा का पत्र सामान्य वर्णनात्मक है।

मेरा स्वास्थ्य आश्रम में और बाहर समान ही रहता है। सतत उत्साह-पूर्वक काम होता रहता है, यह स्वास्थ्य की महरबानी है। नींद जाड़े भर खुले में ली। लकड़ी के लट्ठे के समान सोता हूं और चैतन्य की तरह काम करने की इच्छा रखता हूं।

आपका सदा स्मरण होता है। आपके स्वास्थ्य की ओर ध्यान जाता है। लेकिन बापू एक-सी चिंता करते हैं, इसलिए मैं बीच में पूछताछ करके दखल नहीं देना चाहता।

जानकीबाई को प्रणाम।

विनोबा के प्रणाम

: १७९ :

वर्धा, २८-२-३५

श्री जमनालालजी,

यह मैं सायंकालीन प्रार्थना के बाद लिख रहा हूं। कल सुबह आपके

साथ बातचीत हो जाने के बाद आपटे गुरूजी का पत्र मिला। उसमें पूछा था कि मैं कब आऊंगा। वास्तव में मार्च का पहला सप्ताह उन्हें देने का तय हुआ था। उसके अनुसार उनके पत्र में कार्यक्रम लिखकर आयेगा। मैं इसीकी राह देख रहा था, लेकिन अभी कार्यक्रम तय होना बाकी है। इस कारण उन्हें यह सूचित किया है कि अप्रैल के दूसरे सप्ताह में बालुभाई की ओर से सीधे उधर जायंगे। मार्च के पहले सप्ताह में आने का तय हुआ था, लेकिन उस समय यह खयाल नहीं था कि अप्रैल में मुझे खानदेश में जाना पड़ेगा। खानदेश की बात बाद में निकली। नहीं तो येवल और खानदेश दोनों का एक साथ ही तय हो सकता था। क्योंकि उसमें द्रव्य की और मेरे समय की, जिसे मैं त्रिभुवन से अधिक मूल्यवान समझता हूं, बचत होना सहज था। लेकिन अब यह ठीक होगया। आपकी सूचनानुसार तारीख १० से १५ यहां रहूंगा, ऐसा समझना चाहिए। तब-तक तालुका के केन्द्रों में घूम आऊंगा।

इस तरह आपके कहे मुताबिक यद्यपि मैं यहां रहूंगा; फिर भी मेरी प्रार्थना यही रहेगी कि भगवान करें मुझे किसी सभा में भाग न लेना पड़े। सभा में कहने या सुझाने जैसा मेरे पास प्रायः कुछ नहीं है, न वृत्ति है। सभा का उपयोग बहुत ही कम होता है। सभा में बहुत करके मैं शून्य-मनस्क होकर बैठा रहता हूं। कभी-कभी तो गीता के या वेद के या इसी तरह के एकाध वचन का या विचार का चिंतन करता रहता हूं। सभा में सारा ढंग निरुपयोगी ही होता है सो बात नहीं है। उसमें प्रशिक्षण भी बहुत-सा मिलने जैसा होता है, लेकिन मेरे हाथों कौन-सी सेवा हो सकेगी, इसकी मुझे ठीक कल्पना है और उस सेवा में मेरी शक्ति-बुद्धि के अनुसार अक्षरशः चौबीस घंटे व्यतीत हों, इसके अतिरिक्त और कोई विचार ही मुझे नहीं सूझता। इसलिए सभाओं में मुझे केवल संकोचवश ही समय बिताना पड़ता है।

यह सब लिखने में समय जा ही रहा है। लेकिन हमारी आपकी फिल-हाल 'भाऊ भाऊ शेजारी आणि भट नाहीं संसारी' यानी 'भाई-भाई पास-

पास मिलने की जग में नहीं आस' ऐसी हालत होगई है। इसलिए लिखना पड़ता है।

मेरी दिनचर्या का संक्षिप्त सार यहां आपकी जानकारी के लिए लिखता हूं—

घूमना २ घंटे देहकृत्य ३ घंटे निद्रा ७ घंटे	इसमें मुलाकातें, चर्चा आदि हो सकती हैं।	१२ घंटे
शरीरश्रम ६॥ घंटे तकली ॥ घंटा प्रार्थना १ घंटा	(२० नं. का सूत ८ लटी)	८ घंटे
लेखन-वाचन १॥ घंटा पत्र-व्यवहार १॥ घंटा ध्यान-चिंतन १ घंटा		४ घंटे
अध्यापन ६ घंटे		६ घंटे
		कुल ३० घंटे

भगवान ने २४ घंटे दिये, चरखे ने उसके ३० कर दिये।

विनोबा के प्रणाम

: १८० :

खानगी

भिवापुर, ५-१२-३५

श्री जमनालालजी,

श्री पोतनीस के साथ अनेक विषयों पर बहुत बातें कीं। मुख्य बात विवाह के संबंध में उनकी मनोभूमिका जान लेना और उस संबंध में अपने विचार सूचित करना था। विवाह-संबंधी चर्चा का जो निष्कर्ष निकला वह उन्होंने मुझे लिखकर दिया है। उसकी नकल साथ में जोड़ी है।

उनके साथ बात करते हुए किसी भी व्यक्ति का उल्लेख मैंने नहीं किया। लड़की के माता-पिता के विचार जाने बगैर इस प्रकार से उल्लेख

करना मुझे योग्य नहीं लगा। अब लड़की के पिता को पोतनीस के विचारों की नकल भेज दूंगा। आपको पोतनीस के साथ का संबंध उत्तम लगता है, यह आपने मुझे पहले ही कह दिया है। आपकी सम्मति उसके साथ सूचित करूंगा।

ऐसे प्रश्नों के संबंध में पहले ही से किसीके साथ चर्चा करना मुझे नापसंद है। इसलिए यह मेरा पत्र खानगी समझें। आपकी जानकारी के लिए लिखा है।

विनोबा के प्रणाम

: १८१ :

अहमदाबाद, २१-१-३६

श्री जमनालालजी,

चि. राधाकिशन के विवाह का आमंत्रण-पत्र मिला। मेरी शारीरिक उपस्थिति अपरिहार्य प्रतीत न होने से मैंने अपने संकल्पित कार्यक्रम में परिवर्तन करने की इच्छा नहीं की। तथापि मेरी मानसिक उपस्थिति इस अवसर पर वहां रहेगी, यह आप जानते ही हैं।

चि. राधाकिशन को आशीर्वाद।

विनोबा के प्रणाम

: १८२ :

नालवाड़ी, वर्धा
४-३-३८

श्री जानकीबाई,

आपने तार देकर मुझे बुलाया। तुम तीनों वहां हो, और तीनों के लिए मुझे श्रद्धा है। इसलिए स्वाभाविक रूप से आने का विचार भी हो रहा था, लेकिन आखिर न आने का ही तय किया। वहां आकर भी मैं आपको शांति क्या दे सकनेवाला था? मेरी वृत्ति जरा और तरह की है। संसार को मिथ्या मान बैठा हुआ मैं एक रसहीन आदमी, वहां के नैसर्गिक आनंद में शायद नमक की डली बन गया होता। रविबाबू ने एक गीत

लिखा है उसमें कहा है—

"एकला चलो, एकला चलो,
ओरे ओरे ओ अभागा"

'ऐ अभागे ! तू अकेला ही चल ।' यह गीत मैं हमेशा अपने पर लागू करता हूं । लेकिन 'अरे अभागे' नहीं कहता, बल्कि "अरे भाग्यवान्" ऐसा कहता हूं ।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है ।

विनोबा

आपका पत्र अभी पत्र लिख चुकने के बाद मिला ।

विनोबा

: १८३ :

नालवाड़ी, वर्धा
६-३-३८

श्री जमनालालजी,

साथ का पत्र आप देखें, ऐसी जानकीबाई की इच्छा थी, इसलिए आपको भेज रहा हूं । मुझे उसकी वापस जरूरत नहीं है ।

महादेवी के पत्र में मदालसा के स्वास्थ्य के संबंध में यह उल्लेख है—

'मदालसा का वजन बढ़ता ही नहीं है । करीब उसके प्रयोग को २॥। महीने हुए, वह जैसी-की-तैसी है । उसका मन उचट गया है ।'

उस दिन आपके कहने से मैं समझा था कि मदालसा का वजन बढ़ रहा है । ठीक वस्तु-स्थिति क्या है ?

विनोबा

: १८४ :

पवनार, २९-११-३९

श्री जमनालालजी,

जन्म-दिन का पत्र मिला । गत वर्ष इस समय आप पवनार में, थे । उसकी

याद हो आई। ऐसा लगता है कि समय बहुत तेजी से बीत रहा है।

आपका जो शारीरिक इलाज हो रहा है, उसकी सफलता के लिए आपको मानसिक निश्चिंतता (बेफिक्री) रखना आवश्यक है। ऐसा हो सका तो आरोग्य-प्राप्ति के साथ-साथ शांति की भी कुंजी प्राप्त होना संभव है। मेरा ठीक चलता है।

विनोबा के प्रणाम

: १८५ :

दिल्ली, १-१-४२

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपके दोनों पत्र यथासमय मिल गये थे। यहां के पत्र में आपने लिखा था कि वह सज्जन दिल्ली १८ या २० तारीख के लगभग पहुंचेंगें। यह स्पष्ट नहीं होता था कि दिसम्बर में या जनवरी में। आपने महीना नहीं लिखा। फिर भी मैंने दिसम्बर ही समझा और बिड़ला-मंदिर की धर्मशाला में प्रबन्ध करा दिया था। यहां सवारी की कठिनाई रहती है। बिड़ला मिल में कोई जगह खाली नहीं। लेकिन वह नहीं आये। इससे मालूम होता है कि जनवरी में आयेंगे। जिस तारीख को यहां पहुंचें, कृपया उससे सूचित करें। यहां भी प्रबन्ध हो सकता है और मंदिर की धर्मशाला में भी। जहां उचित समझेंगे, करा दिया जायगा।

नई दिल्ली में जिन बहिन से मिलने को आपने लिखा है उनसे जरूर मिलूंगा। इस वक्त तो अधिक-से-अधिक पैसा दिलवाइये। जापान ने तो कलकत्ते, बम्बई वालों के लिए यह हालत कर दी है कि बरबस यह पंक्ति याद आ जाती है—

सब ठाठ पड़ा रह जायगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

आशा है, प्रसन्न होंगे।

आपका,

वियोगी हरि

: १८६ :

दिल्ली, २३-१-४२

प्रिय भाईजी,

आपका १८-१-४२ का पत्र मिला। जिस हरिजन युवक के विषय में आपने लिखा है उसे श्री टक्करबापा जानते हैं। संघ से छात्रवृत्ति पाकर उसने आयुर्वेद की परीक्षा पास की है। मैंने बापा को आपका पत्र दिखाया। उनका कहना है कि यह अच्छा होगा कि आप उसे अपने किसी शुगर मिल के दवाखाने में काम दिलाने का प्रयत्न करें। यहां हरिजन-निवास में तो एक वैद्य पहले से हैं। आपका हरिजन-ब्यूरो खोलने का जो प्रस्ताव है उसे टक्कर बापा १० फरवरी को होनेवाली संघ की कार्य-कारिणी की मीटिंग में रखेंगे और उसपर तभी विचार कर सकेंगे। इस बीच में आप उस नवयुवक को जवाब दे सकते हैं। उसका पता आपके पास न हो तो मैं उसके पत्र में से लिख देता हूं—

वैद्य कविराज श्री नानकचंद वैद्यवाचस्पति
खान मुरक्का, डा. खा. कोट नयना
जिला गुरदासपुर, पंजाब

कल श्री दयावतीजी वीरा से मैं उनके घर पर मिला। वह तो असल में किसी हरिजन-बस्ती में काम करना चाहती हैं, जहांकि उन्हें हरिजन स्त्रियां और लड़कियां सेवा करने के लिए मिल सकें। मैंने उन्हें नई दिल्ली के पास एक ऐसी बस्ती का नाम सुझाया है। परसों रविवार को वह हमारे हरिजन-निवास में आयेंगी, ऐसा उन्होंने वचन दिया है। हमारी शाला के काम का उनपर क्या असर पड़ता है, यह बाद के पत्र में लिखूंगा।

आजकल गोपुरी में पेड़ों की बड़ी धूम है, यह मुझ कल ही एक प्राण-वान अखवार में पढ़ने को मिला। क्या यह बात सही है ? इधर आने का जब कभी सुयोग हो तब बतौर बानगी के क्या कुछ पेड़े साथ लायगे। चलो मथुरा के साथ स्पर्धा करने को वर्धा तो हुआ।

आशा है आप सब स्वस्थ, प्रसन्न और सानंद होंगे।

आपका,
वियोगी हरि

: १८७ :

अहमदाबाद, २८-११-२५

भाई श्री जमनालालजी,

आपका २६ तारीख का पत्र मिला। इसके लिए आभारी हूं। बापू के उपवास के कारण सभीको बहुत दुःख है, लेकिन लाचारी है।

उपवास को आज चार-पांच दिन हुए। कल उनके सिर में दर्द था। कुछ शरीर भी गरम लगता था, इसलिए बाद में काम बन्द कर दिया। आज सबेरे सिर में दर्द तो था, लेकिन दोपहर को ठीक लगता था। डाक्टर कानूगो ने उन्हें देखा था। नाड़ी वगैरह सामान्य थी। कोई बिगाड़ नहीं लगता था। सिर्फ कमजोरी है। सिर का दर्द तो काम के दबाव के कारण ऐसा लगता है। डाक्टर तो रोज देखता ही रहेगा।

उपवास को अभी दो दिन रह गये हैं। यह तो शायद ईश्वर की कृपा से निकल जायगा। फिर भी इनकी तबीयत के बारे में चिन्ता तो रहेगी ही। भाई कृष्णदास की बात सुनकर मुझे लगा था कि अब संभाल और सेवा की जरूरत है। कच्छ से लौटे थे तो स्थिति अच्छी मालूम होती थी। उस वक्त आपको बुलाने का विचार भी किया था, क्योंकि आप ही उनके आराम वगैरह के लिए व्यवस्था कर सकते हैं; लेकिन मुझे लगा कि यह व्यवस्था आपको सब-कुछ अपने हाथ में ले लेनी चाहिए। आप उनकी सब आवश्यक जरूरतों को समझकर शान्ति से सब व्यवस्था कर सकते हैं। और पूज्य बापू को किसी अनुकूल स्थान में चार-छः महीना सम्पूर्ण शान्ति से आराम लेने के लिए तैयार कर सकेंगे। अब तो यह बात कुछ आसान होती जा रही है। हम सब उनको इसके लिए तैयार कर सकते हैं और उनका भार कम करके उन्हें आराम लेने के लिए कह सकते हैं। उससे वह इन्कार नहीं करेंगे, ऐसा मुझे लगता है। अब स्थिति ऐसी है कि सब

कुछ उनके ऊपर ही छोड़ना होगा, परंतु वह आराम लम्बा होना चाहिए। आप इस सँम्बन्ध में जरूरी कार्रवाई तुरन्त कर सकते हैं और इसके लिए पूरी कोशिश करेंगे, ऐसी आशा है।

मोतीलालजी और श्रीमती नायडू यहां ३० तारीख को आयेंगी। ३० को सोमवार पड़ेगा। इनका उपवास मंगल को टूटेगा। शायद एकाध दिन आराम लें और उसके बाद काम शुरू करें। लालाजी भी यहां से जाने के पहले आनेवाले हैं। शायद चौथी-पांचवीं को धोलका भी जाना है। विद्यापीठ का अभी निश्चय नहीं हुआ। आज अध्यापकों की सभा थी। उपवास के बाद कांग्रेस तक और कांग्रेस के बाद तीन-चार महीने तक संपूर्ण आराम मिल सके तो कितना अच्छा हो। आप कोशिश तो करेंगे ही।

आप सब तो अच्छे ही होंगे।[1]

शंकरलाल का सस्नेह वन्देमातरम्

: १८८ :

अहमदाबाद, २९-११-२५

भाई श्री जमनालालजी,

बापू की तबीयत कल से आज अच्छी है। कमजोरी तो है ही, लेकिन सिर का दर्द कम हुआ मालूम होता है।

तबीयत के बारे में तो विचार आता ही रहता है। उपवास के बाद कांग्रेस तक सम्पूर्ण आराम मिले, यह जरूरी लगता है। इसके लिए जहां-तक हो सके कोशिश करनी चाहिए। उपवास के बाद मैं समझता हूं कि नीचे लिखी व्यवस्था होनी चाहिए—

१. पंडित मोतीलालजी के साथ चर्चा—तारीख २

२. लाला लाजपतरायजी के साथ चर्चा—तारीख ३-४

---

[1] गुजराती से अनूदित

३. गुजरात महाविद्यालय के विद्यार्थियों का सम्मेलन—ता. ५
४. गुजरात विद्यापीठ के अध्यापक-मंडल के साथ चर्चा—ता. ३
५. धोलका का दौरा—ता. ६
६. वर्धा—ता. ७

मोतीलालजी के संबंध म तो मैं समझता हूं कि तकलीफ नहीं होगी। बम्बई में केलकर आदि से मिलकर आयेंगे, इसलिए चर्चा करने की कोई जरूरत नहीं होगी। लालाजी के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। विद्यापीठ के सम्बन्ध में शायद वे ही इन्हें तकलीफ न दें। धोलका का कार्यक्रम मुश्किल लगता है। वहां के जो भाई आग्रह करते हैं, उनको समझाना लगभग असम्भव है। वल्लभभाई इसके संबंध में जोर नहीं डालते, इसलिए बापू आग्रह के वश होजायं, यह सम्भव है। फिर भी कोशिश तो होगी ही। वर्धा के सम्बन्ध में आपकी सूचना होते हुए भी बापू वहां आने का आग्रह करेंगे। विनोबाजी चार वर्ष से जो काम कर रहे हैं, उसे देखने की उत्कंठा स्वाभाविक है।

उन्हें जहां शांति मिले वहां जायं तो ठीक होगा, लेकिन लोनावाला में शायद ज्यादा सर्दी होगी। उपवास के बाद शायद कमजोरी होगी, इसलिए मुसाफिरी की तकलीफ न हो तो अच्छा है।

वहां जाना ठीक न लगे तो भाई अम्बालाल के यहां शाही बाग में पूरी शान्ति मिले, ऐसी व्यवस्था हो सकती है। यहां का हवा-पानी तो अच्छा है ही। उपवास के बाद २ तारीख को वहां जाना उन्होंने कबूल भी किया था। वहां जाने पर ठीक जंचे तो बाकी के दिन वहीं रहा जाय। इसमें उन्हें परिश्रम कम पड़ेगा और शान्ति और आराम की व्यवस्था हो सकेगी। मैंने आपको तार से यह भी सूचित किया है। उपवास के बाद ३ दिन तक कमजोरी रही, फिर भी उन्होंने लगातार काम किया, जिससे चौथे दिन सिर में दर्द होगया। बुखार भी शायद आने लगा। अब उन्हें भी ऐसा लगता है कि भूल होगई। हम तो पहले ही से कहते थे कि शरीर कमजोर होने की हालत में उपवास नहीं होना चाहिए। और फिर भी उपवास करना ही

पड़े तो पूरा आराम करना चाहिए, लेकिन पहले ही कुछ उनसे कहा गया होता तो शायद वह मान जाते। इसलिए अब पछताने से क्या फायदा।

तबीयत के सम्बन्ध में चिन्ता रहती ही है। किसी तरह आराम मिले और शरीर ठीक हो तो अच्छा है। फिर तो ईश्वर सब ठीक करेंगे। पत्र लिखते रहेंगे, सलाह देते रहेंगे, ऐसी आशा रखता हूं।

सबको स्नेहपूर्वक।[1]

लि.

शंकरलाल का सस्नेह जय-जय

: १८९ :

अहमदाबाद, २५-५-२७

भाई श्री जमनालालजी,

आपके २३, २५ और २६ के पत्र मिले। उनके साथ भेजे हुए अन्य पत्र भी मिल गये। पूज्य बापू की तबीयत ठीक है, यह जानकर खुशी हुई। बिजोलिया की स्थिति विचारणीय है। इस सम्बन्ध में आज भाई देशपांडे का पत्र मिला। उसकी नकल भेजता हूं। रियासतों के साथ झगड़ा करने के साथ-साथ खादी का काम हो सकता है, ऐसा मुझे नहीं लगता। यह प्रवृत्ति तो अनुकूल परिस्थिति में ही चल सकती है। इसलिए अगर राजस्थान में यह काम चलाना हो तो राज्यों के खास व्यक्तियों के द्वारा ही अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न की जा सकती है। अभी तो बिजोलिया का ही प्रश्न उपस्थित है। और उदयपुर राज्य के साथ भाई जेठालाल की काम करने की पद्धति तो बहुत आसान है। वह तो खादी के अलावा और किसी चीज में हाथ नहीं डालना चाहते। यह हं ते हुए भी उन्हें उसमें से मुक्त करना है। नहीं तो वक्त-बेवक्त कठिनाई ही पड़ेगी। पंडित मालवीयजी या कोई अन्य व्यक्ति खासतौर से मदद दे तो काफी अन्तर पड़ सकता है। उनके सिवा और भी लोग तो होंगे। भाई मणिलाल के सम्बन्ध में आपने सूचना

---

१. गुजराती से अनूदित

की है, इसलिए वह यहां होंगे तो आपसे मिलकर बात करेंगे। आपका उनके साथ कैसा सम्बन्ध है ? आप बिजोलिया तो नहीं गये, परन्तु उदयपुर गये थे, ऐसा कुछ खयाल आता है । आपका परिचय हो और कुछ कहें तो खास असर हो सकता है । इस बीच भाई श्री जेठालाल से राज्य ने जो मांग की है, उस सम्बन्ध में विचार करके सलाह देना जरूरी है । भाई जठालाल को वहां के अधिकारियों से मिलकर उनकी शंकाओं का निवारण करना चाहिए । उन्हें आपसे सलाह लेनी है, इसलिए वह कोई मनमानी नहीं कर सकते, ऐसा लगता है। इस सम्बन्ध में हरिभाऊजी उन्हें कुछ समझा सकते हैं, नहीं तो फिर जवाब दे देना चाहिए । भाई देशपाण्डे बताते हैं कि इसमें कठिनाई भी है । कहीं दबना पड़े तो दूसरी ओर भी दबाव पड़ता है । इस सम्बन्ध में पूज्य बापू की राय भेजना जरूरी जान पड़ा है । प्रश्न महत्व का है, इसलिए जैसा जंचे वैसा लिखिये । भावी कामों पर भी इसका असर पड़ेगा ।

दास्तानेजी का पत्र देख लिया है । मराठी पत्र बराबर समझता नहीं हूं, लेकिन पंढरपुर में आसाढ़ी मेले पर खादी बाजार लगानें के लिए खास आग्रह हो, ऐसा मालूम होता है । वहां का काम बहुत व्यवस्थित हो गयाहो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। ऐसी स्थिति में दूसरे लोभों में पड़ना उचित नहीं प्रतीत होता। मेले के लिए उनके पास शोलापुर, जलगांव आदि जगहों पर जो माल पड़ा हो, उससे चला लें; अथवा भाई जेराजाणी के साथ कोई व्यवस्था करलें तो अच्छा हो । कौंसिल की मंजूरी की आशा से अबतक उन्हें नीचे लिखी रकमें दी जा चुकी हैं—

७५००) स्वराज-पत्र को,
१००००) वस्त्रागार को,
३०००) बही-खाता आदि के लिए ।

इस प्रकार कुल मिलाकर २०,५००) हुआ। इसके अलावा मेले के लिए और ५०००) मंजूर करना हो तो, यह बात जंचती नहीं । फिर भी इसके बारे में जो कुछ करना हो उसके लिए तैयार हूं, लेकिन आप अपनी

राय वापसी डाक से लिखें। पूज्य बापू ने कोई इच्छा इस सम्बन्ध में दरसाई हो तो वह भी लिखें। भाई आठवले कहते थे कि यह सब काम ठिकाने से करने में जून महीना बीत जायगा। वह यहां हिसाब-किताब-सम्बन्धी बातें करने के लिए आये थे। लेकिन भाई दास्ताने को जल्दी हो तो सभा जुलाई के पहले कर लेनी चाहिए। मुझे कोई अड़चन नहीं होगी। आपकी सूचना के अनुसार तो बंगलौर में प्रदर्शनी के समय यानी जुलाई में सभा होनी चाहिए। यदि इसमें उनको कोई हर्ज न हो तभी की जाय, नहीं तो उससे पहले श्री राजगोपालाचारी अथवा गंगाधरराव को इसके बारे में जोर नहीं डालना चाहिए। भाई राजेन्द्रबाबू अथवा सतीशबाबू आ जायं तो भी काम चल सकता है। दो में से एक तो चाहिए ही, क्योंकि कोरम के लिए भी चार व्यक्तियों की जरूरत है, और हम सब तो मिलकर तीन ही बनते हैं।[1]

लि.

शंकरलाल का सस्नेह जय-जय

: १९० :

अहमदाबाद, २१-१२-३३

भाई श्री जमनालालजी,

इस पत्र के साथ डाक्टर गोपीचन्द की चिट्ठी की नकल भेज रहा हूं। इसमें लाला खेमचन्द, लाला बसन्तलाल और सरदार जसवन्तसिंह आदि को काम से छुट्टी दे देने की बात कही गई है। इससे शायद काम को नुकसान पहुंचे, ऐसा डर है। आजकल तो मंदी के दिन हैं। काम में अनेक प्रकार की कठिनाइयां आती हैं, इसलिए अनुभवी और कुशल कार्यकर्ताओं की खास जरूरत समझी जाती है; ऐसी हालत में उन भाइयों को काम पर से अलग करने के विचार से हानि होने का भय लगता है। इसके बारे में उचित सलाह दीजियेगा।

किशनचन्दजी ने भाई रामलाल को छुट्टी दे दी है। मंत्री के रूप में

---

[1] गुजराती से अनूदित

उन्हें अधिकार था, उनके काम के बारे में शिकायत तो थी। भंडार की बिक्री पिछले वर्ष से बढ़ती प्रतीत हो रही थी। हिसाब नीचे लिखे अनुसार है—

सन्	बिक्री
१९२९	६०,२४२)
१९३०	१,१९,२५२)
१९३१	८५,९८१)
१९३२	५३,४८८)
१९३३	३४,२३७)

इन लोगों को काम से अलग करने के बारे में उनसे विधिवत् पूछताछ नहीं की गई है।[1]

लि.

शंकरलाल बेंकर का जय-जय

: १९१ :

मछलीपट्टम्, २२-७-३७

भाई श्री जमनालालजी,

विहार से लक्ष्मीबाबू को और यू. पी. से विचित्रनारायण को आने के लिए तार किया है। लक्ष्मीबाबू २५ तारीख को आयेंगे, ऐसा मानता हूं। जाजूजी तो वहीं हैं, इसलिए उनकी और शाखाओं का विचार किया जा सकेगा। मद्रास के मंत्रियों के साथ तो चर्चा करली है। राजगोपालाचारी से भी बातें की हैं। श्री अन्नदाबाबू भी आयें, इसलिए इसके बारे में जो करना होगा, उसपर विचार हो सकेगा। आप सब खुश होंगे। सबको स्नेहपूर्वक।[2]

लि.

शंकरलाल का जय-जय

[1-2] गुजराती से अनूदित

: १९२ :

कलकत्ता, २५-१२-३०

पूज्य सेठजी,

बात यही है कि हम जब निकले, तब बंगाल का कोई भी प्रतिष्ठित आदमी बाहर नहीं था। बंगाल कांग्रेस-कमेटी में फूट होने के कारण सत्याग्रह करने के लिए एक पृथक् संस्था बनाई गई थी, जिसका नाम कानून-भंग समिति था। इन दोनों संस्थाओं में झगड़ा था, जिसके कारण बंगाल में इतने ज्यादा आदमी जेल जाते हुए भी आन्दोलन में मजबूती कम थी। मैंने जेल से निकलकर देखा कि किसी संस्था के पास आन्दोलन चलाने लायक न तो रुपये का बल था, न आदमी का। इस कारण मैंने दोनों संस्थाओं को मिल जाने के लिए बहुत कहा। परन्तु पहले-पहल मेरी बात तो किसीने न सुनी, पर आखिर में बहुत कष्ट उठाकर दोनों संस्थाओं को एक प्रकार से मिला दिया गया। इसमें बड़ा बाजार के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने काफी परिश्रम उठाया। खैर, इस हलचल के कारण कलकत्ता जैसा ठंडा पड़ गया था, आज उतना ठंडा नहीं है। पहले पिकेटिंग एकदम बन्द होगया था, जिसके कारण खुल्लमखुल्ला विलायती कपड़ा बिकता था और विलायत में कुछ नये आर्डर भी चले गये थे। अब फिर आर्डर बन्द होगये। पिकेटिंग कुछ जोरदार है, जिसके कारण कपड़े के व्यापारी बिल्कुल घबरा गये। मेरा विश्वास है कि ऐसी पिकेटिंग चलने से ३-४ महीने में हमारी फतेह हो जायगी। पूज्य बहिन जानकीदेवी से हम लोगों को खूब मदद मिली। उनका भाषण बहुत जोरदार होता है। उसका असर जनता पर खूब पड़ता है। उनका तथा जवाहरलालजी की मातुश्री के कई एक भाषण हुए, जिसके कारण कलकत्ता में एक नया वातावरण पैदा होगया। मौके पर भाई श्री सीतारामजी भी छूट आय। उनके आने से हम लोगों की शक्ति बहुत बढ़ गई।

कलकत्ता में अगर ५०० वालंटियर रखने के लिए पूरा प्रबन्ध होजाय, तो मेरा खयाल है कि बम्बई की सी परिस्थिति हम कुछ-कुछ यहां भी पैदा कर सकते हैं। जितने हमारे सहयोगी हैं, सब जी-तोड़ श्रम उठा रहे

हैं। परन्तु खेद की बात है कि कुछ प्रभावशाली आदमियों की तरफ से, विरोध भी हो रहा है। भाई बैजनाथजी केडिया, जो अब जेलें में हैं, की तरफ से एक पत्र निकला है, जिसका नाम 'केसरी' है। भाई श्री पद्मराज की देखरेख में इसका संचालन चलता है। इस पत्र में बड़े बाजार में चल रहे पिकेटिंग के विरुद्ध लेख निकल रहा है। यह संग्राम जब शुरू हुआ तब बैजनाथजी ने जी तोड़कर श्रम किया। और मैं कह सकता हूं कि बंगाल के वह एक स्तम्भ थे। हमारा सभी काम उनकी सलाह से चलता था। आज उनका पत्र विरोध क्यों कर रहा है, सो समझ में नहीं आता। परन्तु परमात्मा की कृपा से विरोध होते हुए भी अबतक हमारा काम बढ़ता ही गया। विश्वास है कि रुपये का ठीक प्रबन्ध हो जाने से यहां का काम बन्द नहीं होगा। जबतक जान है और स्वतंत्रता है, हम सब काम करते जायंगे। कल की परमात्मा देखेगा। भाई सीताराम भी खूब काम कर रहे हैं। इतने पवित्र भाव के आदमी श्रम उठा रहे हैं, जिससे निश्चय है कि कुछ-न-कुछ हम लोगों को सफलता मिलेगी ही। बहन श्री जानकीदेवी जबतक कलकत्ता जाग न जाय, यहां से जा न सकेंगी। उनकी उपस्थिति से ही हम लोगों को खूब सहारा मिल रहा है। आप तो उनका यहां रहना मंजूर करेंगे न ?

श्रीकृष्णदास का वन्देमातरम्

: १९३ :

वर्धा, ८-११-३२

प्रिय भाई जमनालालजी,

चिरंजीव राधाकृष्ण आग्रह कर रहा है कि मैं आपकी वर्षगांठ के निमित्त आशीर्वाद पहुंचा दूं। मेरा हृदय तो आपको सादर प्रणाम करता है। फिर ऊपर से आशीर्वाद लिख दूं या और कुछ। हमारा यह शुभचिन्तन है कि जो कायम रहें वे आपकी एक सौ इक्कीसवीं वर्षगांठ मनावें। यह परमात्मा से प्रार्थना है। फिर उसकी इच्छा हो सो सही।

यह है हमारी दृष्टि; पर इस विषय में आपकी क्या दृष्टि होनी

चाहिए ? किसी पर्व का उपयोग पिछले वर्ष की ओर देखने और भविष्य के शुभ संकल्प करने के लिए होना चाहिए। सो आप करते ही हैं। मनुष्य के लिए जन्म महत्त्व की वस्तु नहीं। करनी का महत्त्व है।

वर्षगांठ के दिन दूसरों को मिलने जाना उचित है; पर यह इच्छा रखना कि और लोग अपने से मिलने आयें, यह उचित नहीं। इस विषय में अपनी और दूसरों की दृष्टि का फरक ध्यान में रखने लायक है।

अबतक मेरी इच्छा आपसे मिलने की नहीं रही, पर अब थोड़ी होने लगी है।

आपका,
श्रीकृष्णदास जाजू

: १९४ :

वर्धा, ८-१२-४१

भाई जमनालालजी,

श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला ने कृपा करके खादी-काम के लिए रुपये ६० हजार (साठ हजार) देने का विचार किया है। उस योजना में से पंजाब में जितना काम करना है उसके बारे में तो डा. गोपीचन्दजी ने जो लिखा है, वह मैंने आपके पास भेज दिया है। पिलानी के काम के बारे में मुझे श्री देशपांडेजी से सलाह कर लेनी है। शेखावाटी का खादी-काम ग्राम-सुधार-केन्द्रों की योजना के अनुसार चल रहा है। पिलानी में भी एक वैसा केन्द्र खुल जावे तो ठीक होगा। उस योजना के अनुसार एक केन्द्र के लिए रुपये ढाई हजार चाहिए। परन्तु उसमें खादी का काम बढ़ाना हो तो अधिक रकम भी लगाई जा सकती है। आप श्री बिड़लाजी को सूचित करने की कृपा करें कि सब रकम पिलानी में ही लगाने का वह आग्रह न रखें। राजपूताने में और भी कई जगह ग्राम-सुधार-केन्द्र चलाने की जरूरत है, जहां कि गरीबी अधिक है। कहां कितना पैसा लगाना, यह चरखा-संघ पर छोड़ दिया जायगा तो उसका उपयोग अधिक-से-अधिक हो सकेगा।

आपका,
श्रीकृष्णदास जाजू

: १९५ :

बंबई, जून १९२७

पूज्य चाचाजी,

मैंने अपने भविष्य के जीवन का निश्चय नीचे अनुसार किया है। आशा है, परमात्मा की दया से व पूज्य बापूजी और आपके आशीर्वाद से अपना निश्चय मैं बराबर अमल में ला सकूंगी।

मैंने यह तो पूरी तौर से निश्चय कर लिया है कि मैं लड़का गोद नहीं लूंगी।

मैंने यह भी निश्चय किया है कि मैं अपना आगे का जीवन देश-सेवा में, खासकर स्त्री-जाति की और उसमें भी विधवाओं की सेवा में, बिताऊं।

पूज्य बापू की और आपकी आज्ञा के मुताबिक अपने रहने, सीखने और काम करने का निश्चय करूंगी।

पहले एक बार अपनी सासूजी को दिये वचन के अनुसार ब्यावर जाकर और फिर आगामी गर्मी के दिनों में वहां से आकर ऊपर लिखे मूजब कार्य करने में लगूं। ये सब बातें आप पूज्य बापूजी से कह सकते हैं।

मैं ब्यावर रहते हुए भी मन से ऊपर के उद्देश्य की पूर्ति की चेष्टा करूंगी।

आपकी पुत्री,
शान्ता के प्रणाम

: १९६ :

नासिक रोड, सैंट्रल जेल
कैदी नं. २१८१, ता. २१-६-३०

चि. शान्ता,

तुम्हारी चाची का पत्र इसके साथ भेजा है, तुम पढ़कर उसे बराबर पढ़ा देना। तुम्हारा स्वास्थ्य बम्बई में बराबर नहीं रहता, इसकी मुझे चिन्ता रहती है। तुम डा. भरुचा या पुरन्द्रे को तुम्हारी पू. ताई के मार्फत एक बार परीक्षा करवा लो व भाई श्री सूरजमलजी का हरिद्वार जाना न

हो तो तुम थोड़े रोज वर्धा हवा-फेर कर आओ। वहां जाने से तुम्हें ठीक रहेगा। पू.•मा., केशर, गुलाव, चि. राधाकृष्ण को भी तुम्हारे जाने से सुख मिलेगा। आजकल नासिक की आवहवा बहुत ही उत्तम है। अगर भाईजी का व्यापार के कारण हरिद्वार जाना कठिन हो तो वह यहां माधव-बाग या दूसरा वंगला लेकर कुछ समय रहें तो उन्हें भी शांति मिलेगी व तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक हो जायगा। मुझसे भी १५ रोज में मिलना होता रहेगा। जैसी तुम्हारी इच्छा हो व संभव हो बिना संकोच के भाईजी से कह देना। व्यर्थ संकोच से लाभ नहीं। मेरे मन के विचार तुम प्रायः जानती हो और अभी जो विचार चलते हैं वह तुम्हारी चाची के पत्र से जान लोगी। अब यहां का थोड़ा वर्णन तुम्हें लिखता हूं। यह तुम बहिन सुवटादेवी, चि. कमला, चि. राधाकृष्ण आदि को बतला देना या लिख भेजना। थाना से यहां आते ही आवहवा के कारण मेरी कब्ज की शिकायत दूर होगई। यहां का जेल नया बना है। प्रायः सभी प्रकार का सुभीता वहां से ज्यादा है। सृष्टि-सौंदर्य तो देखने योग्य है, आजकल के दिनों में।

मेरी दिनचर्या इस प्रकार है—

मैं थाना में प्रायः ४-४॥ बजे उठा करता था। यहां नींद ज्यादा आती है, इससे ४॥ से ५ बजे के बीच उठता हूं। सुबह की प्रार्थना का अनुवाद आश्रम-भजनावली में से पढ़ता हूं। बहुत बार तो आश्रम-भजनावली के पृष्ठ ५ से लगातार ६२ तक अनुवाद पढ़ जाता हूं, शाम की प्रार्थना के पृष्ठों को छोड़कर, बाद में टट्टी जाना, हाथ-मुंह धोना ६ बजे तक। ६ से ६॥ तक दौड़ना, डंड-बैठक आदि व्यायाम। ६॥ से ७ विश्रांति या पढ़ना। बाद में ठंडे जल से पनघट पर खुली हवा में स्नान, कपड़े धोना, बरतन साफ कर पानी छानकर २४ घंटे के लिए भर रखना। यह काम ७।-७॥। तक हो जाता है। बाद में ज्वार की नमक डाली हुई गरम-गरम कांजी (राब) पीता हूं। इतवार को दस तोला गुड़ सब कैदियों को मिलता ह। जेल का काम ८ से १० या १०॥ तक करता हूं। आजकल कपड़ा सीने का काम मैंने मांग लिया है। वही करता हूं। मन तो उसमें बराबर लगता नहीं है। विचार चला ही

करते हैं। तथापि उलटी-सुलटी सुई कपड़े पर मारा ही करता हूं। मैं और दूसरे मित्र मिलकर जब सीने बैठते हैं, तब इसी बीच सुपरिंटेंडेंट आकर हम लोगों की खैरियत पूछ जाते हैं। बाद में 'टाइम्स आफ इंडिया' आता है। वह श्री नरीमन, (जिन्हें सादी सजा है, इस कारण काम नहीं करना पड़ता है) हमें पढ़कर सुनाते हैं। ११ बजे के करीब भोजन आता है। गत सोमवार से मैंने 'सी' वर्ग का मामूली कैदियों का भोजन अपनी इच्छा से लेना शुरू किया है। सप्ताह में पांच रोज ज्वार की रोटी व दो रोज बाजरी की रोटी आती है। साथ में कभी तुवर की, कभी चने या मोंठ की दाल आती है। वही लेता हूं। साथ में यहां आने के बाद प्याज खाना शुरू किया है। कच्चा प्याज रोटी के साथ खाता हूं। मुंह से बास आती है, परन्तु लाभ करता है। उससे कब्ज नहीं रहता। भोजन के बाद बर्तन साफ करके पांच-दस मिनिट कुछ पढ़ता हूं, याने फिर एक घंटे के करीब आराम करता हूं। यहां निद्रा बहुत आती है। आब-हवा ठीक होने के कारण ज्वार की राब का नशा भी शायद रहता हो। सोच रहा हूं कि आगे जाकर, दिन का सोना हो सके तो, छोड़ दूं। आराम के बाद कभी जेल का काम रहा और इच्छा हुई तो करता हूं, नहीं तो पढ़ता हूं।

तीन बजे के बाद १ घंटा या कुछ ज्यादा समय तक चरखा कातता हूं। जबसे चरखा मिला है अभी तक एक भी दिन का नागा नहीं हुआ व हमेशा १६० तार से ज्यादा ही काते गये हैं। तीन-चार दिन से शाम का भोजन, जो रोटी व साग का होता है, बन्द कर दिया; कारण उससे पेट में भारीपन व आलस्य मालूम होता था। फिलहाल तो सुबह की ज्वार की कांजी व ११ बजे के भोजन पर ही काम चला रहा हूं। आगे अगर स्वास्थ्य में इससे हानि मालूम होती दिखाई दी तो उसके मुताबिक फेरफार हो जायगा। तुम लोग किसी प्रकार की चिन्ता न करना। मेरे बहुत कोशिश करने पर मुझे यह भोजन मिल रहा ह। चरखा कातने के बाद हाथ-मुंह धोकर बहुत बार करीब एक घंटा शतरंज (बुद्धिबल) खेलता हूं या मस्तिष्क का व्यायाम (२५ प्रश्नों में सवाल का जवाब देना आदि)।

वाद एक घंटा खादी, सामाजिक सुधार आदि कई विषयों पर आपस में चर्चा, विचार-विनिमय करते हैं। हम लोग यहां ५ जने हैं। उसका नाम पंच-मंडल रखा है। उसमें नरीमन, डाक्टर चौकसी, रणछोड़भाई (अहमदा-वाद-वाले), मुनीजी व मैं। वाद में मुनीजी प्रार्थना कराते हैं। भजन वोलते हैं। कलापी आदि की उत्तम कविताएं पढ़ते हैं। हम सव लोग सुनते हैं—९ वजे तक। वाद में अपनी-अपनी कोठरियों में, जो १० × ८ फुट की हैं और खूब हवादार व प्रकाशवाली हैं, वंद किये जाते हैं। सामने लोहे की मोटी सलाकों का दरवाजा है। उसे ताला लगा दिया जाता है। तव मालूम होता है कि हम कोई विचित्र प्राणी या जानवर हैं, जिसके कारण ही हमें इतनी हिफाजत के साथ वंद किया जाता है। तुमने सर्कस में व बड़े-बड़े वगीचों में वाघ व सिंह को वंद किये देखा होगा। उसी प्रकार हम लोग वंद किये जाते हैं। ऐसी हालत में अगर टिकिट लगाकर सरकार जनता को दिखावे, तो उसे ठीक आमदनी हो सकती है।

वन्द होने के वाद १० वजे तक विजली की वत्ती हम चाहें तो जलती रहती है, न चाहें तो सिपाही वंद कर देता है। आजकल मैं प्राय: १० तक धर्मानंदजी की पुस्तक 'आप-बीती' पढ़ता हूं। फिर सो जाता हूं। तुम भी यह पुस्तक नवजीवन पुस्तकालय से मंगाकर एक बार पढ़ जाना। उन्होंने कितने कष्टों से अभ्यास व अपनी इच्छा की पूर्ति की है, यह जानकर हिम्मत बढ़ेगी। सुवह मेरी खोली में ४।।-५ के वीच में वत्ती जला दी जाती है और ५।। बजे दरवाजा खुल जाता है।

जेल में आने के वाद मैंने कुरान का गुजराती तरजुमा पूरा पढ़ डाला और एक-दो छोटी-मोटी किताबें पढ़ीं।

समय इतना जल्दी जाता है कि दिन व रात बीतते देर नहीं लगती। अब मेरा नरीमन के साथ अंग्रेजी सीखने का विचार है। देखें कितना पार पड़ता है। ऊपर की दिनचर्या लिखने का मतलव इतना ही है कि खूब आनन्द व उत्साह के साथ यहां का समय हम लोग बिताते हैं। अधिकारी लोग खूब प्यार व सन्मान के साथ बर्ताव करते हैं।

तुम्हारी चाची के नाम का पत्र, जिन्हें तुम्हारी इच्छा हो, पढ़ा सकती हो, व जवाव में तुम्हारा सविस्तर खुलासेवार पूर्ण मानसिक जानकारी-भरा पत्र व तुम्हारी चाची का, वहिन सुवटादेवी लिख सकें तो उनका, चिरंजीव कमला का, उसके आने में देर हो तो केशवदेवजी का पत्र लेकर सव पत्र एक लिफाफे में रखकर मुझे नासिक रोड जेल के पते पर जल्दी भिजवा देना। केशवदेवजी का पत्र उन्हें भिजवा देना। सवोंको वंदेमातरम् कहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९७ :

ब्यावर, १२-२-३६

पूज्य श्री चाचाजी,

आपका १० का पत्र मिला। यहां आने के बारे में आपने लिखा सो जाना। एक दिन के लिए आप यहां उतर जाते तो ठीक रहता। मोतीलालजी से बम्बई अथवा किसी और जगह बातें करने के लिए लिखा है, सो सम्भव नहीं है। बातें तो यहींपर हो सकती हैं। आपके कहने से यहां एक लड़का गोद लेने की बातचीत आपके आने पर होगी। लोग इसके बारे में खुशी मना रहे हैं। आप नहीं आयेंगे तो मैं झूठी पड़ूंगी और आपके आये विना कोई बात तय नहीं हो सकेगी। आपने जो मार्च में दिल्ली जाने की बात लिखी है तो उस समय भी आ जायं तो ठीक है।

बम्बई के सब समाचार आये। उन्होंने लिखा है कि तुमको फिर से अभिभाविका (गार्जियन) बनावेंगे। लेकिन मैं इस काम के योग्य नहीं हूं। मुझे न फंसाइयेगा। बापूजी की तबीयत के समाचार लिखे, सो जाने। पत्र वर्धा दूंगी।

आपकी पुत्री,
शांता

: १९८ :

सीकर, ४-५-३८

चिरंजीवी शान्ता,

परसों तुम्हारा तार मिला, जिससे सुगनाबाई के अधिक बीमार

होने का हाल मालूम हुआ। आज फिर मैंने दुकान पर तार किया तो मालूम हुआ कि सुंगनाबाई का स्वर्गवास होगया। दुःख होना तो स्वाभाविक ही था, लेकिन विचार कर देखें तो उन्हें तो इससे शान्ति मिली। चिरंजीवी सुशीला को मेरी ओर से समझा देना कि कोई चिन्ता न करे। बिरादरी और ब्रह्मपुरी आदि का खर्च बिल्कुल ही नहीं करना चाहिए। गृह-शुद्धि के लिए १०-२० विद्वान् ब्राह्मणों को भोजन करा दें। मेरा यह पत्र सब ट्रस्टियों को पढ़ा सकती हो। दो दिन की चर्चा के लिए हजारों रुपये फूंक डालना मूर्खता नहीं तो क्या है? आशा है, तुम मूर्खता में नहीं पड़ोगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९९ :

आगरा, ५-७-३८

पूज्यवर काकाजी,

सादर प्रणाम।

बाबूजी की मृत्यु पर आपने जो हार्दिक समवेदना प्रकट की है उसके लिए हम सब लोग बहुत कृतज्ञ हैं। अब इस संसार में हम सब असहाय बच्चों के आप ही पिता हैं, और आप ही की दया और प्रेम से हम लोग अपने सब संकटों को सरलतापूर्वक सहन कर सकेंगे।

उनके दिल में जो आखिर तक इच्छा रही वह अगर उनके सामने ही पूरी हो जाती तो उनको ही नहीं, हम सबको भतीजा होने की चौगुनी प्रसन्नता होती और हरएक काम करने में दूना उत्साह होता, लेकिन भगवान की यह इच्छा न थी तो कैसे होता।

माताजी व बड़ों से मेरा प्रणाम। बच्चों से प्यार।

आपकी बेटी,
शांता

: २०० :

वर्धा, २२-११-३९

पूज्य श्री चाचाजी,

प्रणाम। कल आपकी जन्म-तिथि है इस निमित्त आपको प्रणाम करती हूं

और यह नया वर्ष आपको आरोग्यप्रद, शान्तिप्रद और आत्मोन्नति-प्रद हो, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करती हूं। इसके साथ-साथ मैं भी आपकी पुत्री कहलाने की पात्र बनूं, यह भी प्रार्थना करती हूं; और तो मुझे कुछ लिखना आता नहीं।

चि. सीता, मनु, सरवती बाई और सुशील आपको भक्तिपूर्वक प्रणाम लिखाती हैं।

आपकी पुत्री,
शान्ता

: २०१ :

वर्धा, ३१-८-४०

पूज्य चाचाजी,

सादर प्रणाम।

आपके जाने के बाद से सुशीला का स्वास्थ्य बहुत ठीक है, मेरा भी स्वास्थ्य ठीक है। आशा है, आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

श्री भाई काशीनाथजी का पत्र आपको मिला ही होगा। आपके यहां आने पर काशीनाथजी यहां आवेंगे और जिसे आप कहेंगे उसे अपने काम का चार्ज देकर मुक्त होंगे। वह आज घर जा रहे हैं। मंडल के काम की जिम्मेवारी की सोच रही हूं। वैसे तो जो कुछ काम आवेगा वह दामोदरजी को पूछकर कर दूंगी। बाकी अब आगे के लिए आप मंडल के मंत्री के लिए किसी अच्छे आदमी को सोचेंगे और उसकी इतनी तैयारी हो कि वह मुझे पूरी तौर से तैयार कर दे। साधारणतः बात आपके खयाल में रहे, इसलिए लिख दिया है। बाकी जब आप यहांपर आवेंगे तब ही सारी बातें होंगी, अभी आप खास कोई चिन्ता न करें।

आपकी पुत्री,
शान्ता रानीवाला

: २०२ :

बम्बई, २०-९-४१

पूज्य चाचाजी को शान्ता का प्रणाम वंचना। घणामान सेती अपरंच

आपका पत्र मिला था। मैं यहां मुंबई आई हुई हूं। आपने नेपाल जाने का लिखा सो॰ठीक है, मुझे भी साथ ले जाने का सोचा सो पूज्य बापूजी से आज्ञा ले लेना। और सब ठीक है। आश्रम में कुछ मकान और बनवाने हैं। उनके लिए रुपयों की जरूरत है सो आप मंडल से मंजूरी दिलवा देवें। सारी स्कीम आपको बहन कमलाबाई बता देवेंगी। आप प्रसन्न होंगे। मेरे योग्य सेवा लिखें। पत्रोत्तर देवें।

शान्ता के प्रणाम

: २०३ :

गोहाटी, २०-१०-४१

पूज्य श्री चाचाजी,

प्रणाम।

मैं पूज्य काकासाहब के साथ घूम रही हूं। कल शिलांग से आई। अब कल सुबह यहां से तीनसुखिया जावेंगे और वहां से डिबरूगढ़, सिबसागर वगैरा। ३-४ गांव जाकर फिर इस महीने के अखीर तक कलकत्ता लौटेंगे। आपकी तबीयत अच्छी होगी। यहां हम दोनों बहन-भाई बहुत अच्छे हैं। प्रवास में आपकी बहुत याद आती है। सब देखते रहते हैं। आपके साथ में जो आनन्द रहता है, वह तो आपके साथ ही मिल सकता है। बाकी, काकासाहब के साथ कई बातें समझने को मिल ही जाती हैं। गोहाटी में डा॰ हरेकृष्ण के घर उतरे हैं। सुशील, रमा दोनों की आप खबर रखना। बाई मदालसा व उसका बच्चा बहुत मजे में होंगे। बाई उमा आगई होवेगी। सबको मेरा राम-राम कहना। सबके लिए यहां से कुछ-कुछ सामान लाने का मन तो बहुत होता है, पर घूमना और उसके साथ बोझ इकट्ठा करना, कठिन है। इसीलिए कुछ न ला सकूंगी।

दीपावली के प्रणाम स्वीकार करियेगा।

शान्ता के प्रणाम

: २०४ :

इलाहाबाद,

मि० ४ अ० व० १९८२, (२८-६-२५)

श्रीयुत सेठ जमनालाल बजाज,

आबू पर्वत।

प्रिय भाई,

श्री काशी विद्यापीठ के संचालक-मण्डल ने यह निश्चय किया है कि काशी विद्यापीठ की रजिस्ट्री चेरीटेबल सोसायटीज़ विधान के अनुसार कर ली जाय। इस विचार से विद्यापीठ के उद्देश्य (मेमोरेण्डम आफ एसोसिएशन) तथा नियम-उप नियम आदि का संकल्प-पत्र तैयार किया गया है और विद्यापीठ के संचालक-मंडल के अधिवेशनों में यह उपस्थित होकर स्वीकृत हो चुका है।

आप प्रारम्भ से विद्यापीठ के संचालक-मण्डल के सदस्य हैं, इस कारण आपकी सेवा में यह स्वीकृत संकल्प-पत्र भेजकर प्रार्थना करता हूं कि १५ दिन के भीतर (मि० २० आषाढ़ १९८२, ता० ४ जुलाई सन् १९२५) तक आप मुझे अपनी अनुमति दें कि आपका नाम रजिस्ट्री होते समय प्रथम संचालक-मण्डल की नामावली में दिया जाय या नहीं? नियत तिथि तक उत्तर न आने से मैं समझूंगा कि आपको यह प्रार्थना स्वीकार नहीं है।

विनीत,

शिवप्रसाद गुप्त

मंत्री, संचालक-मंडल,

काशी विद्यापीठ।

: २०५ :

प्रयाग,

(पत्र का जवाब दिया, ९-७-२५ को)

प्रिय भाई जमनालाल,

सुखी रहिये। आपका कृपापत्र मिला। अनेक धन्यवाद। आपने मेरे

ऊपर इसके निर्णय का भार छोड़ा है कि मैं इसका निश्चय करूं कि आपका नाम काशी विद्यापीठ के संचालकों में हो कि नहीं। मैंने यही निश्चय किया कि आपका नाम इसमें होना परम आवश्यक है, क्योंकि आप इसके शुभ-चिन्तक और आरम्भ से संचालक हैं। मैंने कार्यालय में पत्र लिखकर भेज दिया है कि आपका शुभ नाम संचालक-मण्डल में रखा जाय।

मैं आपको आपके दान के लिए बधाई देता हूं, जो आपने ३० हजार रुपये का नया दान हिन्दू विश्वविद्यालय को पुस्तकों के लिए दिया है। ईश्वर आपके हृदय को सदा ऐसा ही विशाल रखे और आप अपने धन का सदा सदुपयोग किया करें। ईश्वर आपको चिरायु रखे और सुखी रखे।

बच्चों को आशीर्वाद व प्यार पहुंचे।

प्रेम-सहित।

आपका भाई,
शिवप्रसाद

: २०६ :

सेवा-उपवन, काशी
(पत्र का जवाब दिया, ५-१०-२५ को)

भाई जमनालालजी,

सुखी रहिये। कल तुमसे वार्ता करने का बिल्कुल समय नहीं मिला व पटना में रविवार तक अधिवेशन की भीड़ में कुछ बातचीत नहीं हो सकी।

मैं तुमसे कहना चाहता था कि मेरी आर्थिक समस्या इस समय बहुत ही शोचनीय होगई है। मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूं। अपने लिए नहीं, गो उसके मांगने में भी मुझे तुमसे लज्जा नहीं है। पर अभी ऐसी अवस्था नहीं है।

मैं इस समय विद्यापीठ के लिए सहायता चाहता हूं। तुम भी दो और दूसरों से भी दिलवा दो। वैसे तो १० लाख और हों तब कार्य चले। पर फिर भी २॥ या २ लाख तक भी मिल जावें तो जरूरी-जरूरी कार्यों का प्रबन्ध हो जाय। ५० हजार तो छात्रावास को पूरा करने में लगेगा। और करीब

इतना ही प्रयोगशाला व पुस्तकालय के लिए चाहिए। और एक लाख उस जमीन व मकान को खरीदने व मरम्मत के लिए दरकार है, जिसमें इस समय विद्यालय चल रहा है।

मैं तुम्हारे साथ घूमने के लिए तैयार हूं। यह रकम तुम, गोविन्दलाल व घनश्यामदासजी व एकाध और सज्जन मित्रों से मिल जानी चाहिए। इसमें तुम्हारी कृपा की बड़ी जरूरत है।

तुम्हारा भाई,
शिवप्रसाद

: २०७ :

काशी,
२६ मार्गशीर्ष, १९८४
(५-११-२७)

प्रिय भाई जमनालाल,

सुखी रहो। पोस्टकार्ड मिला। साहित्य सम्मेलन की व्यवस्था जिन हाथों में है उनसे मेरा बिल्कुल मेल नहीं खाता। मैंने भी आजिज़ होकर त्यागपत्र दे दिया है। समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय?

असली बात यह है कि जब भलेमानस लोग काम नहीं करना चाहते तो काम गैर-भलेमानुसों के हाथ में चला जाता है, और जब वे मनमानी करने लगते हैं तब बुरा लगता है; पर उस समय बेबसी के सिवा कुछ हाथ नहीं लगता। यह अवस्था इस समय सम्मेलन की भी हो रही है। सम्मेलन का ही क्या, हमारी प्रायः सभी संस्थाओं का यही हाल है। और मेरे जैसे आलसी व निकम्मे आदमी हाथ मलकर अफसोस किया करते हैं।

मैं २३ को मद्रास पहुंचूंगा। तुम भी कबतक आवोगे? बच्चों को प्यार।

सदा स्नेही व शुभचिंतक
शिव
(शिवप्रसाद गुप्त)

: २०८ :

सोदपुर, १-९-२७

प्रिय जमनालालजी,

श्रीकृष्णदासजी की किताब[१] के बारे में आपका पत्र मिला। मैंने रमेशबाबू (चक्रवर्ती चटर्जी कंपनी) को आपका पत्र पाते ही टेलीफोन किया। अगले रविवार को जरूर मिलेंगे। इसके बाद मैं आपको विस्तार से लिख सकूंगा।

मेरी तन्दुरुस्ती सोदपुर आने के बाद से सुधर रही है और थोड़ा-बहुत काम करने लगा हूं। हां, दूसरे लड़के का दिल अभी तक कमजोर है और खतरनाक स्थिति में है। वह अभी तक जीवित है, मगर भगवान उसे किसी भी क्षण उठा ले जा सकते हैं। वह दैनिक कामकाज करता है, इसलिए बाहरी तौर पर उसे देखकर कोई चिन्ता नहीं होती, हालांकि उसके हृदय की परीक्षा करके डाक्टर लोग घबरा गये हैं।

सम्मान-सहित।[२]

आपका,

सतीशचन्द्र दासगुप्त

: २०९ :

सोदपुर, १५-१०-२७

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। मुझे आपकी आलोचनाएं अच्छी लगती हैं, क्योंकि उनके पीछे अच्छी मंशा होती है। बापू को लिखे मेरे पत्र में एक ऐसी घटना के संबंध में आपका नाम आगया, जो बेबुनियाद निकली है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप इस मामले पर रुष्ट नहीं होंगे। उस समय भी, जबकि मेरा आपसे मतभेद होता है, आपके प्रति मेरी भावनाओं को बापू जानते हैं। राजमहेंद्री से लौटते समय मैं बरहामपुर गया। राजमहेंद्री

---

[१] Seven Months with Mahatma Gandhi.

[२] अंग्रेजी से अनूदित

में बापू के जन्म-दिवस के सिलसिले में गया था। मुझे पता लगा कि उत्कल-विभाग को रुपये पैसे की तंगी है। मैंने शंकरलालजी को लिख दिया है।

उन्हें कुछ काम देने के लिए प्रतिष्ठान से लगभग दो हजार रुपये कीमत की खादी लेकर दे दी है, जिससे काम चालू रह सके और घाटा कम किया जा सके।

सप्रेम।[1]

आपका शुभचिंतक,
सतीशचंद्र दासगुप्त

: २१० :

सोदपुर (२४ परगना)
२३-२४ मई, १९२८

सेठ जमनालाल बजाज,
कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय देशबंधु स्मारक कोष,
बंबई।

प्रिय महोदय,

आपको यह सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि ए. आई. एस. ए. के कुछ सदस्यों ने बंगाल का दौरा किया तथा देशबंधु स्मारक कोष के लिए चंदा इकट्ठा किया।

चंदे की कुल रकम में से ५३,९२६ रु. ८ आ. ६ पा. एकत्र कर लिये गये हैं तथा यह रकम २१ मई, १९२८ को इस समय हाथ में है। जल्दी ही और भी इकट्ठी कर ली जायगी। यह रकम मैसर्स जीवनलाल एण्ड कम्पनी के यहां जमा कर दी है। पत्र के साथ संलग्न मैसर्स जीवनलाल एण्ड कम्पनी के प्रमाण-पत्रों के आधार पर इस रकम की प्राप्ति कृपया अपने खातों में दर्ज करवा दें तथा रकम की प्राप्ति की सूचना ए. आई. एस. ए. के मंत्री को दे दें।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

क्योंकि रकम का कुछ भाग बंगाल में ही खर्च होना है, अतः आप मैसर्स जीवनलाल एण्ड कम्पनी को यह अधिकार दे सकते हैं कि वे आपकी ओर से रकम अपने पास ही रखे रहें तथा समय-समय पर जैसी आप हिदायत करें, वे उसे हमें देते रहें।[1]

आपका विनीत,
सतीशचंद्र दासगुप्त

: २११ :

(पत्र का जवाब दिया, १५-३-२९ को)

प्रिय जमनालालजी,

आपका खत मिला। 'वसुमती' अखबार भेज देता हूं। बापूजी की गिरफ्तारी-संबंधी सभी खबरें इसमें आपको मिल जायंगी। उस दिन की बापूजी के समाचार पढ़ियेगा। वह तो बहुत ही मनोरंजक हुई थी।

पहले तो बापूजी के आने की सूचना मिलने के बाद मैंने तार से उनको पूछा था कि विलायती कपड़ा जलाने की व्यवस्था करना चाहता हूं। उनकी सम्मति आगई तब कपड़ा इकट्ठा करके एक जन-सभा की। व्यवस्था प्रान्तीय कमेटी ने की थी। सभा में जाने के पहले पुलिस को नोटिस दिया, पर जब कपड़ा जलाना शुरू हुआ तब लाठी चला दी गई। आग बुझाकर कुछ लोग भी घायल किये। बापू की उपस्थिति में यह सब हुआ। पीछे घर लौटने के बाद जब हम भविष्य-कार्य-संबंधी बातचीत कर रहे थे उस समय गिरफ्तारी का परवाना आ पहुंचा। बापू ने कहा कि अगर मुझे कल हाजिर करना हो तब तो मुझको अटका रखो। मैं सही नहीं दूंगा। इस समय पुलिस-कमिश्नर टेगार्ट आगये। २६ तारीख दिन निर्धारित हुआ। रात दो बजे तक यह सब हुआ। मैं सभी समय उनके पास था। बापूजी की गिरफ्तारी का फल अच्छा ही होगा।

मैं भी डरता हूं कि खादी कैसे दूं। मेरे पास रुपये भी कुछ नहीं हैं।

---

१ अंग्रेजी से अनूदित

जो तैयार करता हूं वही बेंचता हूं। किसी मित्र से रुपया मांगने का विचार किया, लेकिन उससे मिलेगा ही कितना ? मैं तो पहले से ही जानता था कि इसमें कई लाख रुपये की जरूरत है। आपको मैं नहीं समझा सका। अब खादी में रुपया नहीं लगाया जाय तब तो इस आन्दोलन को हम नहीं चला सकेंगे।

बापूजी और कितने दिन रहेंगे ? हो सकता है कि यही उनकी अन्तिम चेष्टा हो। मैं तो कुछ उपाय नहीं निकाल सकता हूं। परमात्मा के ऊपर निर्भर हूं। वे हमारी लाज रखें।

सतीशचन्द्र दासगुप्त

: २१२ :

सोदपुर, १४-११-३१

प्रिय जमनालालजी,

कृपया मेरा दीपावली अभिनंदन स्वीकार कीजियेगा। आपका पत्र मिला। दस हजार रुपये की खादी बांट दी गई है और उसका रुपया भी मिल गया है।

फरीदपुर के लिए अभय आश्रम ने स्वयं खादी भेज दी है और उसका रुपया उनको वहीं से मिल गया है।

प्रान्तीय रिलीफ आफिस के बन्द होजाने के कारण हम लोग उनको एक हजार रुपये की खादी नहीं भेज सके, किन्तु उनको हमने साइंस कालेज से माल ले जाने को लिख दिया है।

खादी-प्रतिष्ठान के विषय में आपने जो पत्र मांगा था, वह इसके साथ भेज रहा हूं। मैंने बापू को लिख दिया कि आप यहां आये और चले गये, लेकिन मुझे आपसे दिली बातचीत करने का मौका नहीं मिला; क्योंकि मैंने आपको अखिल भारतीय चरखा-संघ के रुपये की रक्षा के विषय में शंकित देखा।

जिस छापेखाने से मेरी पत्रिका 'राष्ट्रवाणी' प्रकाशित होती है उसकी तलाशी ली गई और छपने के लिए जो कापी दी गई थी वह जब्त कर ली गई।

मैजिस्ट्रेट ने मेरी गिरफ्तारी के लिए वारन्ट जारी किया है, किन्तु

अभी तक मुझे गिरफ्तार नहीं किया है।

रैंयत-आन्दोलन में भी मेरी धारणा थी कि मैं पकड़ा जाऊंगा, किन्तु अभी तक तो गिरफ्तार नहीं हुआ हूं।

विशेष प्रणाम। इति

भवदीय,

सतीशचन्द्र दासगुप्त

: २१३ :

बम्बई, १५-८-३६

प्रिय जमनालालजी,

आपके पहली जुलाई के पत्र का उत्तर मैं ठीक समय पर नहीं दे सकी, इसके लिए क्षमा करें। मैं इस प्रतीक्षा में थी कि आपको यह बात निश्चित रूप से बता दूं कि मैं अहमदाबाद में जम रही हूं या नहीं। मेरा स्वास्थ्य वहां ठीक नहीं था, इसलिए मैं यहां आई, कि कुछ मित्रों के साथ यहां ठहर सकूं। श्री बेंकर ने सलाह दी कि अगर मैं अहमदाबाद में स्थायी रूप से ठहरने का फैसला करूं तो वह मेरे लिए बहुत अच्छा होगा; जिससे मैं कुछ समय मगनवाड़ी अथवा महिला-आश्रम में व्यतीत कर सकूं। उन्होंने कहा है कि कुछ ही दिनों में आप बम्बई में होंगे और परामर्श दिया है कि यदि आप कुछ समय दे सकें तो आप उनसे मिलें और सभी बातों के बारे में बात-चीत कर लें। अगर आप कुछ समय दे सकें तो मैं किसी भी ऐसे समय पर आपसे मिल सकूंगी जो आपके लिए सुविधाजनक हो।[1]

आपकी,

सरलाबहन

: २१४ :

जावरा, २१-७-३१

पूज्यवर,

यदि मैं, आपसे भेंट करके, जो सान्त्वना और धैर्य मुझको मिला, उसका

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

वर्णन करने लगूं तो कदाचित् यह शिष्टाचार समझा जायगा और मेरी धृष्टता मानी जायगी। अतः इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि मेरे हृदय में आपके एक उच्चकोटि के देश-भक्त होने के नाते आपके प्रति जो भक्ति थी, उसमें आपकी सहृदयता और सहानुभूति ने कई गुणा वृद्धि कर दी है। जब आपसे विदा हुआ तो जान पड़ता था कि वर्षों से परिचित किसी स्नेही कुटुम्बीजन से विदा हो रहा था—अस्तु।

यहां आकर मैंने सब बातचीत का सारांश कह सुनाया। आपके विचार सुनाये और भविष्य के बारे में भी सलाह मांगी। आपका जो ऑपरेशनवाला प्रस्ताव था उसको कहता हुआ मैं सकुचाया, क्योंकि मुझे यह विचार हुआ कि कहीं यह न समझा जाय कि मैं अपने विचार आपकी ओट लेकर कह रहा हूं; क्योंकि मैंने पहले भी—जैसाकि आपसे कहा था—ये विचार पूज्य जनों के सामने रखे थे। इस कार्य में तो मुझको आशा नहीं है। यह विचार पूज्य बापू के सम्मुख, जब आप वार्तालाप करें तब, कहियेगा तो अधिक उत्तम होगा।

मैंने आपसे संक्षेप में सब हाल कहा था, परन्तु आज वर्षों से मेरे हृदय में जो व्यथा चली आ रही है, उसका मैं आपको परिचय नहीं दे सका। लगभग चार-पांच वर्षों से मेरे अन्तर में एक घोर वाद-विवाद चल रहा है और आदर्शों की टक्कर हो रही है। जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है? और किन लाइन्स पर चलने से जीवन उत्तम हो सकता है? इस विषय पर मैंने वर्षों विचार किया, परन्तु जितना विचार किया उतना ही उलझन में पड़ता गया। और ऊपर से संसार के कठोर और निर्दय 'सर्कम्स्टान्सेज' ने मेरे विचारों में और भी अधिक गड़बड़ मचा दी। यहांतक कि कुछ दिनों से मैंने यह विचार ही करने छोड़ दिये और अपनी आत्मा को मरा हुआ समझकर, जो संसार की आवश्यकताएं हुईं, उनके अनुसार करने लगा। मेरी यह प्रबल इच्छा है कि मेरे विचारों में और मेरे कार्यों में तनिक भी भेद न हो। यह मुझको विष के समान मालूम होता है; परन्तु समय की और परिस्थिति की कठोर आज्ञाएं मुझको मेरे मार्ग पर जाने से रोकती हैं। भारत का मुक्ति-संग्राम भी

इतना अधिक मेरे सामने राजनैतिक महत्त्व का प्रश्न नहीं है, जितना एक आध्यात्मिक प्रश्न; यही विचार करके कि संग्राम में कूद पड़ने से अपनी आध्यात्मिक शक्ति और जीवन का विकास होगा, मैंने बहुत प्रयत्न किये और अब भी कर रहा हूं कि सेवा-क्षेत्र में कूद पड़ूं। परन्तु इस मार्ग में जो असुविधाएं हैं, वे मैंने आपसे कल ही कही थीं।

ऐसा मालूम होता है, मुझको अपने सब सिद्धान्तों को तिलांजलि देनी होगी। या तो मेरे भाग्य ही ऐसे हैं या फिर ईश्वर मेरी इस बहाने से परीक्षा ले रहा है, यह मैं नहीं कह सकता।

मैंने इतना लिखने की धृष्टता की है। यह केवल आपकी सहृदयता के आधार पर। आशा है, आप बालक के अपराध क्षमा करेंगे।

मैं आपके बहुमूल्य समय का अनुचित उपयोग तो नहीं कर रहा हूं ?

श्री ताराबहेन तथा श्री मदनमोहनजी से प्रणाम।

यदि आपका उत्तर मिला तो कम-से-कम यह मालूम हो जायगा कि यह पत्र आपको मिल गया। इसलिए उत्तर का प्रार्थी हूं।

विनीत,

सिद्धराज ढड्ढा

: २१५ :

जयपुर, १६-१२-३१

पूज्यवर,

स्वार्थ के वश हो दो शब्द कहना चाहता हूं। शायद आपको मालूम होगा कि पिलानी (बिड़लानगर, जयपुर राज्य) में आगामी वर्ष यानी जुलाई १९३२ से डिग्री कालेज खुलनवाला है और ऐसे अवसर पर वहां पर दो-चार अन्य प्रोफेसरों की नियुक्ति होगी ही। आप भली-भांति जानते हैं कि वकालत में मैं सुखी नहीं हो सकूंगा। देश-सेवा, राजनीति-क्षेत्र में कूद पड़ने के लिए मैं स्वतंत्र नहीं हूं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा-विभाग में कार्य करना मेरे लिए संतोषप्रद हो सकता है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप इस अवसर पर मेरे लिए प्रयत्न करेंगे। मैं और किसको लिखूं ? यदि आप

इस विषय में सहायता करेंगे तो मैं चिरकृतज्ञ रहूंगा। मेरे सर्टिफिकेट्स और क्वालिफिकेशन्स की तो शायद आपको आवश्यकता न हो। परन्तु केवल यह मालूम कराना चाहता हूं कि मैंने एम. ए. पोलिटिक्स में किया है और यही विषय अथवा इसीसे संबंध रखता हुआ अन्य विषय मैं पढ़ा सकूंगा। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। आप यदि उचित समझें तो इस मामले में मदद करें। बस ! मेरी हार्दिक इच्छा ऐसे ही किसी कालेज में जाने की है। कहना नहीं होगा कि वकालत करता हुआ भी छोड़कर आ सकूंगा।

स्नेहास्पद,
सिद्धराज ढड्ढा

: २१६ :

कलकत्ता, १४-८-३७

प्रिय सेठजी,

गत बार जब आप डा. रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्तिनिकेतन में आये थे तो मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य मिला था और आपके साथ वहां से कलकत्ते तक यात्रा करने का भी। मेरी आपसे प्रार्थना है कि शान्ति-निकेतन में हिन्दी का विकास करने के लिए आप उस धन में से कुछ रकम निर्धारित कर दें, जो कि आपको कानपुर के सेठ पदमपत सिंघानिया ने सौंपा है। मैंने इसके बारे में उन्हें लिखा था। उन्होंने जवाब में मुझे सूचित किया है कि चूंकि उन्होंने वह रकम पूरी-की-पूरी आपके हवाले कर दी है, इसलिए उनके लिए आपसे यह अनरोध करना कि विश्व-भारती की मदद की जाय, अनुचित होगा। लेकिन उन्होंने कृपा करके यह सुझाव दिया है कि सीधे इस बारे में आपको लिखा जाय।

मुझे आशा है कि आप इस तथ्य को जानते हैं कि गुरुदेव ने शान्ति-निकेतन में एक हिन्दी-शाखा खोली है और उसका काम हो रहा है। सर्वश्री सीताराम सेक्सरिया और भागीरथ कानोडिया मित्रों-सहित इस बात के प्रयत्न में हैं कि काफी चन्दा जमा करके इस विभाग का विकास किया जाय।

लेकिन अभी तो हिन्दी-शिक्षकों को नियमित रूप से वेतन देने की व्यवस्था भी नहीं हो सकी।

विश्वभारती का हिन्दी-विभाग निश्चय ही एक उपयोगी विभाग होगा किन्तु इसकी भावी सफलता ऐसे मित्रों के सहयोग और सहानुभूति पर निर्भर है जो इस विभाग की आर्थिक आवश्यकता पूरी कर सकें। यह प्रस्ताव भी विचाराधीन है कि शान्तिनिकेतन में एक हिन्दी-हॉल भी स्थापित किया जाय।

अभी तो मैं विश्वभारती के संग्रह-विभाग का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं और मैं आपसे इसके बारे में अपील कर रहा हूं। यदि आप इसपर अपनी राय जाहिर करेंगे तो मैं बड़ा कृतज्ञ हूंगा। यह बताना व्यर्थ है कि विश्वभारती को सहायता देकर आप एक बहुत बड़ी मदद का काम करेंगे और हिन्दी-विभाग को पांच वर्ष (अक्तूबर, १९४२ तक) डेढ़ सौ रुपये मासिक देकर आप उसे उपकृत करेंगे। विश्वभारती के अधिकारी आपकी इस सहायता की कद्र कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद से करेंगे।

आशा है, आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।[1]

नमस्कार सहित

आपका,

सुधाकान्तराय चौधरी

: २१७ :

कुमिल्ला, २१-६-३१

प्रिय सेठजी,

आपका १५-६-३१ का पत्र मिला। उत्तर देरी से आने के कारण मेरी कोई हानि नहीं हुई। आपका कर्नाटक परिषद् के अध्यक्ष-पद से दिया गया भाषण मैंने बड़ी दिलचस्पी और आनन्द से पढ़ा। आपने कार्यक्रम की जो रूपरेखा इस भाषण में बताई है, हम उसका अनुसरण कर रहे हैं।

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

हमें १२२५) रुपये सधन्यवाद प्राप्त हुए, जो आपन गृह-निर्माण के लिए भिजवाये हैं। उसका काम पूरा हो गया है और मैं अब उसी मकान में रह रहा हूं। देश में रचनात्मक कार्य करनेवाले चुनाव के झगड़ों में नहीं हैं; क्योंकि वे जानते हैं कि सेनगुप्त के शासन में भी वैसी ही बेईमानी होगी। मैंने यह बात बापू को भी लिख दी है। वास्तविक काम करने में दरअसल कोई झगड़ा नहीं है क्योंकि सच्चे हृदय से काम करनेवालों की संख्या बहुत कम है। झगड़े तो पदों और अधिकारों के लिए होते हैं; इसलिए मेरा खयाल है कि आपको चुनाव के झगड़ों में पड़कर कलकत्ता आने का कार्यक्रम अधिक समय तक टालना नहीं चाहिए और जहांतक सम्भव हो, शीघ्र आजाना चाहिए।

सरदारजी ने आगामी वर्ष के लिए गुजरात में रचनात्मक कार्य करने के निमित्त दो लाख रुपये का बजट बनाया है। श्री सेनगुप्त महात्मा गांधी के अनुयायी बनकर भी इस तरह के विधायक कार्यों की क्रियाशीलता की परवाह नहीं करते। हमें रुपयों की आवश्यकता है और उसके लिए हम कोशिश कर रहे हैं। बापूजी के सच्चे अनुयायी को तो कभी-कभी कलकत्ता आना चाहिए और बंगाल के कार्यकर्ताओं की धन तथा सलाह से मदद करनी चाहिए।

भगवान् की कृपा से मेरा स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधर रहा है, पर अभी मुझे प्लास्टर ऑफ पेरिस के जाकेट में बन्द रहकर नौ महीने खाट पर पड़े रहना होगा।[1]

आपका,
सुरेशचंद्र बनर्जी

२१८ :

वर्धा, ५-१०-४१

प्रिय भाई हनुमानप्रसादजी,

इस पत्र के साथ गो-सेवा-संघ का विधान भेज रहा हूं। पू. बापूजी

---

[1] अंग्रेजी से अनूदित

ने इस विधान की भाषा एवं भावों को स्वीकृति दे दी है। आप इसे पढ़ें और यद्दि भाषा की या अन्य दृष्टि से विधान में कोई परिवर्तन उचित समझें तो लिखें।

इस विधान के अन्तर्गत जिस व्रत का जिक्र है, उसके पालन में तो मेरे खयाल से आपको विशेष कठिनाई न होगी। आप इसका पालन करें एवं संघ के फिलहाल साधारण सदस्य हो जायं। मेरी इच्छा है कि आप संघ की ज्यादा जिम्मेवारी उठायें, जिससे आपकी सेवाओं का संघ को लाभ हो। आप अपनी स्वीकृति लिखकर भेजेंगे। आपके नाम का जिक्र पू. बापूजी व मित्रों से कई बार आया है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: २१९ :

मद्रास, ३०-१२-३३

आदरणीय जमनालालजी,

आपका कार्ड मिला। शायद आप इस आवश्यक बात को भूल गये, नहीं तो इसके सम्बन्ध में आप अपने पत्र में जरूर कुछ लिखते। या आपने उस कार्य के बारे में भी श्री टंडनजी से तय करने के लिए कहा है? मैंने पहले आपको लिखा था कि आर्थिक कठिनाई के कारण यहां के प्रचारक विद्यालय को चला नहीं सकेंगे, इसलिए राजाजी के कहने पर इस विद्यालय को काशी विद्यापीठ की शाखा मानें या योंही काशी विद्यापीठ की तरफ से इसके लिए पूरी आर्थिक सहायता मिले, जो करीब २५०) रुपये की है। क्या इसके संबंध में आप कुछ कर सकेंगे?

मैंने आपसे पूना में सभा के मकान की आवश्यकता के बारे में भी चर्चा की थी। आपने भी मान लिया था। मैं जानता हूं कि ऐसा कार्य पत्र-व्यवहार से पूरा नहीं होगा। आपको अवकाश इस समय जरूर निकालना चाहिए। इस समय यह निश्चय हुआ है कि ८-२-३४ को जब बापूजी यहां आनेवाले हैं तब बापूजी के हाथों नींव डालने का कार्य कराया जाय। परन्तु जैसाकि मैंने पहले कहा था, इस कार्य के लिए इस समय धन-

संग्रह करना मुश्किल है। बापूजी इस समय हरिजन-कार्य के लिए धन-संग्रह कर रहे हैं। दूसरे हमारे यहां के कार्य की वृद्धि के लिए आवश्यक व्यय यहीं से निकालना है। इसीलिए बापूजी के अभिभाषण के बाद रामनाथजी ने इस बात पर जोर दिया था कि भवन-निधि के लिए उत्तर भारत से ही सहायता ली जाय। रामनाथजी ने इस वक्त हरिजन-कार्य के लिए भी खूब मेहनत की व धन-संग्रह में भी खूब समय दिया। इसलिए भवन-निधि के लिए हम आपपर ही अवलम्बित हैं। आप कहें तो मैं आपका पत्र या तार के मिलते ही आपके पास पहुंच जाऊंगा। लेकिन अबकी बार बापूजी के भ्रमण में, खासकर मद्रास शहर के अनुभव से, मैंने देखा है कि मैं कम-से-कम तामिल, केरल के भ्रमण में साथ रहूं तो हिन्दी-प्रचार की दृष्टि से भी लाभदायी है। डा. राजन् व हालास्थम भी चाहते हैं कि मैं साथ रहूं। बापूजी ने भी परसों एलूर में कहा था कि मैं रह सकूं तो अच्छा है। अतएव इनसब बातों को ध्यान में रखकर आप जैसे सूचित करेंगे वैसे ही मैं करूंगा। आपका उत्तर मिलते ही १० दिन के लिए मैं अवश्य आ सकूंगा। इस बीच में बापूजी कर्नाटक का दौरा पूरा करके केरल आते होंगे। मैं चाहता हूं कि एक साधारण अपील के साथ-साथ, जो बापूजी खुद निकालनेवाले हैं, आप कुछ खास लोगों के नाम पर पत्र दें और जहां सम्भव हो स्वयं इसके लिए थोड़ा कष्ट उठावें, तो मुझे विश्वास है काम आसानी से पूरा हो सकेगा। श्री जीवनलालभाई, आनन्दीलाल पोद्दार, घनश्यामदासजी, बालचन्द हीराचन्द, श्रीमती सुवटाबाई, खेतान आदि दो-चार और लोगों से कुछ विशेष सहायता लेकर अवश्य इसे पूरा कर सकते हैं। टाटा कम्पनी से लोहे की पूरी सामग्री ली जा सकती है। यहां केरल से लकड़ी की पूरी चीजें मिल जायंगी। इस तरह नकद या चीजों के द्वारा भी सहायता ली जा सकती है। बापूजी ने इसके बारे में चर्चा की तो कहा कि अब वे खुद इसके लिए अपील निकालने के अलावा ज्यादा नहीं करेंगे। विशेष सहायता आपके द्वारा लेनी चाहिए। परसों के दिन कड़प्पा (Cuddappah) बुलाया है। शायद वहीं अपील लिखकर देंगे।

समाचार-पत्रों में यहां की सार्वजनिक सभा में लोगों के दर्शन की आतुरता से जो तकलीफ हुई उसका वास्तविक वर्णन नहीं निकला। हिन्दी के प्रचारकों व विद्यार्थियों का एक दल खास बापूजी के अंग-रक्षक के तौर पर काम करता था, फिर भी इतनी तकलीफ हुई। मैं बापूजी से बिल्कुल अलग नहीं होता था। फिर भी लाचारी से दो मिनिट के लिए अलग होगया व चोट खाकर गिर गया था। फिर थोड़ी देर में संभलकर बापूजी के पास पहुंचकर गाड़ी पर चढ़ा; तब जी में जी आया। आपको भी याद होगा, कानपुर की कांग्रेस के अवसर पर आपने इस तरह बापूजी के पास ही रहने का काम सौंपा था, जब अर्जुनलाल सेठी आदि की ओर से कुछ दंगा मच रहा था। यहां दंगा आदि का कोई भय न होने पर भी लोगों की आतुरता के कारण बड़ी तकलीफ होती है।

बहन उमा खूब खुश हैं। खूब काम करती हैं। पंडित रामनरेशजी व रामनाथजी से मुलाकात कराई। पंडितजी को आपके पत्र की बात कह चुका हूं। वह कुर्ग, बंगलौर, मैसूर से बम्बई होकर मुंशी के साथ गुजराती साहित्य सम्मेलन में शामिल होने के बाद बड़ौदा जानेवाले हैं। उनकी राय थी कि इस समय बड़ौदा महाराजा की तरफ से हिन्दी के लिए अच्छी सहायता मिल सकती है। उनकी इच्छा हो तो उनके राज्य में हिन्दी-प्रचार के कार्य में हम भी कुछ मदद अपने अनुभव से पहुंचावें। उस तरह की संभावना हुई तो वे यहां तार देंगे। आप भी अपना विचार तुरन्त पत्र या तार द्वारा सूचित करें। इस समय आप इस कार्य में अवश्य थोड़ा समय देकर उपर्युक्त आयोजना के अनुसार सहायता पहुंचावें।

आपको याद होगा कि भवन के लिए ४० से ५० हजार तक चाहिए। आपने इसके पहले प्रचार के नाम से अन्तिम बार कुछ रकम के साथ चेतावनी-सहित जो आशीर्वाद दिया है उसके परिणाम से हम प्रचार-कार्य के लिए आपको तंग करने आज तक नहीं आये। अब लाचारी है, आप अन्यथा न समझें।

आपका,

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में—

हरिहर शर्मा

श्री बाबासाहेब निराश होकर यहांसे रवाना होगये हैं। घर पर संदेश भेजकर खबर लें।

: २२० :

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
मद्रास, २५-१०-३५

महोदय,

सेवा में निवेदन है कि सभा का पांचवां 'पदवी-दान समारम्भ' आगामी दिसम्बर मास के अंतिम सप्ताह में मद्रास में करने का निश्चय हुआ है। दक्षिण भारत में हिन्दी की पढ़ाई को क्रम-बद्ध बनाने के लिए तथा हिन्दी में उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सभा ने हिन्दी की प्रारम्भिक व उपाधि परीक्षाएं चलाने का क्रम रखा है। प्रारम्भिक परीक्षाओं में अबतक ४६,००० लोग बैठ चुके हैं और उपाधि परीक्षा में लगभग १०००। चालू साल में प्रारम्भिक परीक्षाओं में ७००० तथा उपाधि-परीक्षाओं में २५० शामिल हुए हैं। उम्मीद है कि आगामी पदवी-दान समारम्भ में करीब १५० स्नातक शामिल होकर उपाधि लेंगे।

हम चाहते हैं कि इस पदवी-दान समारम्भ के अवसर पर आप स्नातकों को अभिभाषण देकर उनको तथा सभा को प्रोत्साहित करें। कहने की आवश्यकता नहीं कि आपके समर्थन से राष्ट्रभाषा आन्दोलन को कितनी सहायता मिलेगी। अतः आपसे नम्र प्रार्थना है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर अनुगृहीत करें।

सभा का पिछला वार्षिक विवरण तथा विगत पदवी-दान समारम्भ के अभिभाषण की एक प्रति आपकी सेवा में अलग भेज रहे हैं। अबतक सभा के पदवी-दान समारम्भों में आचार्य कालेलकर, प्रोफेसर शास्त्री, मैसूर विश्वविद्यालय के फारसी, उर्दू, अरबी विभाग के अध्यक्ष, कविवर पं. रामनरेश त्रिपाठी तथा उपन्यास-सम्राट बाबू प्रेमचंद आदि ने अभिभाषण दिये हैं।

आपके अनुकूल उत्तर की प्रतीक्षा में—

आपका,
हरिहर शर्मा
मंत्री

सेवामें—श्रीमान् जमनालालजी बजाज, वर्धा

: २२१ :

मद्रास, २३-३-३६

आदरणीय श्री जमनालालजी,

सभा के भवन-निर्माण के लिए १५,००० रुपये की स्वीकृति देते हुए आपने जो तार भेजने की कृपा की थी, उसके उत्तर में मेरा पत्र आपको अबतक मिल गया होगा। आपकी इस अमूल्य सहायता के सम्बन्ध में सभा की कार्यकारिणी समिति ने जो कृतज्ञता प्रकट की है वह प्रस्ताव के रूप में इसके साथ सेवा में भेज रहा हूं।

मैं आशा करता हूं कि आपने रुपये भिजवाने का प्रबन्ध कर दिया होगा। मेरी तबीयत अब सुधरने लगी है। आप वर्धा पहुंच रहे होंगे। योग्य सेवा लिखें।

आपका,
हरिहर शर्मा

: २२२ :

वर्धा १-१२-४१

स्वागत मंत्री,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
साहित्य सदन, अबोहर।

प्रिय महाशय,

अबोहर-सम्मेलन में आने का आपका निमंत्रण मिला। स्वामी केशवानन्दजी की संस्था देखने के लिए यदि अबोहर आ सकता तो आनन्द होता। किन्तु एक तो स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं है और दूसरे मैंने अभी-अभी गो-सेवा का काम हाथ में लिया है। उसीको अधिक समय देने का संकल्प है। इसलिए दो महीने यहां से कहीं भी न जाऊं, ऐसा निश्चय-सा किया है। इस कारण खेद है कि मैं वहां आने में असमर्थ रहूंगा, जिसके लिए मुझे

विश्वास है हिन्दी-प्रेमी मुझे क्षमा करेंगे।

यहां मुझे यह भी कुबूल करना चाहिए कि यद्यपि हिन्दी के प्रति मेरी निष्ठा तनिक भी कम नहीं हुई है तो भी सम्मेलन की वर्तमान परिस्थिति में उसके प्रति मेरे मन में उदासीनता जरूर आगई है। वह परिस्थिति सुधरे तो मुझे बड़ा आनन्द होगा।

एक बात और आपके सामने रखना चाहता हूं। रचनात्मक कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के बारे में मेरा सदैव यह मत रहा है और चरखा-संघ, ग्रामोद्योग-संघ आदि के अनुभवों से वह और भी पुष्ट होता जाता है कि इन संस्थाओं के कार्यवाहकों को अधिक-से-अधिक स्वतंत्रता व स्थायित्व रहना चाहिए। राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के बारे में मेरी पहले से ही यह राय रही है और छः साल पहले नागपुर में जब इस समिति का प्रथम संगठन हुआ तब भी मैंने आग्रहपूर्वक यह राय दी थी कि सम्मेलन उसे स्वतंत्र व स्थायी बना दे।

अब भी मेरी यह सलाह है कि सम्मेलन राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति को प्रतिवर्ष के विवादों से बचा ले और उसे स्थायी रूप से काम करने का पूरा मौका दे। सम्मेलन अवश्य ही अपने विश्वासपात्र सेवकों को यह काम सौंपे, पर उन्हें आजादी वा स्थायित्व जरूर दे।

मेरा यह निश्चित मत है और मैं समझता हूं कि सम्मेलन भी इसे मानता है कि महात्मा गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रभाषा-प्रचार का काम खूब आगे बढ़ा है। ऐसी दशा में मेरी राय यह है कि यह काम आगे भी महात्माजी के नेतृत्व में व उनकी नीति के अनुसार चलाने से ही अधिक प्रगति कर सकेगा।

मुझे विश्वास है कि पंडित अमरनाथजी झा के सभापतित्व में सम्मेलन सफलता के साथ संपन्न होगा व यह प्रश्न संतोषजनक रीति से एवं स्थायी रूप से हल हो जायगा।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

जमनालाल बजाज-संबंधी साहित्य

१. जमनालालजी
—घनश्यामदास बिड़ला

२. श्रेयार्थी जमनालालजी (संक्षिप्त)
—हरिभाऊ उपाध्याय

३. बापू के पत्र
—संपादक : काकासाहब कालेलकर

४. स्मरणांजलि
—संपादक : काकासाहब कालेलकर

५. जीवन-जौहरी
—रिषभदास रांका

६. एक देश-सेवी परिवार
—विनायक कुलकर्णी

७. पत्र-व्यवहार—१ : राजनैतिक नेताओं से
—संपादक : रामकृष्ण बजाज

८. पत्र-व्यवहार—२ : रियासती कार्यकर्ताओं से
—संपादक : रामकृष्ण बजाज

९. पत्र-व्यवहार—३ : रचनात्मक कार्यकर्ताओं से
—संपादक : रामकृष्ण बजाज

तीन रुपये